धरती कद तांई घूमैली

[कहाणियां]

सावर दइया

प्रकाशक :
राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम [अकादमी]
बीकानेर

लेखक सांवर दइया

प्रकाशक राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

पैला बार वि० 2037, ई० 1980

मोल सादी जिल्द 11 25
पक्की जिल्द 15 50

मुद्रक अजन्ता प्रिन्टर्स घी वालों का रास्ता जयपुर

धरती कद तांई घूमैली [कहाणियां] [DHARTI KAD TAIN GHOOMAILI]

पढण सू पैलां

एक वखत हो जद हर कहाणी नै एक घटना री जरूरत हुया करती। जे कुछ घट्यो ई नइ तो कहाणी बणण रो सवाल ई कोनी उठतो। आ धारणा धीर धीर बदळगी। आज री कहाणी खातर कोई घटना री जरूरत कोनी। उलटी, घटनावा वाळी कहाणिया कारीगरी मे हळकी मानीज।

ज्यू संत कबीर कयो, 'कर का मनका छाडि क, मन का मनका फेर', त्यू ई आज रो लिखारो घटनावा खातर बा रली दुनिया नै छोड मायली दुनिया मे विचर। रात दिन रो लोक-व्योहार देखता करता उण र मन म चढ्यो कारीगर छीपा जिकी रंग बिरंगी भाता छापतो जाव वा चितरामा भरी फड ई उण री कहाणिया म दरसाव बण र प्रगट हुव।

मिनख रो बा रलो बरताव उण र मायल मन रो प्रगट रूप ई तो है। जिको बीज है वो ई तो रूख री जड है। इण वास्त मन री बात, बीज री चरचा पहला होणी चाईज। काम करण र आपोपरी संबंध मे कारण ई प्रधान हुव। आज रो लिखारो जद इण ढाळ बीज री, कारण री मन री बाता कर तो बो ठीक इ लाग। मिनख रो मन तो मकडी रो जाळो है, या फेर बो रसम रो लच्छो है। इण जाळ मे फसणो आसान निकळणो मुसकल। इण रेसमी लच्छै रा तार सुळझाणा काई हासी-खेल कोनी। इण म पडडी गाठा तो खुलण रो नाव ई नी लेवै। इण वास्त लिखार रो काम घणो दोरो है। वो बिया तार तार उधेड र मन र मरम नै ओळख, अर पिछाण नै आपा ताई पूगावै, इण म ई उण री कारीगरी है। इणी भात उण नै आपर हरेक पात्र र मन म धसणो पडै अर आ सगळी खेचळ करणी पड। लिखार नै आ खेचळ भार नी लखाव। उण न उण भार सू ई प्यार है। भार समझणिया तो सायद ई कदे कोई काम पार पाड सक।

लिखारै रै मन मे अणगिणत समाज रा रात दिन रा बरतावा री नाना भात जद धूळी हो जाव तो वा बा रो दरसाव करण नैं छटपटाव। आ छटपटाट उण री बेवसी है अर इण बवमी रो करतब ई उण रो साहित्य है।

आ एक थूळ सी बात हुई, मना र ब्योपार री। लिखारो किणी बात किणी बरताव नैं किण डीठ सू देख अर किण भात, किण इराद सू उण न माड अ सगळी बाता उण वास्त घणी महताऊ हो सक, पण जठ ताई उण न पढणिया रा सवाल

है व आप आप र ग्यान अर समझ मुजब उणर रच्योड हरेक पात्र मे खुद बठसी अर चोख याऊ रो फसलो करसी। ओ फसलो भी लिखार री निजर म बण्यो रवणो चाईज। जिण समाज सारू बो रच पच, उण री प्रतिक्रिया रो अदाजो पला सू लगा लेणो चोखी बात ई है। हा, समाज र भल वास्त खारी मीठी दवाया देणी चीर फाड करणी, या ओर भात रा दूजा ओजार उपाय काम म लेणा, काम लिखार री खुद री सूझ बूझ रो है।

इण सग्र रा लिखारा सावरजी दइया आपरै आस-पास री ओळख नै आपर निजू ढग सू माड र मेली है। मायल मन र ब्योपार न अ भली भात जाण्यो-परख्यो है। दइया री अ कहाणिया राजस्थानी र कथा साहित्य मे आवत नय मोड री बानग्या है।

—रावत सारस्वत
सभापति,
राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी)
बीकानेर

दीवाळी
2037 वि०

कहाण्या सू पैली

हरेक आदमी जीवण रा सुख दुख झेल। इण झेलण मे बी नै भात भात रा अनुभव हुवै। अै अनुभव माय भेळा हुवता रैवै। भेळा हुयेडा अनुभव माय रा माय कसवसीजबो करै। कसवसीजतां-कसबसीजता अेक दिन विस्फोट हुवै। अर विस्फोट री ओ क्षण ही वो क्षण है जिको रचणा नै कागद माय लावै।

अनुभवा रै माय रा माय कसबसीजण सू लेय'र विस्फोट ताई जिकी जातरा चाल, वा खासा तकलीफ देवण आळी हुव। आ तकलीफ कोई भी सरजणधरमी जाण सकै।

अनुभवा री जातरा रै बाद जिकी रचणा कागद माथै आवै (किणी भी कळा रूप म) वा हू-ब-हू विसीज नी हुव, जिसी क जीवण मे देखण न मिलै। साहित री किणी भी विधा मे जीवण नै 'हू ब हू नी राखीज सकै। कारण क 'हू ब-हू' राखण रो काम फोटोग्राफर कर। पण थोडी गहराई सू विचार करा तो ओ तथ्य सामै आवै कै फोटोग्राफर भी फोट लेवण सू पैली 'एगल' देख। अर अठ 'एगल' री बात आव, बठ 'अेकदम है जिया ई आळी बात कोनी टिक। टिक तो खाली बस आ ई अरथा मे कै बी एगल सू जित्तो आयो, वो 'है जिया ई आयो। बस, इण सू आग नी। पण कहाणी फोटोग्राफी कोनी।

साहित री हरेक विधा रो सीधो सम्बध जीवण सू हुव। कहाणी भी इण सू अछूती कोनी। बदळता राजनीतिक-सामाजिक अर आर्थिक धरातल जीवण नै बदळ न्हाख बी नै जटिल बणाय देवै। इण बदळत अर जटिल हुवत जीवण र सागै साग कहाणी रो रूप ई बदळतो रैवै।

कहाणी रा ओ बदळयोडो रूप ससार री हरेक भासा री कहाणिया मे साम्प्रत देख्यो जा सक। राजस्थानी कहाणी री बात करा—अर दायरो अेकदम छोटो कर र करा—तो अबार मुरलीधर व्यास सू लेय'र आज री मिती मे अेक कहाणी लिखणिय लिखार री कहाणी ताई, सगळी कहाणिया नै सिलसिलैवार राख र देखा तो ओ बदळाव साफ निजर आव।

पण अबै ब दिन कोनी रया क राजस्थानी कहाणी (किणी भी विधा) रो दायरो इत्तो छोटो राख'र बात करी जाव बी नै आजी परखी जाव। आकण-परखण री बगत तो देसी विदेसी भासावा री कहाणी जातरा सू जुडणो ई पडसी।

बा सू जुड़ण रो मतलब ओ कोनी क बा रा खोज दावण लागा, का बा रै देखा-देखी खोड़ खुडावण लागा। बा सू जुड़ण रो मतलब इत्तो ई है क बठ अ बदळाव क्यू अर किया हुया—इण री इतिहासू समझ विगसावा। दूजा री दुनिया सू जुड़णो इण कारण भी जरूरी क आज दुनिया भोत छोटी हुयगी है। छोटी हुयोड़ी दुनिया म आपा कित्ता क छोटा हुय र रसा ? बावी आपणी जमीन, हवा अर पाणी सू कट र रैवण री बात म्हैं नी कय रैयो हू। बी सू कट्या पछ ता लारै रसी ई काई ? बी सू जुड'र दूजा सू जुड़ू जणा ई म्हार काम री सायकता है।

अ की मुद्दा है जिका सू खचळ करतो रवू। इण खेचळ मू जिको की हाथ लाग्यो, आपर सामै है। किसा है—आ परखण रो हक म्हारो कोनी। अणछप्य रूप मे म्हारी हो। अब छप्या पछ था सगळा रा है। इण खातर आकण परखण रो हक थार ई हाथा छोडू।

'सगम' रो आभारी हू क आ पाथी छापी। भाई रावतजी सारस्वत जिण रुचि अर लगन सू इण काम नै पार घाल्या, बी खातर म्हैं निजू रूप सू बा रो आभारी हू।

बीकानेर (राज०) —सांवर दइया
334 001

टीप

सुगन

बी ग्रादमी री, जिक रो नाव गणेस है, सब सू बडी खासियत ग्रा है क बी र कनै कोई काम नी हुव तो ई बा खुद नैं इत्तो 'बिजी' समझ क मास लेवण री ई फुरसत कोनी लाध ।

वो सोनलिया रग री डाडी ग्राळो चस्मो लगाव । घणीक दफ तो चस्मो नाक माथ सिरक ग्राव । मूछा सावळ कोनी छाग ग्रर दाढी न्यारी बधायोडी राख । बी री खिण्डयोडी मूछा झाड् र तिणखला दाइ लाग । जिण बगत वो ग्रापर कमर री सफाई कर परो'र निकळ सो' चरा घुड पूस सू भरयोडा हुव । बी नैं देख र ग्राट मे भरी न्योडो बादरो याद ग्रावण लाग । पण जिक दिन दाढी वणाय'र घर मू निकळ बी दिन बी रो बुक्का लवण री इन्छा हुव । ग्रा बात बी रा भायला कव । जे काई बी रो बुक्को लेय ई लव ता ई बो बुरो कोनी मान । बी सू मिलणिया मिनताइ बी रो हाथ पीच । बी री हथाळी नेजाई नरम है । नूबी बीदणी री हथाळी दाइ ! अेक दफ तो अेक जगा ग्रठ ताइ कय दियो क जे बा छोरी हुवतो तो बी न उठाय र कोडमन्मेर लय जावतो ग्रर ।

ग्रा बात सुण र उण ग्राख मारी । पेर हसण लागग्यो—ही ही ही । थोडी ताळ पछ उण कयो—ग्रा बात म्हारी लुगाई सामैं ना कया ।

बी री लुगाइ रो नाव कमला हो । बो ग्रापरी लुगाइ नैं छोरी र नाव सू बुलावता । बी नैं इण तरह हेलो पाडतो क वा भुसळीज र रय जावती । बो कवता—काळी मा ऽ ऽ ।

काळी री मा री जगा काळी मा सुण र वा चिगती । बा चिगती ग्रर बी नैं मजा ग्रावता ।

जद बी र दूजी छोरी हुई तद उण ग्रापर भायला न पूछ्या क छोरी रो नाव काइ राखू । बी रा भायला ई जाणता हा क बा ग्रापरी लुगाई न काळी मा कय र चिगाव है । व भी बी दिन मजाक र मूड म हा । क्यो—गणेसिया इ छोरी रो नाव हेमा राख द ।

—काइ काइ ? उण ग्राग्या मवडी करी ।

—हे मा ऽ ऽ । दूज भायन बात न रग दियो ।

–हा हा हे मा ऽ ! तीज भायल न ठा ही क गणेस री अक्कल री घडी जाम हुयोडी है। उण चाजी भरण री कोसाम करी।

–हे मा ऽ ! गणेस वात समझ र मजाक रो पूरा रस लेवण मे डूबग्या। बी रा चस्मो नाक माथ सिरकिग्रायो। बो कया गयो—हा भाई लोगा, सुणो सावळ सुणा ह मा ऽ ऽ काळी मा ऽ ऽ बहू मा ऽ ऽ   ।   अर सगळा जणा खुल र हसण लाग्या।

००

गणेस घर सू निकळ्या। वी र साग सुरेन्द्र हो। दोना कन साइकला ही। अेक * दफ्तर म काम करता हा। राजीना च्यार कोस जावणे'र पाछो आवणो। च्यार कोस साइकल सू नापण म पूण घटो लाग्या करतो हो। हवा सामली हुवती बा घटा सवाघटो ई लाग जाया करता हो।

व गळी सू निकळ र सडक माथ आय अूम्या।

सुरन्द्र साइकल माथ चढण लाग्यो क इत्त म गणेस बी नै टोक्यो—ठर सुगन आवण दे पछ चालाना।

–मोडो हुय जावला   ।

–माडा सुगन लेय र चालाला तो बठ दिन भर माथाकूटी करणी पडला। मू ड सू नाई कवता राड निकळ ला। सुगन सारा मिल जाव तो साब री फटकार पोसाव   ।

सुरन्द्र मसळीजग्यो—ठीक है बेटा ! कर पूरा दस मिन्ट खराब। थोडी ताळ पछ— पण था र सुगना गे काइ ठिकाणा। जे दा घटा इ नी आव तो   ? तो छुट्टी तो जरूर लेइज कोनी। बरस म कुन पन्दर कजुग्रल मिल। सुगना री उडीक म ता नित कजुग्रल खराब करो भलाइ। अर आ गधो रोजीना सुगना न उडीक   ।

गध गे नाव याद आवताइ बा मन ई मन भगवान नै अरदास करण लाग्यो—ह भगवान ग्रौर की नइ तो अेक गधो ई भेज। कठ सू ई भज। क्यिाई भेज। पण अक गधा जरूर भेज जिण न टाव नय र ओ गधो टुर तो सरी।

सुरन्द्र उथपण लाग्या। इ बगत खाजगाळ्यो गधो कठ सू आव ! अठ ता अेन छड किणी धाजी या कुम्भार गे घर ई कोनी। नीतर बो बार घरा सू गधा मगवाय र ई गन र डाव कानी सू निकाळ न्वतो।

सुरेन्द्र मोचण लाग्यो—दुनिया आळा ता चान्द माथ पुगग्या। पण अठ रा लोग टाव नाद गावर म हीरा साध। सुगना न उडीक। ज गध रा ई सुगन आछा

हुव तो पछ लाग ई सवद नैं गाळ क्यू समझ ! अर जे आ बात मसखरी रूप ई क्थ तो भी ठीक कोनी । मध जिस बुद्धिसाळी करमयोगी प्राणी साग आ मसखरी ओप कोनी !

उडीक्ता उडीकता तो मौत ई कोनी आव, पछ मधो कठ सू आवतो ! सुरेन्द्र सोचण लाग्यो—मधो नइ तो कोइ दूजो ई हुव बळ तो चोखो । छाजलो लियाडो भगण भर्योडी मटकी लिया आवती कोई सुहागण पीळो ओढ्योडी टाबर री मा क पछ ।

—आव चाला ! सुरेन्द्र बाल्यो—क्यू माडो कर है ?

—बस, थोडी'क ताळ ओर

—तू पड्यो उडीक सुगना नैं । मैं तो आ चाल्यो । मत्तई आयबो करिय, सूनी सडक सू वाता करतो ।

सुरेन्द्र सिगरेट सिळगा र रवाना हुयग्यो।

००

लारल दिना गणेस अेक नूवो नम चाल्यो । बो दिनूग सिझ्या सतोसी मा र मिन्दर मे घी रो दियो करण लाग्यो । बो चाव हो क नानोजी बी नैं स्कूटर दिराय देव । वा कन पीसा री कमी तो ही कोनी । ब्याज रो धधो करता हा । पूत कमाव आठ पौ र ब्याज कमाव चोईसू पौ'र ! पूत बा र कोनी हो, इणी खातर गणेस नै खोळ लेय राख्यो हो ।

गणेस स्कूटर माग माग र थकग्या । ब टस सू मस कोनी हुया । उण छोट मोट दवी देवतावा न काम पार घालण खातर बोलवा बोली । पण पार कोनी पडी । बजरगबली सवात नैं धोकया ता ई नानोजी री आगळ्या तिजोरी र ताळ कानी कोनी गयी । बी न लखाया क सतोसी माता ओ काम पार घाल सक है । बी र हीय साळ आना ढूकगी क स्कूटर महीन दो महीना म आ जावला ।

उण सुरेन्द्र नैं कयो तो सुणण नैं मिल्या—दख, म्हारो तो खयाल है क आदमी न जद खद माथ भरोसो नी रव तद वो मिन्दर-दवरा री सरण लेव । भाठा पूज्या ई स्कूटर मिलता हुव तो मैं ई पूजणो सरू कर दू । पट्रोल रो खरचो ता मन ई पौसाव । अेक स्कटर म्हार खातर ई माग लिय समझ्या क्यू !

—तू ता गलो मर ! गणस बाल्या—काम बणता हुव ता तू म अू पली खूवो मार !

—पनैं ठा है जणा म्हार माथ आ खपत कर ऱ् क्यू । तू थारी राग सतोसी माता न ई सुणाया कर !

सतोमी माता र मैमूड घी ग ि्गा मन र वा प्राथना करतो—हे माता ! म्हार नानोजी न अक्कल दे । ग न िया ई सूत्री मुगा । साइकल र मील सू नित च्यार कास जावणो र आवणो म्हार उम री बात कोनी । म्हारी तो पींन्या म पाणी पड्या ।

जेक दिन सुरेन्द्र वी नै कयो—"ग गणेम थार नान ग ग्रो पीमा अन पत धन ई मिलणा है । पाच सात बरस ठर जा । भार मर्या पछ मरजी माय जिसा स्कूटर लय आये भलाई !

—म्हार इत्तो खटाव कोनी । म्ा रो काइ अ ता वीस वरस ई कोनी मर ।

—अमर पट्टा लिखवायोडा है काइ ? या तैं थारी जलम पतरी दपी है ?

—ज क्या सू मर । आय सोयाळ गू द अर मधी रा लाडू ठाक । असली घी रा सीरा उडाव । भ्रा र हाग्ग म था म्हा नाऊ वत्तो करार है । थार म्हार जिमा रो ता मुरचो अेक पटक म उतार देव । समझ्यो बटा !

सुरेन्द्र चुप हुयग्यो । साचण लाग्यो—मौत रो काइ भरोसो ? काइ ठा, कद कठ फूक निकळ जाव । मह पावणा भ्रर मौत किणी न पूछ र थाडा ई आव ! ठीक है, जीवण रा सहारा घणाई है अर हुव पण मौत रा कारण किसा कम है ! किणीज मिस मू भ्रा सक है वा !

—भ्रब ता सतोसी माता ई कोई चमत्कार भलाई दिखावो । भ्रा सुण र सुरेन्द्र भुसळीजग्यो—हा जद आदमी लाचार हुव तो बी न भगवान री ज सरण लवणी चाइज । भगवान री सरण लिया पछ इ जे काम पार नी पड तो कम-सू-कम आ बात कवण री गुजाइस तो रव क आपा काइ करा भगवान री मरजी कोनी ही । भगवान री मरजी र खिलाफ बापडो बदा काइ कर सक है ।

सुरेन्द्र सिगरेट सिळगा र धूवो छाडण लाग्यो ।

—मन थ सू जेक राय लेवणी ही । नाक माथ लटकयाडा चस्मा आगळी सू ऊपर सिरका'र गणेस बोल्यो ।

—स्कूटर बावत या ।

—नइ । दूजी बात है ।

—खास बात है ?

—नर । अेकदम मामूली ।

—ता बगो सीर वक दखाण !

—दिनूग सिइया कोइ काम करणा चाव ।

—पूछणो काई है सरू कर दे।

—काई करू, आ बता।

—कोयला चुग। सुरेन्द्र रीसा बळता बोल्या।

उण जेकर सुरेन्द्र कानी देख्यो अर पछ चुपचाप बठ्यो रैयो। मून खुभणो सरू हुया पली ई सुरेन्द्र बोल्यो—साफ साफ बता करो मेफा बाइ। तैं काइ सोच्यो है ?

—मैं मणिहारी रो काम सीखणा चावू। अेक जण सू साठ रिपिया महीन म बात करी है। काम सीख्या पछ म म्हारी यारी दूकान। आ कय'र बो सुरेन्द्र कानी देखण लाग्यो।

—ओ अवसर ना चूकिय।

—ठीक है। थार जवगी इ खातर मनैं ओ काम करणो पडसी।

—बस, रवण द। कय र सुरेन्द्र सिगरट बुझाय दी।

बो झाझरक झाझरक उठ्यो। न्हा धोय र पूजा पाठ मे लाग्यो। हडमान-चाळीस रा जाप कर्‌यो। चाय पी। दाढी बणायी। नव बजी घर सू निकळ'र सडक माथ ऊभग्या।

सामैं सू विधवा लुगाई आवती दीखी। गणेस मूडो मचकाड यो। सडक माथ थूक्यो—पिच्च। बी न गाळ्या काढी—आ रडार दिनूग सूणी किन मर ह।

थोडो ताळ पछ अेक दूजी लुगाई आवती दीखी। बी रा पीळा ओढणो दख र बा हरखाय मन सू साइकल माथ चढण लाग्या क इत्त म लार सू किणी छीक न्यो—आक् छी।

बो आपरा जूता खाम'र सुस्तावण लाग्यो, साइकल रो महारा नय र।

—काइ हाल है ? सुरेन्द्र आय'र पूछ्या।

—ठीक है। गणेस र मूड सू मर्‌योडी आवाज निकळी।

—कठ जाव है ?

गणेस रीसा बळतो बोल्यो—कठकारो मत दे।

—सिध जाव है ? सुरेन्द्र आपरी भूल सुधारी।

—मणिहारी आळ री दूकान।

—ले आव, चाना।

—मुगन कानी आया।

—सुगना न वळण दे ।

—तू वळ अठ सू । म्हारो माथा ना खा अवार । वी न रीस आयगी ।

—जावू ?

—हा हा जा उखड !

सुरेन्द्र टुरग्यो जेसलान्ज ।

००

दूज दिन सुरेन्द्र नै टा पडी क गणस न मणिहारी आळ री दूकान माय काम मिलग्यो । पण खास बात आ ही क वी दिन वी न सारा सुगन मिल्या ई कोनी हा । मरच मन सू बिना सुगना ई टुर्‌या बापडा ।

सुरेन्द्र राजी हुया क चालो उण न साठ रिपिया महीन रो पाट टाइम जाब मिल्यो ता सरी । अबक मिलताइ वी गध सू मिठाइ खावणी है ।

गणस सू मिलताइ सुरेन्द्र री इच्छा हुई क पूछ—क्यू बेटा, तू तो कन्न हो नी क बिना सुगना

पण उणी वगत उण साच्या—वळण दो र । ई गध न पूछ'र काइ करणा है ।

गणेस न दख र वो मुळकण लाग्यो ।

हाल ताई

खन लगोलग बधतो ई जा रयो हो। वार-वार कपड री पाट्या बदळणी पड़ती। नूवी पाटी थोड़ीज ताळ पछ पाछीज खून सूं लाल हुय जावती। मगळा रा चहरा धोळा हुवण लागग्या हा।

भोजाई छटपटा रयी ही। बी र चहर री रंगत विगड़गी ही। चहर माथै मौत री छीया घिरगी ही। बी री आख्यां खुली हुवता थकांई अधमुंदी सी-क दीख रयी ही। गात ढीलो पडग्यो हो।

सुमति दूसरी सूई (इंजेक्शन) लगायी। थोडीक ताळ बी री निजर भोजाई र चहर माथ टिक्योड़ी र ी। पाचेक मिंट बीतग्या। खून हाल ताई कोनी रुक्यो। ओजूं पाटी बदळणी पड़ी।

—ओ इंजेक्शन और लावो । सुमति बाली।

मैं बी र हाथ सूं कागद ग पुरजो लेय र इंजेक्शन रा नांव बांच्यो। घर स वार आयग्यो। साइकल माथ चढ र पडन मारण लाग्या। बीकानेर ड्रग हाउस स इंजक्शन खरीद्यो।

सुमति भोजाई र बूंतिय म ओजूं सुई लगायी। उडीकण लागी-कदास खून थम जाव। ओ इंजेक्शन भी काम कोनी आयो।

मा एक दफ फेर पाटी बदळी। वा मन ई मन देवी देवतावां नै धोकण लागी। सायद ई कोई देवी-देवता छूटयो हुवैला जिण रा नाव मा नी लिया हुव। मैं बी घडी न उडीकण लाग्यो जद काई देवी देवता प्रगट हुय र आपरी करामात दिखावला। मैं घणीईज उडीकता रयो पण काई करामात हुई कोनी। खून हाल सिपाई ग्या जाव हो।

सुमति र चहर माथ कूंपळ री रंगावा दीखण लागी। आपरी असमरथता अर परमाटा री मुरखता माथ बा न रीस सी क आ रयी ही।

भाईजी घर म आया। व रीसा बळ रा-मो दम बैयारा है क भाग ना उठाया कर, पण अर गुण कुण है, म आप मत्त ट्यारा है मर भुगता नियार रा पळ। पिता मडा वाइ'र कूरण लाग्यो।

पिंकीड र रूकण सू माईजी न भळ झाळ चढी । वा बी रैं एक थप्पड धर दी । मा पिंकीड न चुप राख्यो । बी र सैंमूड रम्मतिया राख्या । बो रम्मत लागग्यो । मा माय गयी परी । बठ सुमति बठी ही ।

–अब काइ करणो चाईज ? मा पूछ्या ।

सुमति नम ऊची कर र मा र मू ड कानी दख्यो । बा वाली–खून भौत बह चुक्यो है । अब मोडो करया टाबर नैं नुक्साण पूग सक है इ न बडाडो अस्पताळ लय जावा । सायद दोना री जान बच जाव ।

मा दुखभरी मीट सू सुमति कानी दख्यो । मा री आख्या डबडबाईजगी ही, पण आसू कान्नी छळक्या हा ।

सुमति आपरी फीस लय र टुरगी । जावण सू पली च्यार गोळ्या देयगी ही । तीन तीन घटा पछ गाळी देवणी ही ।

मैं मा र नह गया । बा मनैं डागदरणी नैं बुलाय र लावण खातर कयो । मैं अस्पताळ पूग्या । डागदरणी सू बात करी । फेर बगा सी क दौड'र तागो लायो । पाछा बी र कमर कानी गया । बा बार आवती दीखी । मैं हाथ आग कर र बी रो बग झाल लीना ।

डागदरणी भौजाई र डील री तपास करण लागी । माच कन पडी खून सू भरयोडी पाटया न्खी । उण पूछ्या–पडगी ही काइ ?

मा बोली–मटकी उठाय र लाव ही पग तिसळग्यो दो घटा हुवण न आया है पण खून रूकण रा नाव इ कानी लेव

डागदरणी गीसा वळती बोली–ये लाग मरण रो रस्तो मत्तईज निकाळ लवा । आठव महीन म वदेई मटक्या भराया कर है ! मूरख कठई रा ! हुऽऽ ।

डागदरणी दो इजक्शन लगाया । बा खून थमण रो इतजार करण लागी ।

थाम्बीक ताळ पछ मा पाटी वदळी ।

डागदरणी वोली–अब इ न घरा राखणा खतर सू खाली कोनी । जित्ती जल्दी हुय सक ई न बडाडी अस्पताळ लय जावा । तीन च्यार घटा र माय माय माझ्र वार आय जावना ।

वा आपरी फाम लय र रवाना हुयगी ।

मा घबरायाडी सी व आपर दवा देवतावा न अरदास क्या जाव ही ।

अस्पताळ फोन कर्‌यो । ऐम्बूलेंस दूज मरीज नै लेवण खातर गयोडी ही । मैं घर रो ठिकाणो लिखवा दियो । फोन राखया पली एकर फेर कँयो–एम्बूलेंस थाडी वेगी भिजवाया मरीज भोत सीरियस है ।

मैं घरा पूग्यो । देख्यो क भाइजी हाल ताईं बडबडाट कर हा । मा म्हार–कानी देख्यो । मैं कयो क ऐम्बूलेंस वेगीज आवण आळी है ।

भाईजी झुंझळावता म्हार कनैं आया अर रीसा बळता बोल्या–घटो भर हुवण आळो है । ऐम्बूलेंस हाल ताईं कोनी आयी । जा एकर फेर फोन कर'र आ ।

मैं घडी देखी । दस मिंट सू वत्ता कोनी हुया हा । पण भाईजी र कवण र कारण दूसर फोन करण नै गयो ।

दस मिंट और बीतग्या । ऐम्बूलेंस हाल ताइ कोनी आयी । मा बोली–ताग म लेय जावा तो काइ हरज है ? भाईजी, जिका इत्ती ताळ ताईं मन ईं-मन अमूज रया हा अब बरसण लाग्या–तागैं मे ले जाय'र बी री जान लेवणी है काइ ! अठ री सडका म एक एक बिलात रा खाडा है । पूर महीना आळी नैं जे आ सडका सू ताग मे लेय जावा तो रस्त म ई बीरी हालत बिगड जाव अर ईं री हालत तो पला सू ई जे रस्त मे मरगी तो पछ बैठा रोवता रया हुह !

मा मरम्मत हुवती सडका देखी ही । वा बोली–आजकाळ सगळी सडका नूवी बणगी है ।

भाईजी पला दाइज तेज आवाज मे बोल्या–बस बस, वणी ईं समझ नूवी सडका । ईं जमान मे तो सडका बणावणिय ठेकदारा अर इजीनियरा रा बण ग्या है व धाप जासी तो ईं घणो है । अठै तो सगळी जगा अधारखातो है । गरीब री कोई सुण ईं कोनी । अब आईज लेवो नी, दो घटा हुयग्या पण ऐम्बूलेंस हाल ताईं कोनी आयी । ओ ईं जे सेठा रो फान हुवतो तो अबार नैं नूवी एम्बूलेंस बणवाय र भिजवाय देवता । पण गरीबा री कुण सुण !

भाईजी मा र सामैं सू हट र बार आयग्या । व हाल ताईं बकया जाव हा–स कामचोर है साळा ! कोई सुण ईं कोनी । मिनख मर त' मरा भलाईं !

घटी री आवाज सुणीजो । मैं चिमक्या । बगा-सी-क सडक माथ पूग्या । दोनू हाथ ऊचा कर्‌या । एम्बूलेंस री चाल धीमी पडगी । एम्बूलेंस घर आग थमी । दो मिनख फाटक खोल र बार निकळ्या । वा र हाथ म स्ट्रेचर हो । दमार र साग ईं व घर म बडग्या । स्ट्रेचर पसार र उठीवण लाग्या ।

मा पाटी बदळ'र खण मे नाखी । भोजाई नै स्ट्रेचर माथ सुवा'र मा बार निकळी । स्ट्रेचर उठा र ब लोग ऐम्बूलेंस माय जा वठ्या । भोजाई र साग मा अस्पताळ गयी । मैं साइकल लेय'र ऐम्बूलेंस र लार लार अस्पताळ पूग्यो ।

भोजाई नै अपरेसन आळ कमर माय लेयग्या । मा अर मैं बार बैंच माथ इ बठग्या । बी कमर माय नरसा घडी घडी आय जाव ही ।

भाजाई र पीड सू बरडावण री आवाज फाटक खुलताई बार ताई आवती पछ बीरी आवाज हळकी पड्या गयी ।

आपरसन आळ कमरै रो दरवाजो बद हुयग्यो । बारै बठी मा पाछीज आपर तेतीस करोड देवी देवतावा नैं धोकण लागी । मा भात भात री बोलवा करण लागी । परसाद री रकम बध रयी ही । पला तो उण सवा रिपिय रो परसाद बोल्यो । पछ ओ बधता बधतो इग्यार रिपिया ताई पूगग्यो । बस, परसाद र साग एक सरत ही–भोजाई री जान बच जाव अर पेट मायलो टाबर सही-सलामत हुय जाव । मा कामना कर रयी ही क छारो हुव ।

कमर रो दरवाजो खुल्यो । एक नरस बार आयी । मा उतावळी सू पूछ्यो–बीदणी री हालत किंया है टाबर किंया ।

–बीदणी री हालत ठीक है मर

–अर काई ? मा पूछ्यो ।

–मर्योडी छोरी हुई है । नरस उथळो दियो । मा एक लाबो निसकारो न्हाख र पाछी बच माथ बठगी । मनै ओ सो की धोखो कोनी लाग्यो । जो खराब हुयग्यो ।

नरस गयी परी । मा उदास आख्या सू आपरेसन आळ कमर र दरवाज कानी देखण लागी । पछ आपरी गीली हुयोडी आख्या ओढण र पल्ल सू पूछ र म्हार कानी देखण लागी ।

डागदरणी कमर सू बार आयगी । वा मा कन आय र बोली–मरीज नै एक हफ्त ताई अस्पताळ म ई ज राखणो पडसी ।

भोजाई नै बच्चावाड माय एक विछावणो मिलग्यो । मा रात भर भोजाई कनै रयी । मैं पाछा घरा आयग्यो । सगळा जणा नै खबर दी । बाबूजी अर माईजी जद आ सुणी क मर्योडी छारी हुई है तद वा र चहर माथ की सळ पड्या अर व सळ घणी ताळ नी टिक्या । थोडीक ताळ पछ व इया हुयग्या जाण की हुयो ई कोनी । कोई जलम्या कोनी । कोई मरया कानी ।

दिन ऊग्या ।

मैं, भाईजी अर बाबूजी अस्पताळ पूग्या। म्हार हाथ म फावडो अर खापण हा। भाईजी मर्‌योडी छोरी नैं उठाय लाया। बी नैं कपडो ओढाय'र हाथा मे उठाय ली। अब म्हे मसाणघाट जाव हा। वठ पूग र मैं खाडो खोद्‌यो। बाबूजी छोरी नैं खाड माय धूर दीनी। मैं देख्यो—बाबूजी अर भाईजी री आख्या सूनी अर सूखी ही—साव सूखी।

पण जे मर्‌योडो छोरो हुवतो तो ? खीरा सा बळतो सवाल उछळ। म्हारी आम्या मामैं कोई चित्राम घूमण लाग। सगा-सम्बन्धी अर गळी मोहल्ल आळा दुख प्रगट करण न आवता घर आळा नैं की धीजो बधावता छोर री मौत सू लाग्याड घाव न भरण खातर 'आ तो सा सावरियै री माया है क्य'र मल्हम लगावण रो फरज पूरो करता।

पण आज ? आज कोई नी आवला। सगळा जाण है क छोरी हुई है अर रा भी मर्‌योडी। चालो, चोखो हुयो, गिरह टळी। बापड रा भाग चोखा है क जलमतीज मरगी।

ᛣᛣᛣᛣ

हिडकाव

रमेस साइकल खडी कर र पिरोळ रो दरवाजो खड़कायो। मांय सू आवाज आयो—कुण है र ।

उण पूछयो—बजरग है कांइ ?

--हाऽऽ है ।

रमेस आपर कोट री जब सू रुमाल निकाळ र मूंडो पूछ्यो। कसा माथ हाथ फेर्‌यो। पछ म्हार कानी देख र मुळक्यो। मुळकती बगत बीरा खिल्या और ऊंडा लाग्या मनै। उण म्हार काध माथ हाथ धर र कयो—आवो, माय चालां। तू भी याद करला क किणी सू मिल्यो हो ।

म्हे दोनू मांय पूग्या। आगण म बेवळू बिछयोडी ही। चूर्ण मे खूंट सू गाय बध्योडी। आग डाव हाथ कानी अेक कमरो हा।

रमस कमर रो दरवाजो खडकायो। दरवाजो खुल्यो। बजरग हंस'र बोल्यो—आवो आवो ।

म्हे दोनू माच पर बठग्या। बा खुद म्हार कन बठग्यो। बी री लुगाई सुशीला अेक कानी खूण म ऊभी ही। बजरग र कयां सू बा स्टूल माथ बठगी। सामन तणी पर पेटीकोट, साडी, ब्लाउज अर चाळी र अलावा गरम सूटर ग्यारी टंग्योडी ही। दूजी तणी माथै पण्ट बुश्शट अर गजी जाघियो टंग्योडो हो। खूंटी माथ तौलियो पड्‌यो हो।

च्यार जणा खातर बी कमरो मन वेजाई सकडो लखायो। इण री अेक वजह कमर म सुशीला रो हुवणो भी हो। भायल र भायल सू मिलण नैं जावा अर बठ बीं री लुगाई कमर म हुव तो अजीब-सो क लखावण लाग। इणी कमरै म जे पाच-सात जणा अेक ई डोळ रा हवता तो सायद इत्ती अमूजणी कोनी आवती। बाता रो बाजार गरम हुय जावतो। पण अठै ता म्हे सगळा चुप बठा हा।

कमर मे मून तिरण लाग्यो। मन आे मून अखरण लाग्यो। थोडी ताळ पछ लखायो क ज थोडी ताळ ताइ आईज हालत रयो तो लिलाड माथ पसेव री बूंदा तिरण लागला। बगला अर पीठ पर रींगा सा चालणा सरू हुय जावला। रूवा म आल-पिना सी क चुभनी लागी।

अठै आय'र मूस रै जगळ म भटकण सू की पछतावो हुवण लाग्यो । आवण री ईछा तो ही ई कोनी, पण श्रो रमसियो धीगाण घीस लायो । हरामखोर ! मैं मन-ई-मन बीनै गाळ काढी ।

मैं म्हारा नख कुचरण लाग्यो । सामनै तणी माथ टग्योडा कपडा देखतो अर बिना मतलब ई गिणण लागतो—अेक दो तीन । थोडी ताळ पछ बिना किणी ताल र पग हिलावण लागतो । अेक्दम होळ-होळ । घरै हुवता ता दादी इ कुबाण खातर टोकती । कवती कै मांच मांथ बठ र पग नइ हिलावणा चाईज ।

मैं रमेस र खात मे गाळ्या जमा कर्‌या गयो ।

रमेस आपरी जेब मे हाथ घाल'र टिकटा काढी । बजरग अर सुशीला कानी हाथ कर'र कैयो--लो अेक अेक टिकट खरीद लो । लखपति बण जावोला ।

बजरग हस'र बोल्यो—नइ भायला ! थारै कन ई राख । म्हारो इरादो लखपति बणण रो कोनी । घणो पीसो आदमी नैं बेईमान बणा देवै ! पछ दो रा च्यार अर च्यार रा आठ करण र अलावा की सूझ ई कोनी ।

रमस हस्यो । बजरग कानी सू निजर हटा'र सुशीला कानी सावळ घूम्यो । बोल्यो—लो, थे आंख मीच'र, ले बजरगबली रो नांव'र अेक टिकट लेय लो । पलो इनाम थार ई नांव खुलला ।

खासा ताळ ताई ओ धधो चालतो रैयो । मैं मगळां सू अलायदो अर कटयोडो-सो ओ ढग देखतो रैयो । बस, इत्ती राहत जरूर मिली ही क बा री फालतू बाता सू कमरै मे तिरतो मून टूटग्यो । फालतू ई सही पण कमरै म बतळ ही । अब मैं खुद नैं की हळको महसूस करण लाग्यो । थोडी ताळ पली तो माथो दूखण लाग्यो हो—मून सू अमूजता अर भीता कानी देखतां देखता ।

—मैं अेक मिंट मे आवू—कैय'र बजरग कमर सू बारै गयो परो । जावती बगत बो कमरो बद करग्यो-मोय ठण्डी हवा नी आवै इण खातर । अब बो कमर मे म्हे तीनू रयग्या—रमस, सुशीला अर मैं । कमर म आजू मून तिरण लाग्या । लाग्यो क कमरो सक्डो हुवता जा रयो है । थोडी ताळ पछै रमस बोल्यो--हा क्वो तो अेक टिकट थानै तो ल्य दू ।

बा की कोनी बोली ।

रमेस आपरी पीठ लार वण्योडो आळो खोल्यो । म भी आळ कानी न्हाळण लाग्यो । आळ मे तेल री सीसी क्रीम पाउडर काच नखपालिस अर लिपस्टिक र अलावा की दूजो जिनसा ई पडी ही । रमस लिपस्टिक उठाय'र बोल्यो—ई नैं होठा माथ लगाय लू तो किसोक रव ! लिछमी कार्ड कैवैनी ? सुशीला खासा

हुसियारी सू यात रो रुख रमेस री जोडायत कानी कर दियो । रमेम न उथळो कानी मूझ्या । उण दात तिडका दिया—ही ही ही !

म गौर कर्‌यो । बी रा चिन्वा श्रोर ऊडा हुयग्या हा । कमर रा दरवाजा खुल्यो । बजरग र हाथ मे ट्रे ही । उण ट्रे स्टूल माथ धर'र दरवाजो ढक लियो। पछ माच माथ बठग्या । सुशीला गिलासा मे चाय घालण लागी । ट्रे म भुजिया ग्रर बिस्कुट प्यारा हा । रमेस री निजर ट्रे पर टिक्योडी ही । उण भुजिया सू मुट्ठी भरी ग्रर फाको मारता कयो—श्र खाली देखण खातर ई है काई ?

—नई तो । बजरग बोल्यो ।

—तो पछ खावो कनी । कदरा ई पड्‌या है । कोई हाथ चलाव ई कोनी । ग्रर उण फ को मार लियो ।

सगळा हसण लाग्या ।

रमस बिस्कुट उठाय र सुशीला नैं खणावण लाग्या । उण ग्रापरो ग्राधो मू डो ढक राख्यो हो । बी र नई नई करता थका ई रमेस बी न ग्रापर हाथ सू बिस्कुट खणाया । बिस्कुट खणाया पछ वा मुळक्यो । म्हारी निजर फेर बी र सूक्योड हाडा ग्रर चिब्बा कानी ठरगी ।

पछ बजरग र कया सू सुशीला श्रेक बिस्कुट रमेस न खणावण खातर उठायो ।

—ग्ररे ग्ररे । करता रमेस बी रा मुरचा पक्ड लियो ग्रर फेर हसण लाग्यो ।

बी रा चिन्वा ग्रोर ऊडा हुयग्या ।

सुशीला दूजो बिस्कुट उठाय र म्हार कानी हाथ लम्बो कर्‌यो । म बोल्यो—म टावर कानी । मत्तई खा लेसू ।

बजरग रमेस कानी देख र हस्यो । रमस म्हारै कानी दख्या—बी री ग्राख्या म हळकी सी क रीस ही ।

रमेस सुशीला रो मूडो उघाडता कयो—म्हां सू क्या रो घूघटो ।

वा साडी रा पल्ला ठीक कर र माथो ढक र बठगी ।

बी र गोर ग्रर चौकण चहर री चमक म् कमर री रोसणी री सोभा बधगी।

चाय पिया पछ कमर म मून रा घटाटोप वादळ घिरग्या । कमरो फेर सकडो लागण लाग्यो । मैं फेर भीता देखण लाग्या । तणी माथ टग्योडा कपडा गिणतो पग

हिलावण लाग्यो । थोडी ताळ पछ मून सू भचीडा खाय'र उथप्थोड मे क्यो—ग्रब ग्रापा न चालणो चाईज ।

रमस बोल्यो—क्यू जल्दी मचाव है थोडो खटाव राख, ग्रबार चाला ।

मनै रीस ग्रायी । वेजा लीचड ग्रादमी है ! इया बठ्यो है जाण बाप रो घर हुव । हरामी कठई रा । खुद र तो कोई काम धधा कोनी, पण ई बापड बजरग र ता काम हुवला ई । अगरेजी म एम ए कर रयो है । पढणो भी तो हुवला ग्रगल ग्रादमी नै ! पण ग्रो फटीचर क्लक उठण रो नाव नी ले रयो है । ग्राफिस तो मोडो बळ ग्रर भागण री घणीज ऊतावळ कर । जिया दफ्तर सू भागण री ऊतावळ कर, *विया ई ग्रठ सू उखड बळ नी । ग्रर गुरघण्टाल ! ग्रब उठ जा ! राम थारो भलो* करसी ।

मै रमस कानी देख्यो । बी र होठा माथ मुळक ही । मनै बा मिजळाट लागी ।

—ग्रालू रो सीरो कद खणा रया हो—रमस क्यो । बठ सरदारसहर मे थार हाथ रो सीरो खाया हो नी, जा पछ ग्राज ताई ग्रालू र सीर रा दरसण कोनी कर्‌या ।

मन हसी ग्रावण लागी । हुह ! तो ग्रा बात है । ग्रालू रो सीरो भाव है वेट नै ! गोबर क्यू कोनी खाव हरामी ! सीरो सुवाद लाग । लाग क्यू कोनी ग्रापर घर मू काई जाव है । फोगट म खावण नै मिल जद तो सुवाद ग्राव ई ! जेब सू खरच र खाया ग्रसली सुवाद री ठा पड ! बो दिन भूलग्या दीख है । 'उपकार' फिल्म म घीगाण घीस र लेयग्यो । साग कन्नू ई हो । रमस ई भरोस हो क फिल्म ता कनू ई दिखायला । खासा ग्रळसा मळसा कर्‌या पण पार कोनी पडी । खुद र गळ म घण्टी बधगी जण ग्रभूजण नाग्या । इण्टरवल ताई दस दफ क्यो हुवला क फिल्म तो सफा रद्दी है । डायरेक्शन पोचो है । गाणा मे तत कोनी । बी री बात मानण नै कोई *तयार कोनी हो । पण बो ग्रापरी राग बन्द कर दे किसी पोल पडी ही । कबाडी* कठ ई रो !

रमेस क्यो—देख भायला बजरग थारी सिफारिस बिना काम बणतो कोनी लाग ।

—सुस्सी अ कद-कद कवला । बजरग क्यो ।

—ज रोजीना ई कवण लाग्या तो । बा हस र बोनी ।

—हा ग्रालू ग्रावै तो बार ई मास है, पण भरोसो राखो रोजीना कोनी मैंत्रू ।

432
1983.

मैं रमेस कानी देख र साचण लाग्यो क ई रा अ चिब्बा आलू रो सीरो खाया तो भरीज कानीं, इणन तो सजरी प्लास्टर करवा लेणो चाईज।

म बी री बगल मे आगळी खुबायी। उण म्हार कानी देख्यो। मै नस सू टुरण खातर कयो। बा फीटाई सू बोल्यो—हाऽऽ अब तो चालणो ई पडसी। आ हलव खातर तो हा भरी कोनी। खर ।

बो ऊभो हुयग्यो। बी र लार मै ई कमर सू बार निक्ळ्यो। उण आपरी ऊट जिसी लाम्बी नस कमर मे घाल र कयो—म्हानै छोडण खातर कोनी चाल ?

मन बजरग रो चहरो साफ निजर आव हा। बा की परेशान सो लखायो। दिमम्बर री ठण्ड म बार निक्ळण री की कम जची हुवला। पण रमेस री बात र कारण बो बेमनो-सो बार आयो।

म्हे तीनू बार आयग्या। ठण्डी हवा हाड कपावण लागी। मैं मफ्लर न कस'र काना र बाध लियो।

थोडी दूर आया पछ मै कयो—अब थे जावो भला ई, कठ ई सरदी मे जुडग्या तो !

रमेस बोल्यो—नइ नइ थोडी दूर और चाल भायला ! म्हे तो तीन मील सू चराय र आया हा थोडी दूर तो तू ई चाल।

मनै जूजळ आयी—अर कबाडी ! तू तो तीन मील सू आलू रो सीरो खावण न आयो हुवला, पण इ बापड न ठडी हवा खावण खातर क्यू घीस है। मन ता टिक्ट यारा बेचणा हा।

थोडी दूर चाल्या पछ म कया—अब थे जावो। आ तो थानै ठेठ बीकानर ताइ साग ले जावण री तेवड राखी दीख ।

—रमेस छोड जद जावू नी—बजरग कया। मै अेक्र पेर कयो जए आपरी साइकिल पाछी गगासहर कानी मोडी अर—अच्छा, मैं चालू—कय'र अधार म अलाप हुयग्यो।

—तू सफा रद्दी आदमी है मास्टर ! रमेस रीसा बळता बाल्या।

—बी न सीया मार र काइ करणा हो ? मै पूछ्यो।

—तू समझ कोनी—उण आ कय र आख मारी अर मुळकण लाग्या।

गोगा मट कन आवताई म्हारा रस्ता फटग्या।

ठण्ड रा थपड़ा खावतो मैं घरा पूग्यो।

००

अेक दिन रमेस फेर मिल्यो ।

उण मनै हेलो पाड्यो । मैं ढबग्यो । म्हार कनै आय'र पूछ्यो—अदीतवार नै बजरग आयो हो काई ?

—हांऽऽ ।

—साग सुशीला ही काई ?

—हांऽऽ । म्हारी निजर बी र चिब्बा माय टिकगी ।

उण हसता कैयो—ईं बजरगियै रो काम ठीक है। पली तो म्हार घरा धरणो दिया करतो हो, अब थार घरा आवण लागग्यो । बा छमको जोरदार है ।

—छमको कुण ? मैं पूछ्यो ।

—अरे यार बा ई सुशीला ऽऽ ! बो हसण लागग्यो । बी रै चिब्बा नै देख'र मनै घिरणा हुवण लागी । सुशीला खातर 'छमको' सबद मनै खासा अखर्यो । बी रो घटियापणो सामन आयग्यो । हरामी कठ ई रो ! दूजा री लुगाया बाबत सोचण म आनै मिल काई है ?

—आ बात ठीक कोनी । म्हार सू रईज्यो कोनी ।

—ईं म ठीक ब ठीक री काई बात है ।

—थारै मूड आ ओप कोनी । मूड आगै तो भाभी भाभी कर अर पीठ लार । आग री बात जाण बूझ र अधूरी छोड दी ।

बो चुप रयो । मैं चाव हो क बो की बोल । इण खातर फर कयो—जे बजरग थारी लुगाई खातर इसी बाता कर तो ?

अबक तीर सागी जगा लाग्यो । उण खारी मीट सू मन दख्यो । सडक माथ थूक र बोल्यो—थनै बाता घणी आवण लागी दीखै मास्टर !

पछै बो नाराज हुय'र गया परो । अब जद भी मिलता रुख मिला र बात कोनी करतो । पण ओ सिलसिला घणा दिन कोनी चाल्या । अचाणचक बो राजी हुयग्यो । बी र राजी हुवण रो कारण मै कोनी जाण सक्यो । बस, इत्तो ई लाग्यो क बी न आ बाता म खासा मजो आया करता । अब कोई बात चालती ता बो घुमा फिरा र सुशीला रो किस्सो बी बात सू जोड'र हस देवतो । बो आ बात पुष्ट करणी चावतो क सुशीला 'चालू' है । कोई लगातार कोसिस कर तो बी नै आपर साग —आ कय'र बो हसता–ही ही ही !

आ ई दिना बा बजरग न ई भाडण लाग्यो हो । लारला दिना कनू बी नै इसी बाता बतायी जिकी उण बजरग सू सुणी ही । बात पचाया बी रो पट आफर जाव । इण खातर बा रमेस ताई माल पुगाय दियो ।

अब रमस बजरग रो पूरा इतिहास बखाणणो सरू कर्यो कै माणक रै श्रू' इ नीचड बजरगिय सू मुलाकात हुई। श्रो जद बीकानेर आयो तो रमेस र घरो ठरयो। बा दिना ई नुगर बजरगिय न उण चक्कदा करवाया। फेर बो बजरग न गाळ्या काढतो—नुगरो है नुगरो! म्हारी तो बात छोड। बी किसा मनै छप्पन भोग जीमाया हा। सरदारसहर मे मैं माणक र अठ तो जरूर जीमतो हो पण इण ता चाय खातर ई कदई पूछ्यो हुव जिका याद कोनी। भूख माता कठै ई री!

—तू ई तो कद हो आलू रा सीरो खायो हो। मै बात कुचरी।

—अरे पड़्यो कठ हो आलू रो सीरो। बो तो आपर बहनोई खातर वणायो हो। म्हे पूगग्या जणा दो च्यार कवा म्हानै ई चखा दिया। मैं आ सगळा नैं जाणू। थारी तो अक्कल निकळगी मास्टर! मसाणां म कठ ई इळायचिया लाधै?

बो खासा ताळ ताईं बजरग नैं गाळ्या काढतो रयो। गाळ्या काढ'र थकग्यो जण मनै हुकम दियो—ल अब चाय तो पा बाळ! मै बी रै हुकम री तामील करी।

००

केई दिना बाद री बात।

सिंझ्या पड़गी ही। बो म्हार साग चुन्नीलालजी री दुकान माय चाय पीव हो।

—साळो नाजर है। रमेस कयो।

—की री बात कर है? मैं पूछ्यो।

—बजरगिय री।

—थनै काइ ठा?

—ब्याव हुय नं तीन बरस हुयग्या। हाल ताई की कोनी हुया। अर ना ई काई उम्मीद है।

—थार ब्याव न भी तो पाच बरस हुयग्या। थार भी तो हाल ताईं ऊदरी ई कोनी हुई।

—मैं तो सम्भळ र चालू। क्य र उण आपरी जव सू निरोध री डब्बी री डब्बी निकाळ र दिखायी।

—बो भी सम्भळ'र चालतो हुवला। मैं कीं और सुणण र मूड म हो।

—बो सम्भळ'र कोनी चालै । रमेस मूक'र बोल्यो—साची कवू, बी नाजर है। लुगाई र काबिल कोनी । पछ बो हसण लाग्यो। बी रा चिब्बा और ऊंडा दीखण लाग्या।

रमेस जोर सू हस्यो। मैं चिमक्यो। पूछ्यो—काई बात है ? इत्ती जोर सू क्यिा हस है ?

—बस, इया ई ।

—कोई कारण तो हुवला ई ।

—अेक बात याद आयगी रे ।

—काई ?

—आ जोडी कित्ती बेडोळी लाग। सुशीला तो रेमन सक्म री हथणी दाई अर ओ बजरंगियो टीपू म्हाराज ! आ बिलातियो बी नै किया सरतो हुवला ?

मैं रीसा बळनो सोचण लाग्यो—हा, लाडो, तू तो दारासिंघ रो भाई है जाण ! घर आळा हाड तो कीरतन कर है अर दूजा री नामरदी रा सर्टीफिकेट लोगा नै दिखावतो फिर। कठ ई ओ खुद तो । पण म्हारो काई लियो। फूट्या लिछमडी रा। बा रोवती फिरला।

—आ मास्टर, थनै घूमाय लावू । उण आख मार'र कयो।

—किन्न चालण रो विचार है ?

—गगासहर !

—बजरग कन ? मैं पूछ्यो।

—ऊ हूऽ बी सू म्हारो काई काम। कय'र बो सीटी बजावण लाग्यो।

—तो पछ ?

—सुशीला कनै जावला । बो हस्यो ! बी री हसी म मिजळाट साफ दीख ही। बी री आख्या रा भाव बदळग्या।

—तू जा म्हारो मूड कोनी ।

—डफोळपणो ना कर बठ सुशीला नै छेडसा ।

—आ फालतू बाता म काई धर्या है ?

—बा मन चाव है र । उण हस'र कयो।

—ठीक है ! तो तू जा परा। बजरग हुव तो बी न लिछमी कन भेज दिय। मैं रीसा बळ'र कयो।

बात बी री जोडायत सू जुडगी इण खातर उण मनै गाळ काढी । फेर सडक पर थूक र बोल्यो—थार मे अक्कल नई आणी मास्टर ! ई दुनिया रो कीं तजरबो कर ।

उण आपरी साइकिल रो मूडा पमासहर कानी कर लियो । म्हार कानी देख र मुळक्यो । म्हारी निजर फेर बो र चिब्बा माथ टिकगी । साइकिल पर चढ र उण पडल मार्‌या अर थोडी ताळ पछै म्हारी दीठ सू अलोप हुयग्यो ।

मै सोचतो रयो क औ पूर रस्त सुशीला र गोर, चीकण अर भरव डील साग दिमागी अमखेल करतो रवला । आपरी रगत गति नै तेज करला अर नसा नै बिरथा तणाव देवला । फालतू ई सासा नै गरम करला । अर अबक जद मिलसी तो नूवी बात सुणावैला ।

कोई अचूम्भ री बात कोनी क अबक मिलताई बो आ कव– सुशीला र टाबर हुवण आळो है । थन सच्ची कवू मास्टर ! ओ टाबर म्हारो ई है ।

बी बगत बो फेर हसला । बी रा चिब्बा मोर ऊडा हुय जावला ।

राळा नाखतो अेक कुत्तो म्हार कन सू निकळग्यो । डामर री काळी सडक माथ कुत्त री राळा देख र मनै रमेस री बाता याद आवण लागी ।

कुत्तो गयो परो । म्हारी आख्या आग रमेस रो चहरो घूमण लाग्यो ।

oooo

हत्या

तकिय न हाल ताईं मुट्ठ्या म भीच राख्यो है । जदपि अबै पला आळी स्थिति कोनी । जिक तूफान र आवण रो डर हो, बो निक्ळ चुक्या है । बी वगत कमर री छात काप'र पडती सी-क लागी । भीता भी हालती सी लागी । तूफान आयो । भीता र साग छात पडगी । मळबो हटा'र फक दियो । अब सब बाता ठीक है । जो की भी हुवणो हो, हुय चुक्यो । बीत्य नै लेय'र चिन्ता करणी मूरखता है । मा भी आ ई बात कव । बी दिन भी मा चिल्लाटी-सो मार'र आ ई बात कैयी कै जिको भी हुयग्यो वी माथ धूड न्हाखो । अबै करणो काइ है, आ सोचो ।

मा जिकी बात सोची ही बा घणीज खतरनाक ही । मा री बात सुण'र म्हार सगळ डील म कपकपी बडगी । बी योजनाबद्ध हत्या म मैं सामिल हुवणो कोनी चाव हो । पण म्हार सामिल हुया बिना बा हत्या मुसकल ई नईं असम्भव ही कारण कै बा हत्या मन ई करणी ही । किणी दूज री नी खुद री ई ! म्हार आपग खून री ई ! बी दिन मैं म्हारी आगळ्या काली देख्यो । नख हा तो सरी, पण घणा लाम्बा कोनी हा । जे म्हारा नख लाम्बा हुवता तो मैं बिना चक्कू छुरी र हत्या कर न्हेवती । खुद र पेट मे लाम्बा नख खुभा'र बो सो की बार काढ लावती, जिण न नाजायज री सजा मिलण आळी ही । बल्कि साची बात तो आ ही क घर आळा री तरफ सू तो बी नै नाजायज री सजा मिल चुकी ही । बारला नै बी बात री ठा ई कोनी ही । अर बो भेद बा नै मालूम नीं हुव, ईं वास्त स काम चागी छान हुवता हा । हरक बात होळ सी क हुवती । लागतो क वा दिना घर र मम्बरा रा काम जिका बी हत्या काण्ड म सामिल हा घणा सरवा हुयग्या हा । मन सावळ याद है क घणी ईं दफ जीसा गळो फाडता रवता तो ई बा न बा चीज घण्टा ताइ कानी मिलती । मा ऊंच सुर म काम करण खातर कैवती तो ई किणी र कान माथ जू कोनी चालती । पण आ दिना तो हरेक बात सन सू ई समझीजण लागगी ही ।

आखिर खूनी औजारा री तलास सरू हुई ।

मा अेक समझदार नरस सोध लायी । नरस म्हार कमर मे आयी । उण मत्र जणा नै कमर सू बार काढ दिया । मैं डर्‌योडी बकरी दाइ पिलग माथ प डी ही । उण म्हारी साडी, पटीकोट समेत, साथळा स ऊपर ताई सिरका नी । उण रबड रा

दस्ताना पर राख्या हा । उण म्हार समूच डील न तपास्यो । वा आपरो नीचलो होठ दाता सू दाब'र की सोचण लागी । बी र चहर माथ पसवर रग आयो अर अलोप हुयग्यो । बा चुपचाप बारगयी परो । खुण म ऊभी मा र वन्न जाय'र दबी आवाज म की क्यो । मा नस हिलाय र इ बात री हामळ भरी क चाव जिया भी हुव, ओ काम सावळ पतीजणो चाईज । अक्दम छान !

नरस आपर काम म लागगी । बी री ग्नियोडी गोळ्या अर क्षेपसूल्म अकारथ गया । आखिर उण दो इन्जेक्शन देय र जीत न आपरी मुट्ठी मे बन्द कर ली ! अर खासा दिना पछ ठा पडी क मा बी नरस री मुट्ठी मे सौ रो अेक नोट दाब्या हो—होळ सीक !

००

लारला दिना रो अेक टुकडो !

सगळ घर मे म्हारी सगाई री बात चाल रयी ही । सगळा जणा बी री तारीफ रा पुळ बाध रया हा । बी रो नाव हरीश हो । थोडाक दिना पली इजीनियर बण्यो हो । चोखी तिणखा ही । तिणखा र अलावा ऊपरली आमद ई घणी ही । घर रा स मम्बर राजी हा क म्हारी सगाई इस घर म हुय रयी है जठ आराम ई आराम है ! सगाई पक्की हुअण सू पली हरीश मन देखणी चाव हा । थोडा दिन साग रय'र अेक दूज र सुभाव आदत सू वाक्फि हुवण री इछा म्हार मन मे भी ही ।

घर मे सब सू पली इ रो विरोध मा करयो । पछ जीसा । पण भाईजी बोल्या क ई म काई खराबी है । आपा बाजार सू बरतण भाडा भी तो सावळ देख परख'र खरीदा हा । पछ ओ तो पूरी जिनगाणी रा सवाल है । इ र पछ ब आपरो रोवणो रोवण लागगा क बा र गळ मे थारबी बध्योडी काळी छारी बाध दी जिकी अब च्यार टीगर जिण'र अधबूढी हुयगी है ।

घर म ई बात री मरगम्मी केई दिना ताई रयी । अ त पत हरीश आयो । बा स्कूटर चलाणा जाण हो । ई सहर मे आवता ई बो आपर भायल र घरा गया । वठ सू स्कूटर माग'र लायो । पछ घरा पूग्यो । घर म बी रो चाखो आव आदर हुयो । सिझ्या हुवताई मैं बण ठण र तयार हुयगी । जीमण रो ग्रौरा काढयो जणा हरीश बाल्यो क पाछा आय र जीमसा । बो मन स्कूटर माथ बठाय र घुमावण खातर लेयग्यो । मैं स्कूटर माथ पली दफ बठी ही । मन झिझक महसूस हुय रयी ही । अेक अणजाण आदमी रो डील परस ! अपरिचय री खाई बीच म ही, पण तो ई मैं म्हार दोनू हाथा सू हरीश री कमर कस र झाल ली । डील मे रूवाळी भरीजगी । गाला

माथै लाल रग पुतग्यो । ह्मारा तेज वायरा वेसा री लटां नै लापरवाही सू उडा रैया हा । हरीश ग्रापरी नस लार घुमाय'र घडी घडी मनै देखतो। जिता दिन हरीश ग्रठ रयो, ग्रो सिलसिलो चालतो रयो । बी रो स्कूटर रात नै ग्रालीसान होटल रै ग्राग ठरतो ।

होटल रो कमरो । ग्रकात । हरीश री ग्राख्यां मे भर्योडी भूख । म्हारो विरोध । नई हराश नई ग्रा बात ठीक कोनी । हरीश, नइ ई ई ऽऽ। मैं बी रै बाथा सू छूटण री कोसीस करती कैया—ग्रा बात गळत है ।

बो हस्यो । ग्रापरा तपता होठ म्हार गाला पर चेप र बाल्यो—ई दुनिया मे को गळत कोनी । ग्राज नई ता काल ग्रो सब तो हुवणो ई है । जिको हुवणा है, बी म रुकावट क्यू ?

पछै बी री बाथां रा घेरा सुकडीजता । मैं बा घेरा म फसती जावती ।

हरेक र्फ ग्राई वात हुवती । हरीश म्हारी साडी रो पल्लो ग्रापरी मुट्ठ्या मे कस'र घाल लेवतो । पछ बी री जिद ग्राग हार'र मे सण्डल खोल'र पिलग कानी जावती परी । म्हारी ग्रांख्यां ग्राग दिनूग री टम छात माथ ऊम र देख्याडा व धीठाव पसरण लागता जिका म कबूतर कबूतरी दाणा चुग्या करता हा । कबूतर कबूतरी सू चूच मिलावतो ग्रर पख फडफडाय'र वी र ऊपर चढ जावतो । पछ कूद'र पाछो नीच उतर ग्रावतो ग्रर कबूतरी सू पेर चूच मिलावण लागतो । ग्रा दख र मनै रूंवाळी सी छट जावती ।

हरीश गया परो । उण ब्याव करण सू साफ इनकार कर दियो । उण कागद मे लिख्यो क बी न बी ए पास छारी चाईज । ग्रर मै फक्त हायर सकण्डरी पास ही !

✿✿

लारल दिनां रो ग्रेक ग्रौर टुकडा

ग्रेक दफै समूचै घर म मुडदानगी बापरगी । म्हारै खातर कोई दूजा छोरा तैलासीजणो सरू हुयो । इणी बीच मैं खुद सू डरण लागगी । महीनो पूरो बीतग्यो । दिन ऊपर चढण लाग्या तो मा री सक सूव भरी निजर म्हार कानी उठण लागी । की न की पूछणो चाह'र भी बा की कोनी पूछ सकी । ग्रर पेर ग्रेक दिन बिना की बतायां ई सो खुलग्या ।

मनै धान री वास ग्रावण लागी । मैं लुक छिप'र चूल्है री राख फाकण लागी । नींबू या कैरी खावण री इछा हुवती । बी दिन जीमतो बगत उबकी ग्रावण

लागी। उणरी रोवण री कोसीस करी तो वा और जोर सू मायी। उठ'र नाळी कनै दौडी। गोडा म माथो घाल'र उबकी करी। उठी तो लखायो क लार काई ऊभो है। नस घुमाय'र देख्यो—साम मा ऊभी ही। म्हार चहर रो रग उडग्यो। मा री आख्या मे ऊग्योडो सवाल सवूत लाधताई अेक पुन्ना रूप धारण कर लियो। म्हारी चोटी पकड'र मा मनै घीस'र कमर म लेयगी। पिलग माथ धक्को दय'र पूछ्यो—साची साची बता, काई बात है ?

बात जिकी भी ही, मैं साफ साफ कह न्हाखी। मा र पगा हेठ सू धरती खिसकगी। वा आमो फाड मावाज म बाली—कुळनासण हरामजादी ! थारा अ ई डोल हा काई अ ई काम करण खातर वी घूडउड य साग घूमण फिरण री छूट दी ही काई ? नाक कटवा दी रण्डार ! इसो ई नसा चढ्या हा तो आग री बात बेजाई भूडी ही।

मैं अक मिनट ई मा रो भासण कोनी सुणणो चाव ही, पण सुणणो पड रया हो।

तडाक ! अेक थप्पड। पछ अक धक्को। पछ अक लताड। मूडो काळो कर्‌या है तो प्रब धुपण रो कोनी। बठी बठी रा करमा न। पतो नी, किस पापा रो फळ भुगतणो पड रया है ।

पाप मा कोनी कर्‌या। पाप तो मैं करया हो। मन पदा ई नई हुवणो चाईजतो। पलो पाप तो ओ ई हो क छोरी हुय र भी जीवती रयी। दूजा–घर आळा रा तिरस्कार सहन कर र ई बडी हुवती गयी। तीजो—घर रो काम-काज सम्भाळ र मा री गाळ्या खावता थका ई हायर सकण्डरी पास करली। सायद बी ए ई कर लेवती। पण आग पढण ई कानी दी। हुह ! हायर सकण्डरी करली, आ ई घणी है। अठ छोरया न पढ र किसी हुण्ड्या कमावणी है। चौथो—मैं जवान हुयगी। पाचवो छट्ठा पछ म सोचणो बन्द कर दियो।

मा गयी परी।

००

लारल दिना रो अेक ग्रौर टुकडो !

जिको नई हुवणो चाईजतो बा काम हुयगो। गळत काम न लेय र समूच घर म अेक अजीब सो माहौल पदा हुयग्यो। घर मे आयोडो भूचाळ देख र मैं सोच्यो क सायद ई दुनिया मे पली दफ मै ई ओ गळत काम करया है। ई खातर पूरो घर खूनी औजारा री तलास म निकळग्यो। मैं भी खूनी औजार इस्तमाल करण खातर छटपटावण लागी। डर ता हो, पण मजबूरी ही। अपराध करया पछ आदमी मर

थोडी ई जाव । सजा रो डर हुव, पण जीवण री हूस भी तो बाकी रैव ई है । जीवण रो मोह कद छोडीज ? कुण छोड सक है ?

कमर म लटकत कलण्डर नै, जिण मे अेक टाबर मूड म आगळी घाल्या मुळक है, फाड'र फैंक नाखण री कल्पना मैं करी । केई दफ पिलग सू उठ'र भीत ताई पूगी । कलण्डर नै, जिको खील माथ लटकतो हो, केई दफ उतार्‌यो । पछ बी नै मसळ'र या टुकडा टुकडा कर'र फकण री इछा हुई । पण नी जाणे क्यू, इया करती बगत हाथ काप जाया करता । आखिर हिम्मत कर र अक दिन मैं बी कलण्डर न फाड फैंक्यो । बी रा टुकडा टुकडा कर'र बार फैंकती बगत डर सो लाग्यो ।

खून घणा बह्या । कमजारी आयगी धाप'र । चालण फिरण री सगती ई कोनी रयी । टानिक सरू हुया । छोटोडो भाई दवाया लावता । इ दफ टानिक री जिकी सीसी बो लाया हो बी री डट एक्सपायर हुयाडी ही । सीसी खाल्या पछ आ बात ध्यान म आयो । मैं बी न पाछो भेज्यो । बो दुकानदार कनै जाय र पाछा आया । दूकानदार सीसी बदळी कोनी । उग कयो—या सीसी री सील क्यू ताडी ? जे सील नइ तोडता तो मैं इ नै जरूर बदळ देवतो । पण अब तो ।

मनै लखायो क किणी म्हार गाल माथ कस र थप्पड मार्‌यो हुव । टूट्योडी सील आळी सीसी कोनी बदळीज सक तो पछ म्हारो काई हुवला ? मैं तो म्हारो । मैं ई सू आग री कल्पना कानी करणी चावू । सिसक'र तकिय मे मूडो लुकाय लेवू । रीस आव जण मुट्ठ्या भीच'र तकिया मसळण लागू ।

मैं खून सू भर्‌याडी पाटी बदळू । पतो नी, थाडा-सो-क काम कर्‌या पछ इत्ती हाफण क्यू लागू । निस्त सी हुय र पिलग माथ पड जावू । कमर री छात कानी दखू । पछ भीता कानी । की नी हिल रया है । सगळी चीजा आपरी जगा स्थिर है । पण अचाणचक हवा तेजी सू चालण लाग । कमर री खिडक्या भचभेडीज । मनै लखाव क फाड'र फैंक्योड कलण्डर रा टुकडा हवा र साग उड र कमर म आयग्या है । व टुकडा आपोआप जुड'र आजू बी कलण्डर रो रूप धार लेव । मूड म आगळी दाब्या बो टीगर मुळक रयो है ।

नइ नइ आ नी हुय सक । क्यूक मैं खुद म्हार ई हाथा सू बी कलण्डर रा टुकडा-टुकडा कर'र गळी मे बगाया हा ।

म्हारी सासा भरीज जाव । मैं तकिय मे मूडो लुकाय र आंजू सिसकण लागू ।

oooo

सुल्योड़ा

दिन ऊग्यो । पूर बास माथ तावडो फलण लाग्यो । बास रो अस्तित्व साफ दीखण लाग्यो । दोनू कानी कच्चा घर । बीच र रस्त सू रेलगाडी निकळ्या कर । रैल री पटड्या सू थोडी दूर तीन चार फुट ऊची भीत बण्याडी है । भीत पछ आउटर सिंगल है । इन्न सू आवण आळी गाडी अठ रुकै । बिना टिकट चालणिया अठ उतर जाव । टी टी भी आपरो हिसाब कर लेव ।

फत्तू भीत माथ बठ्यो बीडी पीवतो हो । गोरा केस रूखी घास दाई खिड्योडा हा । दाढी वध्योडी ही । कपडा मला कच्च हा । बा कई दिना सू न्हाया कोनी हो । बो भीत माथ बठ्यो कच्च घरा न देखतो हो । घरा र आग माचा बिछ्याडा हा । माचा माथ फाट्योडा बिछावणा हा । बा बिछावणा माथ मूत रा चगदा हा । कई घरा आग माचा ऊभा कर्याडा हा । बा र लार लुगाया न्हावती ही—पाछू कपडा पर'र । सडक र किनार लाग्योड बिजळी र थम्भ माथ एक प्लट लाग्याडी ही । बी पर लिख्याडा हो—थोडा टाबर घणो सुख घणा टाबर घणो दुख !

फत्तू न किणी हेलो मारयो । बी चिमक र देख्यो । सामन मगतू ऊभो हो । बी र लार मोडियो हो । तीनू जणा चाय पीवण री सोची । फत्तू भीत सू नीच उतरग्यो ।

बास में छोरा री हो-हा सरू हुयगी । बात-बात माथ गाळ्या । घणीसी क लुगायां सफाई करण खातर गयी परी ही । भगिया रो बास ठंडो सा क दीखण लाग्यो ।

तावडा धीर धीर चडण लाग्यो ।

फत्तू आपरी पेटी लेय र घर सू निकळ्यो । आपरी जगा पर आय र बठग्यो । कोम्पट माथ भीड वधण लागी । उण आपरी पेटी खोली । पालिस री डब्या काढी । बरस र कैमा माथ लाग्याडी घूड साफ करी । अेक मला सा क पूर काड'र बठण री जगा बुहारी । बो ग्राहका न उडीकण लाग्या ।

अेक आदमी आया । वो र जूतां र पालिस कर्या पछ बो आपरी आदत र मुजब बोल्या—क्रीम लगावू साब ?

–नई !

–क्रीम लगाया जूता काच दाई चमकला !

–कित्ता पीसा दू ?

–बीस !

बो आदमी पन्द्र पीसा फैंक'र चालतो बण्यो ।

अेक छोरी चप्पल ठीक करावण नैं आयी । बी र कनैं सू अेक छोरो निकळ्यो, आ कय'र–नूवी चप्पल खरीद लै । तू क्व ता मैं दिराय दू ।

–थारी मा नै दिराय द, बापडी डोकरी उबराणी घूमती हुवली–छोरी बोली ।

फत्तू चप्पल ठीक करतो बोल्यो–अ छोरा सफा बिगडल हुवै अबत कठई रा !

छोरी मूडो मचकोड्यो । बोली कोनी ।

बिनै साग सब्जी वेचणिया र गाडा कानी सुरफुराट हुवण लागी । अेक पुलिस आळो सगळा जणा न धमकावतो आय रया हो । जिक गाड मायली जिकी चीज चोखी लागती, उठा'र आपर थल में घाल लेवतो । कोई बी चप्पड करतो तो बो आप्या काढ र कवतो–घणी टैं टैं ना कर । सांळ री चलाण भर दू ला । कचडी रा चक्कर लगावत लगावत चपजा रा तळिया घसीज जावला !

पुलिस आळो फत्तू कनै आयो । बो गुर्रा र बोल्यो–अरे फतिया, पालिस कर ।

फत्तू बी र काळ जूता माथ जम्योडी धूड साफ करण लाग्यो । पालिस री डब्बी खोली । पुलिस आळ नस झुकाय'र नीच देख्यो । बिल्ली मार्का पालिस दख र बी रा पारो गरम हुयग्यो । उण गाळ काढी–मादर म्हार साग ई चारसोबीसी करैं चरी पालिस लगा । फतिय बीन गाळ्या काढी–मन ही मन माय । बिल्की मार्का पालिस री डब्बी ढक'र 'चरी री डब्बी काढी । पछ क्रीम लगाय'र जूता चमकाया । पुलिस आळो रवाना हुयग्यो । फूटी कोडी ई कोनी दी बापड नै । फत्तू बोल्यो–हुह ! हद हुयगी बेईमानी री ! स लुच्चा है । पुलिसियो कुत्तो – !

अेक छोरी सण्डल र पालिस करवा र गयी । मगतू बोल्यो–फतिया, तै की देख्यो ?

–काई ?

–आ छोरी स्कट र नीच चड्डी पर राखी ही ।

–चुप साळा !

–सच्ची कैवूं मजाक कोनी करूं ।

–हाऽऽ यार, बिलकुल साची है आ बात । मोडिय चासो लियो ।

–धत् साळा ! कूड बोल ! खा थारी मा री सौगंध !

मोडियो अर मगतू खीं खीं कर र हसण लाग्या ।

होटल र आग लाग्योड पोस्टर नै देख र फत्तू री आख्यां आग फागली री सूरत नाचण लागी । फागली र जोबन री याद कर र बींन झुरझुरी सी आयगी । धो सफीय साग फागली र घरा गयो हो । सफीय अर फागली र साग खावण पीवण री बाता सगळ बास म हुव । सफीय फत्तू नैं कामशास्त्र' री बाता बतायी । चौरासी आसणा रा नाव गिणाया । न्यार न्यार आसणा रा न्यारा न्यारा मजा !

फत्तू नैं लाग्या क बो मोट्यार हुयग्यो है !

००

ब तीनू चाय पी'र बार निकळ्या ।

सिञ्झ्या हुया पछ अंधारो हयाईज उतर, जाण मोमबत्ती सू मोम पिघळ ! अंधार मे डूब्योड घरा माग माचा बिछ जाव । लाग नसड्या झुकाया बीड्या फूक्या कर । मायन लुगाया किणी न सलटावती हुव । पेट भरण रो अेक धधो ओ भी है–आ लोगा कन ।

पूर बास रो सरणाटो टूट जाव । धडधडावती मालगाडी री कर्कश आवाज सुण र लोग चिमक जाव !

अेक आदमी घर सूं निकळ्या । चार पाच कुत्ता भौं भौं करण लाग्या । माचा माथ बैठ्य लागा न लाग्यो क ब सगळा रेल री पटड्या माथ सूता है । धडधडावती मालगाड्या बा न किचर'र निकळ जाव । टीगर रोव पण कोई कोनी सुण ।

फत्तू फागली र धरा जावतो हो । रस्त म मोडियो मिलग्यो । इत्त म सफीयो आवतो दिख्यो । ब दोनू जणा बच र निकळण री सोची । पण सफीय बानैं हेलो पाड्यो ! । ब ठरग्या ।

–कठ जावो हा ? सफीयैं पूछ्यो ।

–बस इनैं बिनैं घूमा हां । फत्तू बोल्यो ।

–झूठ बोल साळा ! सच्ची बता, कठै जाव है ?

–फागली कनै । मंगतू बोल्यो ।

तडाक् !

सफीय फत्तू रै थप्पड मार्‌या । बोल्यो–वीं राड कनै गयो तो मर जावैला । गरमी री बीमारी है बींर । बा रोग फ़नात्र । कदई मोको मिल्यो तो साळी र चक्क मार देवूला !

फतियै गौर सू देखयो । सफीय म इत्ता वदळाव ?

बीन लाग्यो कै सफीयो कमजोर हुयग्यो है ।

सफीयो गयो परो । वो धीर धीर चालतो हो । वी री टागा छीदी पडती ही । फत्तू सोच्यो क मव भ्रो तो गयो काम मू । बी री मानया भ्राग वो सीन भायग्यो जद सफीयो फागली न बाथा मे झाल्या बीरा बुक्का लेवतो हो ।

–हुंह ! बदमास साळो ! फत्तू बोल्यो–खुद तो धूड खावतो-खावतो बीमार हुयग्यो भ्रर बेटा भ्रव दूसरा नै उपदेस दव !

फत्तू बीडी रो टोटो फक्'र दूजी बीडी सिळगायी ।

वो बोल्यो–तू चालला ?

–नईं ! मगतू वोल्यो ।

–तो जा मर ! म तो जावूला ।

फत्तू फागली र घर कानी जावण लाग्यो ।

हा ऽ, भ्रो ईज हो फागली रो मोहल्ला । घरां सू निकळती नाळ्यां नाळ्या र पाणी सू बण्याडा कादो काद म बिलबिलावता कीडा घरा र पाखानां री बदबू भीता र कन कूडो कचरा मल रा ढिगला काद मे मूण्डो भर्‌याडा सूग्रर !

फत्तू जावतो हो । रस्त म चपली मिलगी । उण चपली नै पूछ्यो–चपा ऽऽ फागली घर है काई ?

–हां ऽऽ ।

–तू कठ जाव है ?

–दवाई लावण नै । फागली री तबीयत खराब है । कैय'र चंपली टुरगी ।

फत्तू फागली रै घरा पूग्यो ।

कुण है रे ! बूढ पूछ्यो ।

म हू फत्तियो ।

–भ्रर फत्तिया तू नियां भ्रायो ?

–सुण्यो क फागली बीमार है बी रो हाल पूछण नैं आयो हू । अब बी री तबियत किया है ?

–हाल तो भौत खराब है ।

–काई हुयो बी र ? फागली कानी इसारो कर'र पूछ्यो –। डोकरो चुप

फत्त बठ बठग्यो । थाडीक ताळ मैं सगळो भेद बी री समझ मे आयग्यो । फागली र खून गे नाळो छूट रयो हो । बीरा कपड़ा खून सू खराब हुवता हा ।

वा बोली– बापूऽऽ तू माय जा मैं कपड़ा ठीक करलू ।

फत्तू ऊभो हुयग्यो । बोल्या–अच्छ्या, अब मैं चालू ।

–आवतो जावतो रया कर र फत्तिया । डोकर कयो ।

घर सू बार निकळती बगत बीन डोकर री धासी री आवाज सुणीजी–खो खो अक्खों ।

ओफ्फो ! धासी ! मौत री सूचक धासी ! मूण्ड सू निकळतो कफ ! कफ मे खून ! खून म काळा धब्बा !

फत्तू घर सू बार आयग्यो पण उण र काना म धासी री आवाज हाल ताई गूंज ही–खो खो अक्खो !

बी नैं लाग्यो क ओ पूरो मोहल्लो धास है । ई माहल्ल र मूड सू कफ पड है । कफ मे खून है । खून मे काळा धब्बा है !

फत्तू न ई धासी आवण लागी–अक्खों अक्खो अक्खा !!

oooo

घणा कोनी चालै

दरग्रसल ग्रब तो वो इत्तो उथपाऊ लागण लागग्यो कै वी र साग पांच-सात मिन्ट गुजारण री इछा भी कोनी हुवती। जठ ताई पार पडती, मैं वी सू बचण री कोसीस करतो। रस्त मे कठैई दिख आवतो तो मैं वी सू निजर बचा र निकळण री कोसीस करतो। इण र बावजूद भी बो ग्रापरी चीलख दीठ सू म्हारो लारो करता ग्रर धींगाण ई साग हुवण खातर तडफा तोडतो। बी बगत मैं किणी जरूरी ग्रर प्राइवेट काम रो ग्रोळाव लेय र बी सू पिंड छुडावतो, कारण क बी री ग्रकारथ बाता मानसिक बलात्कार री स्थितिया पदा करण लागती।

ग्राज तो मैं खुद ग्रचूम्भ मे हू कै ई जाहिल ग्रादमी साग इत्ता दिन किंया काट लिया? किंया घटा लग वी री बेहूदी हरकता चुपचाप सहन करतो रया? किंया वी 'चाती' नैं थाग पावतो रयो?

सावळ सोचू तो याद ग्राव कै मामूली ढग सू हुयोडी मुलाकात बी री सक्रियता र कारण ई इत्ती ग्राग बधी ही!

जद बो पली दफ मिल्यो हो उण खासा विनम्र ढग सू थुन र नमस्कार कर्‌यो ग्रर मुळक री जाजम बिछाय दी। बी दिन बी री मुळक की सावणी लागी ही। पण ग्रब तो वी नै मुळकता देख र मनै झाळ ग्राव! इच्छा हुव क चप्पल खोल र बी र मूड माथै गिण र पूरी इग्यार मारू। बी रा दात कित्ता पीळा ग्रर सूगला है! दब्रताई उबको ग्राव! बी री जोडायत ग्रापर होठा माथ बी रो हेत किंया बरदास करती हुवैली!

बी सू दूजी मुलाकात सब्जीमण्डी मे हुई। उण ई हेलो पाड या।

—काई खरीद रया हो? उण म्हार कन ग्राय'र पूछ्या।

—बस ग्रो ई साग पात।

—चालो, चाय पी लेवा।

—साग पात खरीद नियो था? मैं ग्रमली वात पूछी।

—नई। ग्रबार तो इनै पग धर्‌या ई हो क ग्राप दिखग्या।

—म्हार खयाल सू ग्रापा पलां सब्जी लेवा।

—हां ऽ ऽ, ग्रो ई ठीक रैमी। उण मुळक र म्हार कानी न्यो।

बो सब्जी खरीदण लाग्यो। आलू, कान्दा टमाटर अर मटर आद तुलवाया पछ उण आपरी जेब मे हाथ घाल्यो। अेक रिपियो काढ'र दूकानदार न पूछ्यो क कित्ता पीसा हुया ? दूकानदार कयो—पूणी दो रिपिया !

—हैं ? उण पली तो सब्जी आळ कानी देख्या अर पछ म्हार कानी। सब्जी रो थलो साइकल पर लटका'र मनै कयो— ओ तो चोखो हुयो क आप मिलग्या, नई तो आज इज्जत रा टका बटीज जावता। तुलवायोडो साग पाछो 'हाखणो पडतो।

—क्यू काई हुयो ?

—अेक रिपियो तो आप री जेब म हुवला ई। अेकर दिया देखाण आपा बाद म हिसाब कर लेसा।

मैं नई चावता थकाई अेक रिपियो काढ र बी न दियो। सब्जीमण्डी सू निकळ'र म्हे सडक माथ आयग्या।

—अच्छया, चालू। मैं कयो।

—मावो चावडी रो गुटको तो ल लेवा।

मैं बी नै गौर सू देख्यो। अब मन बी पर झाळ आयी। आ हुसियारी है या नीचता ? जब मे साग खरीदण सारू ता पूरा पीसा हा कोनी अर अब चाय री मनवार कर रयो है ? सीध ढग मू आ क्यू कोनी क्व—भाई साब ! चाय पावो नी, बायडा मर रयो हू।

बी वगत मनै लाग्यो क ओ आदमी सोळ आना बेसरम है ! फीटाइ री हद हुया कर !

चाय पाया पली जिकी बाता हुई बा सू उण आ जाणकारी दी क बा कवितावा कहाणिया लिख है। उण आ भी कयी क बो अक दिन म्हार घर आय र आपरी कहाणी सुणावणी चाव।

—जरूर जरूर आपरी कहाणी जरूर सुणसा। आप वगत निकाळ र आ जाया। मैं शिष्टता र नात कयो।

—मन तो वगत ई वगत है। बस आपन घणी तकलीफ नई हुव इसा वगत बतावो। फेर म्हार कानी देख र आपरा पीळा-पट्ट दात दिखाय दिया— ही ही ही !

अर दूज दिन बो घर आ धमक्यो। मैं बी री कहाणी सुणी अर तारीफ करी। हालाकि कहाणी म खाम्या ही। पण आदमी रो सुभाव मिजाज जाण्या बिना, बिना सध पिछाण र मूड देखी बात कयोज्या कर है, बा ई मैं करी। बी वगत मनै आ काइ ठा ही क म्हारी कूडी तारीफ मू बी रा हौसला इत्ता वध जावला !

अब बी र आवण रो सिसिलो बधतो गयो। बो बिना बुलाया बगत-बबगत आ धमकतो। सामल र मूड री चिन्ता दर मे ई कोनी करता। आगलो उथप'र मर जावो भलाई बी री भा सू। कहाणी सुणाया पछ बो अेक बात जरूर पूछतो—ह हे तो किसीक लागी आपनै आ कहाणी ?

—बस, ठीक है। मै उबासी लेय'र कैवतो। मन मे रीसा बळतो बी नै गाळ्या काढतो—हुह ! गधो कठ ई रो ! हाल आ ई ठा कोनी क जे रचना आछी हुव तो पढणियो बिना पूछ्या ई तारीफ कर देव। जे थनै चुप्पी रो मतलब मालूम नई हुवै तो सुण—चुप्पी रो मतलब हुव क थारी आ रचना सफा पोची है ! बोडम है ! बोत अब काइ कव ?

—आ कहाणी च्यार पत्रिकावा सू नामजूर हुयोडी है। उण आपरी कहाणी री तारीफ खुद ई कर दी।

म्हारै मन मे आयी कँ पूछू—क्यू भायला ! हाल ई ठा कोनी पडी काइ क आ कहाणी किसीक है। हालाकि आ बात मैं खुद जाणतो हो क खाली छपणो ई किणी रचना री श्रेष्ठता री निसाणी कोनी हुया कर। पण जिकी पत्रिकावा मे बी री रचनावा छप्या करती ही, बा रो साहित्य सू की खास लेणो-देणो कोनी हो।

—आज इण न पाचवी दफ पोस्ट कर रयो हू । बो कया गयो आप कनै बीस पीसा रा टिकट हुव तो अक्र उधार देवो देखाणी आ कया पछ उण आपरा पीळा दात दिखाय र कमर म बदबू भर दी। बो फेर बोल्यो—बिया तो मैं महिन र महिन बीस रिपिया री टिकटा खरीदू पण महिन र सारल दिना मे सो पोस्टेज खूट जाव । आपनै थोडी तक्लीफ तो हुवला, पण ! मैं बी न बीस पीसा रा टिकट दिया।

पछ अेक दिन बाजार मे लिफाफो खरीदण खातर पाच पीसा माग्या। बी दिन बीस पीसा री टिकटा बी कन ही। बी नै पाच पीसा देवती बगत मनै लखायो क आपा र अठ नूवा लेखका री आर्थिक हालत खासा माडी है !

अेक दफ बो आपरी लुगाई री बीमारी री बात कय र म्हार कनै सू बीस रिपिया लेयग्यो। थोडा दिन आडा घाल र उण टीगर री बीमारी री बात कय र दस रिपिया और लिया। पाच अेकर फेर लेयग्यो।

आज साचू तो लखाव क आ ई कारणा सू बो मनै इत्तो उथपावू अर चातो लागण लाग्यो हो। बी री सक्ल सू बचण री इच्छा उपजण रो आधार आ बाता ऊपर ही हा।

या अर तारीख न आया पर तीन रिपिया आताथ र थान्ता—बिजो ता मजार म्हारा हाथ उरळा रानी पण ता म पाखन रिपिया ग्य रया हू। गानू म न जम्रा हुगा गा प र माग लगू। जाणू र म इनबार ला करा सनी। पर रा था र है।

—हा ॰ मा ता है कि। म तीन रिपिया कारी दरका देवा। ता म गान्ता क मा वगराजा पर री बात ग माड म ज रिपिया पाछा जय म नट पान नर।

उण तास रिपिया म्हार माग करया। मैं जग्ग मू वा न जव र हवान मर र नम्या माग ली पर मा म वा न गाळ काड़ा।

—माप पनीन रिपिया लिया हा मैं वा न हिमाब थान लिखावणा चाल्या। तास न्य र पान न भूर ।। आव दूण ग्यातर।

—पतीम ? या मी जिमर र बाल्या—म ै ता बटा तीस र थाग है। पण थ पाच रिपिया ग्यातर गड मोना बागमा ? पण ता इ मैं म्हारी डायरी दख लगू। थारी पात रिपिया रा बाद माजना। पाच रिपिया मू थार भूख माव थानी मर म गवपनि वणू काजा ! मग्जी माव ना म लिया।

थाडी ताळ ता म्हार चिन मुन रा डका बाजता रया। मैं वाचणा हा म था उठ र जाव परा। अ पान ना डौट म पान द लिया। डायरी दखसी बापडा ! जाणु अर म जमा कराया हा जिका ण्ड्रा करूयाड़ी साधणी !

—चाय थानी पावा काई ? उण पन मू बात सुधरणा मया।

—निणग्रा जय म है। आज ता थारा तरफ मू हुय जाव। म वी र ई डौठ रा यणण गा बानाम करता गया।

—तिणग्रा रा बाद ! महीन भर मरा जद अब गि हाय माव। मार ता था कन ताग रिपिया एकन्ड्रा हुयग्या। एकन्टा गास ता थार माय नाे चिन्न द सलटा दिया करा ! उण पन जय म घाल र नग्र मू दात कुचरणा सरू कर लिया।

जो म तो इगी भायी क साळ री बत्तीसी माथ फार'र मन् अर ! उधार लियाडा पीसा भाव ता ब एकन्ड्रा हुय जाव। सवती बगत मा थानी सापो क दरणिया भापर बजट म कटौनी कर र द रया है।

—ग्रब इत्ता काठा ना करा। कय र वो मुळकण लाग्या। म वी नै चाय पायी ग्रर हवकीम गाळ या काटी !

ग्रब म वी मू वचण री कोमीस करण लाग्या। अेर दा दफ ग्य व्यवहार सू वा न समझावण री कोसीस करी। पण उण पाडी पकडणी कानी छोडी। जद भी ग्रावता घटा तार्ई बार करता। म्हारी जोडायत तवात वी र ग्रावण सू परमान

हुवण लागती । वा वी रै गया पछ वी नै वोरिंग मशीन कहनी । कणाई वी न बम्बई आळा चाती कवती । केई दफ बा बडबडाट त्यारो करती । पण तो ई वो भाई टस सू मस कोनी हुतो । केई दफ तीनू टाबर आय'र धुम्मस करण लागता तो ई मैं वानै वरजतो कोनी । सोचतो-सायद आ सू तग हुय र ई वो उखड बळ तो चाखो । पण वो असलो चीकणो घडो हो । टीगरा री ऊधम सू वा तो कोनी उथप्यो म जरूर तग आयग्यो । मैं टीगरा न नडक'र वार काढ्या । ई पर जो बोल्यो—टाबरा पर रीस नई करणी चाईज भाई साब ! टाबर रोळा रप्पा नइ करसी तो किसा आपा करसा ? चचळता टावरा रो स्वाभाविक गुण है।

म भुसळीज'र राख हुयग्यो । बी न गाळ काढी । थार ई बालमनोविज्ञान री ऐसी कम तसी ! चचळता तो टावरा रो गुण है । ठीक है पण अरे ओ हरामी, थारी आ आदत किस मनोविज्ञान म आव है । चाती हुवणो किसो गुण है !

बी र चाती हुवण सू जाडायत इसो उथपी क जेक दिन उण मिरचा री थली कमर मे लाय र भडकावणी सरू कर दी । आक छी आक् छी ।

मैं जेब सू रुमाल काढ र आख अर नाक सू ववतो पाणी पूछयो । वो खिडकी कनै जाय र नाक सिणक'र पाछो म्हार कन आय'र वठग्यो । जोडायत खुद छीका खावती बार आगण म गयी परी !

वी नै चाय पा र रवाना करया । घर आयोड आदमी न चाय पावण म की हरज कोनी । आ तो मामूली वात है । मरू म मैं इणन चाय पाया ई करतो हा । कणाई-कणाइ बिस्कुट ई खणावतो । आ कोइ अहसान कोनी हो । वी पर दया भी कोनी ही । आ तो आज र जमान री मामूली रीत सी क है । दो घडी साग बठ र वाता करण रो बगत निकळ जाव । पण जद कोई घरा खाली चाय पीवण खातर ई आवण लाग अर चाय पी'र वाग करण रो ठेको थारो ले लव तद बी सू बचण री सोचणी ई पड । चाय पावणी सारी वार हुवणो दारा ! इणी वजह सू बी री सूरत देखताई म्हार माथ मे हळको हळको दरद हुवण लागता । जद वा कनै आय'र वठता तो दरद और वधण लागता । वो आपरी पीळी वत्तीमी खोलता तो पूरा कमरा वदवू सू भरतो लखावतो !

और तो और वो गरमी म कपड रा जूता पहर्या करतो । माजा परणा वी री आदत र खिलाफ हा । वो सगळ सहर री धूड छाण'र जद म्हार कन उग्रटतो अर आपरा जूता खोल र कनै वठता, वी वगत वदवू पसर जावती म्हार च्यारूमेर ! केई दफ जी मे आवती क म्हन न कवू—कविता कहाणी सू जरूरी न्हावणा है । वदवू अर सुगध मे फरक करणो जरूरी है ।

अेक दिन तो म शिष्टाचार री सीवा भाग ई हाली। बी न कैयो—भायला ! थारा पग बदबू मार रया है। न्हावणघर मे जाय'र पग धाले !

वो चुपचाप न्हावण घर कानी गयो परो। बी र गयां पछ म सोची क ज उण न्हावणो सरु कर दियो तो ? न्हाया पछै कपडा मांगसी। पर्‌यां पछ वा नै आपरा ई समझ लेसी। चीज लेय र भूल जावणो तो बी री आदत है !

वो पग धो र पाछो आयो अर मुळक'र आपरी जेब म हाथ घाल्यो—अेक नूवी कहाणी लिखी है। सुणला तो ठीक रसी । अर म्हार हा या ना कयां पला ई कहाणी पढणी सरू कर दी।

००

बी री आ हरक्तां सू खाली मैं ई उथप्यो हाेवू आ बात कोनी। बी सू मिलण आळो हरेक आदमी बी री सूरत देखताई बी सू बचण री कोसीस करतो। बा सू दुखी हुयोड़ा जद म्हे मिलता तो बी री गरमौजूदगी म बी री बात करता। क ओ घर घर धूड खावतो क्यू फिर ? ई न सरम लाज आव है या नई। मैं आदमी तो घणाई देख्या पण इसो निसरडो तो कोई कोनी। कै ई तर जीवण सू तो चाखा है क ओ आत्मघात कर लेव।

आ ई दिना म बी सू लारो छुडावण खातर बिना साग-पूछ री बातां करण लाग्या। वो खत री मवतो, मैं खळ री सुणतो।

–भायला भौत मुसीबत म हू।

–और आ दिना किसी कहाणी लिखी ?

–बीसक रिपिया हुव तो देवो नी। छोरो बीमार है ।

–मैं सुण्यो क थारी कवितावां आकाशवाणी सू आयी ही ।

–भगवान री सौगन्ध, छोरो बीमार है ।

–थारी कहाणी कठ छप रयी है ?

–बीस नई ता दस रो ई जुगाड़ कर दो ता म र हुसी ।

–आजकाल थे गोष्ठिया मे कोनी दिखो ।

–भायला ! वो अेकदम दीन हुय जाव।

–मैं थोडो जल्दी म हू। आपा फेर मिलसा।

–कदो घर आ जावू ।

–म टूर माथ जावण री सोच रयो हू।

–अवार की ।

–अछ्या, फेर मिलसा । कैय'र मैं साइकिल माथै चढ'र जल्दी जल्दी पडल मारण लाग्यो।

वो घर मिलण री कोसीस करतो म्हारी । जोडायत बी नै बार सू टरकावण रा गुर सीख लिया ।

–मायत है काईं ? उण पूछ्यो ।

–कोनी । जाडायत उथळा दियो ।

–किनैं गया है ?

–कैय र कोनी गया । सायद थारै ई घरां गया हुवै ।

–नइ म्हार घर काई मायलो कोनी आवै म्हारी हालत ।

–तो फेर ठा कोनी । और कठ ई गया हुवला ।

–आव जणा कय दिया कै मैं आयो हा

–ठीक है । कैय देसू ।

–जरूर कैय दिया । भूल्या ना भलो ।

–ठीक है । अर उण शिष्टाचार भूल'र भचीड देणी दरवाजो ढक लियो । म्हारै काना नैं बा वेसुरी भडाक् री आवाज सगीत दाई लखाव ।

जोडायत म्हार कनै आय र बोली—मैं बी बाती नैं बार सू ई काढ दियो है भलो ।

–असल क'र्यो । राजी हुय'र मै कैया । फेर 'हाऊ टू एस्केप फ्रॉम द फ्रण्डस्' पढण लाग्यो ।

◘◘◘◘

हुवणो नई हुवणो

घर र आग फुटपाथ ह । बी र कन नाळी वव । गळी रा दम ग्रार वरमा ताइ रा टीगर नाळी मे टट्टी जाव । दोना कानी वण्याइ फुटपाथ र बीचाळ मू काळी सडक निकळ । सामल फुटपाथ र किनार अेक मकान है । म र क्याल्मर खाली जगा है । अठ गळी रा टीगर रम दिनूग सिझ्या ।

दिन ऊगताइ मकान रो मामलो ग्रर पसवाडनो भाग सूरज री रासणी सू गरम हुवण लाग । सियाळ म टाबर टीगर इणीज भीत र सा र ऊभ र तावडो लेव । क गोळा ग्रर गिल्ली डण्डा रम ।

अेक काळी कुत्ती मकान री भीत सू चिपण री कोसीस कर रयी है । मैं वी कुत्ती न गौर सू देखू । मन लाग क वी कुत्ती रा पेट फूल्याडो है । बी र पट म सायद ऊ हू सायद नइ जरूर ई कुकरिया है ।

घर मामूली सो ई है । तीन कमरा है । अेक कमरो आया गया सारु है । बीच म आगणो है । आगणा री भाल मार पगाथिया है । अे पगोथिया ठेठ डागळ ताइ पूग । डागळ माथ अेक माळियो है । बाकी दो कमरा नीच वण्योडा है ।

जीसा आफिस जा चुक्या है । म कालेज जावण री तयारी कर रयो हू । सुधा म्हारी छोटी बैन आगणा म साडी लपेट्या ऊभी है । वा सतीश राजू विद्या पुष्पा ग्रर रेखा नै कपडा पराव है । वा रा पट्टा बाव ह । वा न इस्कूल जावणो है । मा रसोइ म बठी रोटया कर रयी ह । रसोई म धूवा हुयग्यो है । चूल्हे म जागनो लक्ड या सुळगी हुवला । सायद ।

मा अचाणचक रसोई सू बार आव । म चिमक सो जावू । मैं सोचू क अचाणचक काइ हुयग्यो । अरे ओ काइ ! मा ता आगणा म बण्योडी नाळी कनै गोठा म माथो घाल र उल्ट्या कर रयी है । आगणा उलटया री वास सू भरीज जाव । म मा र कन जाय र पूछू—काइ हुयो मा ?

—की कोनी !

–थानै अचाणक उलट्या नीकर हुवण लागगी ?

बस, इया ई जी घबगबण लागग्यो ।

–डागदर नै बुलाय'र लावू ?

–नई ।

मैं चुप हुय जावू । सुधा जिकी रया न फराज परावती ही, बाल्टी भर'र पाणी ल आव । वा उलट्या माथ पाणी न्हाख दव । पाणी र साग उलट्या बवण लाग । सुधा अेक बाल्टी पाणी पेर न्हाख ।

मैं कालज जावू परा ।

सिझ्या नै घर आय र दखू क मा माच माथ सूती है ।

जीमा अेक कानी ऊभा है । खुरसी माथ डागदरणी बठी है ।

वा स्टेथस्कोप लगाय'र मा र हिरद री धडक्णा सुण रयी है ।

थोडा साच र वा कागद र पुरज माथ बाजार री दवाया लिख देव । वा खुरसी सू उठती वगत कव आ र पट म टावर है । आ नै किणी भी तर री शारीरिक या मानसिक तक्लीफ नइ पूगणी चाईज ! जित्ता भी हुय सक आ न आराम करण दा ।

कागद रो पुरजो जिक माथ बाजार री दवाया लिख्योडी है, जीसा नै झलाय'र कव—अ दवाया आप बाजार सू खरीद लाया ।

डागदरणी जाव परी ।

माच माथ सूती मा न म दख । अब मनै ठा पड क दिनूग आळी उलट्या अेक नूव टाबर र आवण री सूचना ही । म ो धिरणा सी क हुव क मा र पेट मे ओजू टीगर पळ रया ।

◆◆

सामन आळी भीत र साग ऊभी वा कुत्ती हाल ताइ कूऽकूऽऽ कर रयी है । वा आपर पगा सू अेक घुरी खाद रयी है । थाडी ताळ लगातार रत हटाया पछ वा आपरी जीभ काट'र हाफण लाग ।

◆◆

मा माच माथ सू उठ'र पाणी री गिलास भर । पाणी सू दवाई री टिक्डी गिट । टिक्डी गिटया पछ मू डा मचकाड ।

सिझ्या हुय रयी है । बारन दमर म अस्त हुवन सूरज री रोसणी फैंल्योडी है । रोसणी रो रग पीळिय र रागी र चहर दाइ लाग है ।

सुधा रसोई म है। मा बी नै चाय बणाय र न्हादण खातर कयो है। मा बी नै आ हिदायत भी दी है क बा चाय बणाया पली दूध भी गरम कर लेव। सुधा चूल्है माथ दूध धर देव। अचाणचक बी नै याद आव क पाणी री बाल्टी भर र लावणी है। सुधा बाल्टी भरण खातर टूट्या माथ जाव परी। बठ बी नै थोडी ताळ लाग जाव। इणीज बिचाळ रसोई सू दूध बळण री बास निकळ अर आगण मे पसरती आरल कमर ताइ पूग। मा बडबडाट करण लाग— की ई परवाह कोनी। दूध उफण र बळ रयो है। सब रा सब मटरगस्ती करता फिर। मा म्हार कनै सू निकळ। मनै उपन्यास पढता देख र कव—ई नै तो उपन्यासा सू ई फुरसत कोनी। दूध बळ तो बळो भलाई! ई नै की ठा ई कोनी पड। इ र भा सू तो इण घर मे लाय लाग जाव क चोर बड जाव इ नै की फीकर कोनी! पतो नी काई पड्यो है आ उपन्यासा मे। बठ्यो आख्या किचोबो कर दिन भर!

मा बडबडाट करती रसोई मैं जाव परी। मा र रसोई मे पूगताई सुधा आव। मा बी नै टेढी मीट सू देख र कव—पाणी भरण न गयी ही क भायल्या सू बाता करण नै ?

सुधा चप रव।

—थे आराम करो चाय मैं बणा देसू। थोडी ताळ पछ सुधा कव। मा अेकर फेर खारी मीट सू सुधा न देख। बा चल्है माथ चाय खातर पाणी चढाय'र कव— आराम तो भाग में ई कोनी लिख्योडो! अठ तो दिन रात बळधा दाई पीसीजणो लिख्योडो है। आराम करणिया अठ बाळण नै रसी। बा खातर तो मा बापा रा घर बण्या है नी!

इण बगत मा रो तारा म्हारी लुगाई कानी है। म्हारी लुगाई केई महीना सू आपर पीर म है। असल म बी न बठ राखण मे म्हारो ई हाथ है। बा तो केई कागद लिख चुकी क मैं बी न लेवण खातर आय जावू या पछ बा खुद इ आय जाव—ज मैं नइ आ सकू तो। पण मैं बी न मना कर दी। मैं चावू क बा दो च्यार महीना और नीं आव तो चोखो है। कारण क बा जद अठ हुव ता मैं पढ कोनी सकू। साची बात ता आ है क बी बगत म्हारो मन पढाई म लाग ई कोनी। बस, हर बगत आ इज इच्छा रव क ऊपर माळिय म बठ र बी सू बाता करतो रवू बी न दखतो रवू पम्पोळतो रवू। पण इण घर म आ बात सम्भव कोनी। अ काम इण घर री इज्जत र खिलाफ है। इण घर मे ओ रिवाज कोनी क कोई दिन म आपरी लुगाई सू बाता कर। मा रो कवणो है क इसा काम ता अवूत आदमी कर। मा कोनी चाव क मैं अवूत बणू। पण मैं सोचू क इण म खरावी काइ है। जे आदमी आपरी लुगाई सू बात नई करसी तो पछ किण सू करसी ?

जीसा र दब्बूपण री घटनावा भी मैं म्हारी आख्या सू देख चुक्यो हू । मनै सावळ याद है क जद दादी सा जीवता हा तद जीसा मा नै हेलो तक कोनी पाडता । किणी रै सैमूडै मा नै बकारता ई कोनी । ब दादीसा र सैमूड टाबरा टीगरा नै गोदी मे ई कोनी लेवता । बा दिना जद सतीश, पुष्पा अर राजू छोटा हा, आ माय सू जे कोई ई याद कर'र जीसा रै खोळै मे बठण री कोसीस करतो तो जीसा बी नै अळगो कर देवता । मन रीस आवती । जीसा आखिर इत्ता डर क्यू है ? मैं सोचतो-- बा र खोळै मे बा रा ई टाबर-टीगर आवण न तरसता रव, पण व बा नै गोदी मे लेवण री जगा धक्को देय'र अळगो कर देव । आ सम्कारा री लोथा ढोवणिया लोगा बिचाळै मनै अमूजणी आवती । झुझळ न्यारी आवती । हाल ई बिया ई मसूस हुव ।

सुधा आेजू न्हौरो कर । पण मा राजी कोनी हुवै । मा दो तीन घटा ताई रसोई मे ई बठी रवै । रात री रोट्या भी मा ई करी है । बरतण माजती बगत मा म्हारी लुगाई नै ताना देवै ।

बगत गुजरतो जा रयो है ।

मा अब ई घर रा काम कर । आ दिना मा री तबियत घणी खराब रव है । डागदरणी साफ मना कर दियो क मा नै कोई काम नई करणो चाईज । जीसा मा खातर कमर मे अेक न्यारो माचो बिछवा दवै । मा अब बी कमर मे ई रव । बिना किणी खास काम कमर सू बार कोनी निकळ । अब मा र जल्दी ई टाबर हुवण आळो है ।

❑❑

कुत्ती आधा फुट ऊण्डी घुरी खोद ली है । ई बगत बा घुरी र बार ऊभी है । कुत्ती र कन अक कुत्तो भी ऊभो है । बठई न्दो-तीन कुत्ता ओर आ जाव । कुत्ता आपस मे लडण लागै । कुत्ती थोडी'क ताळ ताई तो डर्योडी-सी क ऊभी रवै, पण पछ बा ई भुसण लाग । कुत्ता लडता-लडता दूर जाव परा । कुत्ती घुरी म बड जाव । बी र कूकरिया हुवण लागै । अेक-दो कूकरिया जलम चुक । हाल च्यार-पाच कूकरिया ओर हुवला ।

❑❑

मा री तबियत घणी बिगडगी है । बी रो जी घबराव । दिन म कई दफै उलट्या भी कर चुकी है । सगळो डील टूटतो-सो लाग । आ दिना मा र इजेक्सन भी लागण लाग्या है।

आज दिनूगै दिनूगै ई घर में महाभारत हुय जावै । बात की कोनी हुय ता ई धग चढ जाव ।

—मा ऽ, ग्राज बोड री फीस भरणी है। सुधा कैव।

—ग्राज ई ? मा री मर्‌योडी ग्रावाज सुणीजै।

—हा ऽ ऽ। ग्रा ग्रावाज सुधा री है।

—जीसा कनै सू माग ल !

—जीसा कयो कै मा सू माग लै । सुधा गम्भीर हुय जाव।

—म्हार कनै कोनी।

—मनै फीस चाईजै !

मा भडक जाव—मैं कय दियो नीं कै म्हार कनै कोनी। थे सगळा हाथ धोय'र म्हार लार क्यू पड्‌या हो ? थोडा दिना पली सुधीर पचास रिपिया लेयग्यो हो। ग्रब तू जान खावण नै ग्रायगी। थोडा दिना पछ सतीश, पुप्पा ग्रर विद्या ई फीस मागण न ग्रा जासी। लोगा न तो ग्रापरी ग्रौलाद रो सहारो हुव, पण ग्रठ ता ग्रौलाद दिन रात छाती रा छोडा लेव ! सब जणा मनै खावण नैं जलम्या है !

—मैं तो कोनी कैयो क इत्ता पदा कर ! सुधा वा बात कग्र न्हाखी, जिकी बी नं नई कवणी चाईजती। पलो नी वी म इत्ती हिम्मत कठ सू ग्रायगी। वा हाल ताइ कया जाव ही—ग्रो तो थानं सोचणो चाईजतो। जद सावळ पाळ पोस कोनी सको तो पछ पदा क्यू मारण नैं करो ! क्यू ता थे दुख पावो ग्रर क्यू म्हानं दुखा री भट्टी मे न्हाखो ! सुख सू जीवणो है ता ग्रब ई ... ई र ग्रागै बा कवणो चा ती क पदा ना करो। पण कय कोनी सक। मा री जोरदार थप्पड़ बी र गाल माथ पड। सुधा रोवती रोवती ग्रापर कमर मे जाव परी !

मा र डुसक डुसक र रोवण री ग्रावाज कमर सू बार ग्राय रयी है।

ग्रचाणचक मा पीड सू बरडावण लागै। मा दाई नीं बुलवाय'र लावण खातर कवै। सुधा दौड र दाई नैं बुलाय लाव। दाई मा र कमर म जा परी। बा कमरै रा किंवाड दक लेवे। सुधा बार ऊभी है। मा री पीड बधती जावै। दब्योडी दब्योडी सिसक्या भी सुणीज।

कुतडी सात कूकरिया दिया है। धुरी र बार टाबर टीबर ऊभा है। बै कूकरिया न देख हैं। अेक ग्रादमी ग्रावै। वो सगळा टाबरा नै बठ सू हटा दवै। वो कवै—हट जावो हट जावो कुतडी ग्रबार ई ब्याई है। ग्रा धुरी सू निकळ'र किणी नैं खा जावली।

छोरा छोरी डर'र बठ सू सिरक जावै।

कुत्ती कूकरिया न चाट रयी है !

कमर मे टाबर र रोवण री आवाज सुणीज। ओ ओ री आवाज सुण'र सुधा सोच क बी र आई हुयो है।

—छोरी हुई है! दाई मा नैं कवै। आ सुण'र मा रोवण लागै। बारै ऊभी सुधा, जिण थोडी ताळ पली सोच्यो हो क बी र भाई हुयो है उदास हुय जावै। बी न लखाव क बा दुखा र तळाव मे डूब रयी है। बा पाणी गरम करण खातर रसोई म जाव परी। दाई हेलो पाड क गरम पाणी जल्दी सू लावो।

सुधा बाल्टी मे गरम पाणी घालै। गरम पाणी री बाल्टी भर'र कमर म लेय जाव। सुधा देख क मा री बगल में अबार'जलम्योडी छोरी सूती है। मा हाल ताइ रो रयी है। दाई मा रो पेट मसळ। मा बरडावै। दाई चिमकै। सुधा कानी देख'र कव—हाल तो अेक टाबर और हुसी।

सुधा चिमक-सी जाव। बा मन ई मन घबराट सी क मसूस कर। अेक साग दो टाबर? अर जे हूजोडी भी छोरी हुई तो? हुह! तो बा काई कर सक है। आ काई बी रै हाथ री बात तो कोनी क बा आवणिय छणा नैं रोका देव! बी नैं तो चोखी तरह मालम है क आ आवणिय छणा मे दुख र अलावा की कोनी। बी न आ भी ठा है क इण घर मे जलम लेवणिया री इच्छावा रो कोई महत्व कोनी। बी री तो आ इच्छा ई कोनी ही क बा पदा हुव। बी नैं तो ओ भी भौत बाद म, जद तरह-तरह रा कस्ट झेलणा पड्या मसूस हुयो क बी न पैदा ई नी हुवणा चाईजतो। या पछ पदा हुवता ई मर जावणो चाईजतो। बी र बिना दुनिया रो किसो काम रुकतो हा? किसी साम्भर सूनी हुवती ही?

पल पल भारी हुय जाव। थोडी ताळ पछ दाई री आवाज सुणीज—फेर छोरी हुई है।

—फेर छोरी? मा री आवाज। चढती उतरती सासा र बिचाळ। आवाज इसी, जाणै छाती माथ साप आय'र बठग्यो हुव। अर बाको फाटयो रो फाट्या रयग्यो हुव।

—फेर छोरी। सुण'र सुधा चिमक। जाण भौत बुरी खबर सुणली हुव। किणी र मरण रो समचार!

सगळ घर मे मातम छा जावै। मा र कमर सू रोवण री आवाज आ रैयी है। जांसा आपर कमर म माच माथै निम्त सा हुया पड्या हैं—जाण किणी बा री पीच्या अर मगरा मे लाठ्या मारी हुवै। बै बडबडावै—हरामजादी कुतडी। अेक दो गाळ्या और सुणीज।

घर रो वातावरण देख'र लागै कै जाणै काई मरग्यो हुवै। सगळां रै चहरां माथै मौत रो सो सोग पसर्योडो है। मा ग्रापर भाग न कोसती रोया जावै है। ग्रर जीसा मा नै गाळ्यां काढ्या जा रया है। लगोतार !

ग्रठै म्हे नव भाई बन हुयग्या हा—मैं, सुधा, सतीश, विद्या, पुष्पा, राजू, रेखा ग्रर ग्रबार जलम्योडी दो छोरया।

बो दिन दिनूगै जीसा धापर कानी जीमै। सुधा भी ग्राधी भूखी उठ। छाटोडा टाबर-टीगर धाप'र रोटी खावै। ग्रो रिवाज कानी जाण क छोरी जलम्यां पछ रोटी नइ खावणी चाईज रोवणी-सी सूरत बणाय लेवणी चाईज जाणै कोई मरग्यो हुव !

दिन बीत जाव। रात र अधार सागै उदासी भी गहरी हुय जावै।

ग्रागल दिन भोर मे—

तावडो फल रयो है। घर र सामन ग्राळो चोक तावडै सू भरीजग्या है। कुत्ती री घुरी साफ दीख है। बा ग्रापर कूकरिया नै चुंघा रयी है। बा ग्रापरी जीभ सू कूकरिया न चाट भी रयी है। पण मा ?

मा ग्रापर कमर मे माच माथ सूती हाल ताइ रो रयी है।

००००

गळी जिसी गळी

गळी जिसी गळी । लोगां जिसा लोग । म्रादता जिसी म्रादता । बासती पडी हुव तो माथै म्रानी घास हाखणी । सावळ बळै तो लोगा रो जी सो'रो हुवै मर किणी रो जी सो'रो म्रापा सूं देखीजै कोनी । इण खातर धूवो करणो म्रापा रो धरम । धूवै सूं धासी म्रावै । म्राख्या मे पाणी म्रावै । बळत लागै । गळै मे खरास लगावै । म्रो सो' की देख'र म्रापा नै मजो म्रावै ।

गाव गळी मे अेकाध रडवो तो हुया ई करै । इण गळी म ई अेक रडवो । लारलै दिना लुगाई मरगी । दो महीना नीठ हुया । मूडाग सीयाळो म्रावतो देख'र इणर मन मे लुगाई लावण रो कोड जाग्यो । मिनख रै मन मे जाग्या ई करै । म्रापा रै म्रठै फगत लुगाई पाछी नी परणीज सक । मिनख नै तो खास हक मिल्योडा है । बो तो पैली लुगाई र दाग माथ ई दूजी लुगाई ला सक । पण म्रो थोडो सरमदार । दो महीना खटाव कर लियो ।

इण म्रादमी रो नाव जगनाथ । गळी म्राळा जग्गूडो कव । म्राजकालै नूवी लुगाई खातर उण रै ल ळा पड । मर पछ लोग ई बात सू कीकर टळै ? क्यूकै गळी जिसी गळी । लोगा जिसा लोग । म्रादता जिसी म्रादता । बासती पड़ी हुवै तो म्रालो घास ता हाखणी पडै ।

—तै सुण्यो ?

—काई ?

—जगन्नाथ नूवी लुगाई लावलो ।

—नी रे !

—नी रे क्यां री सोळै म्राना खरी बात !

—मानणी म तो कोनी म्रावै ।

—क्यू, कोई नूवादी बात है काई ?

—नूवादी तो कोनी, पण ।

—पण पछ क्यां री ?

—सावत्री नै मरी न हाल दो महीना ई कोनी हुया ।

—तो काइ हुयो ?

—बाट म्रोपती कोनी लाग ।

—म्रोपती बेम्रोपती कुण देखो, म्रागल न लुगाई री जरूरत, ब्याव तो करलो ई ।

—तो ई की तो मिनखपणो ई हुव ? हाल तो सावत्री री राख ई कोनी ठरी ।

—म्रब परणीज्या सावळ ठरला ! मू डागे सीयाळो । सीयाळो सावत्री री राख म्राळी गरमास सू कोनी कटै ।

—इसो पछ काइ सीयाळा ? की तो उमर कानी ई देखणो चाईज ।

—पैंतीस बरसा म जूण पूरी कोनी हुव ।

—वीस बरसा रो सागो दो ई महीना मे गयो गत्ता सू !

—म्हैं ई किसी फालतू बाता म म्रळूझग्यो । खास बात तो बतायी ई कोनी तै ?

—तू पूछी ई कद ही ?

—ल, म्रब पूछ लू ।

—पूछ म्रवार बतावू ।

—ब्याव कठ पक्को हुया ?

—घूडजी री पोती साग । गिरधारी री बटी है नी भायला ? ।

—सतूडी ?

—हा ऽ बा सतूडी ।

—बापडी बिना मा री छोरी !

—हा ऽ बापडी बिना मा री छोरी !

—पण भायला, म्हैं सोचू क उण री मा जीवती हुवती तो ई म्रो सागो साग हुवतो ।

—नी रे ! मा रा जीव दूजो हुव ।

—बाप कुण सो कसाई हुव ?

—कसाई तो कोनी हुव पण ।

—पण पछ क्यारी । ब्याव मा हुया कोनी सज । अँढो तो पीसा स सज लाडी !

—म्रर पीसो म्रा कन कोनी ।

—इणी खातर तो कवू । मा जीवती हुवती तो ई म्रो सागो साग हुवतो ।

—पण इण जगूड री म्रक्कल माथ भाठा किया पड्या ?

—क्यू , भाठा पडण री काइ बात ?

–क्यू किणी कवारी छोरी रो जमारो बिगाड ?

–ब्याव हुयां आग ई किणी रो जमारो बिगड्यो हुवला ?

–बा बापडी चवद बरसा री नीठ, अर ओ पैंतीसा पार।

–मरद री उमर कोनी देखीज।

–अबार नइ देखो तो ना दखो, पण दस बरसां पछ तो उमर मर्त्तै ई निग आ जासी। पछ उण बगत ?

–इण सू तो चोखो हो किणी विधवा नैं नात लेय आवतो।

–हां ऽ, थारो कैवणो है तो ठीक, पण ।

–विधवा नै गळ कुण बाध ?

–जीम्योडी थाळी मे कुण जीम ?

–खोदा जूता कुण पर ?

–अैठ्योड कप मे कुण पीव ?

–अर बोई फेरू मू ड आग अठ्योडो ? ठा नई हुवैं तो कोई बात कोनी। ओाट्या दीखती माखी किया गिटीजै ?

–आ बात कोनी। ओ गयो तो हो नात करण नै। बा है नी राधा मास्टरणी पण उण ना कर दी।

–गली बळ दीखै रांड !

–बी तो भोगना फोडणा हा के दोनो सारू ई सांवळ रैवतो !

–दोना रा टापरा पाछा वध जावता।

–पण म्हारी समझ मे कानी आयी क बा नटी क्यू ?

–बा कैयो बताव क जग्गूड र टाबर घणा है।

–घणा पछ कुण सा सौ पचास है। पाच तो टाबर है।

–पाच टीगर थोडा कोनी हुव ?

–तो कुण सा घणा हुवैं ?

–आज र जमानै घणा ई है !

–हां ऽ भाईडा ! आजकालै तो दो-तीन सू बत्ता टींगर कानी पोसावै

–इणी खातर वा तयार कोनी हुई हुवला ?

–म्हैं कुणसो कूड बोलू ?

–अरे, आ तो बता उण मास्टरणी र कित्तीक रेजगी है।

–उण र रेजगी खिडी ई कोनी !

–भगवान भलो करी !

–पण बीन अब रेजगी चाईज।

–नी रे ।

–मा री सौगन, बीं नै चाईज !

–तो पछ जगूड न नटी क्यू ?

–जगूड र टाबर कोनी हो सक !

–हा ऽ रे, इण तो लारल बरस नसबन्दी करवाली ही नीं

–साची कथ ?

–तू कुणस गाव मे वस ? सगळै मुलक नै ठा है !

–जणा तो ओ सरासर जुलम है।

–काइ जुलम ?

–जगूड रो सतूडी लावणो।

–क्यू ?

–सतूडी न टाबर चाईजला अर ओ नाजोगो है !

–आगली र टाबरा नै ई आपरा समझ र परोट लेसी।

–हा भायला ! टाबर है तो छोटा ई। हिल जासी। बा न मा मिल जासी अर जगूड नै लाडी।

–आगली रा भलाई किताई हुवो। खुद री कूख रा टाबर तो खुद रा ई हुव।

–अब नरक नई भुगत्यो सही।

–नरक किया ? लुगाई खातर मा बणणो लाजमी।

–हा ऽ मा हुवणो तो लाजमी।

–बाझडी रा तो दरसण ई खोटा !

–दरसण ? अरे बाझडी रो तो गळी म वासो ई खोटो !

–आपा क्यू दूबळा हुवा ? आपा नै काइ ?

–गळी म गळत काम हुव अर आपा बोला रवा आ कठ रो मिनखपणो ?

–बात तो थारी ई ठीक है !

–पुलिस म रिपोट करया ओ ब्याव रक सक।

–छोरी नाबालिग है मा-बापरी है।

–छोरी र माम न कवा तो किसाक रव ?

–हा ऽ बो है तो चालतो पुरजो। अ याव राब सक।

–आवो, आपा उण र माम कन चाला !

थळी रा लोग । लोगा रा मूंडा । मूंडा मे जीभा । जीभा मे जहर । बीनणी रो मामो । माम रा कान । कान काचा । जहर भर्‌याडी जीभा । काचा कान । घुमावदार बाता मे सवाल ई सवाल । सवाला रा उथळा । उथळा पछै फेर सवाल । फेर उथळा । फेर सवाल । अब सोचा तो आख्या आग अंधारो ई अंधारो ! म्हैं आ जुलम नीं हुवण दूं ! अंग चिरळाटी ! पगा मे बीजळी । डील मे आंधी । आख्या मे लाय । मूंडै मे गाळ्‌या रा बोफणिया आठा ।

—सन्तूडी अो सन्तूडी !

—कुण है कुण ?

—म्हैं थारो मामो । तू माय काई करै ?

—बैठी हू ।

—थारो बाप कठै ?

—जीसा हेठै है ।

—ऊपर हेलो पाड उण कमीण नै ।

—थे अठै राड करण नै आया हो काइ ?

—म्हारै सू फालतू रा जीभाटा ना कर । हेलो पाड उण हरामी नै ।

—जीसा, अो जीसा !

—अरे, थे अबार किया आया ?

—था सू पानो पड्‌यो जणा !

—काइ बात है ?

—छोरी रा भाग क्यू फोडो ! जाणता थका ई खाड मे क्यू न्हाखो ?

—हाथ तो पीळा करणा ई पडै !

पण थे तो काळा करण री तेवडी हो ।

—थे आवळ-बावळ ना बोलो ।

—काई कर लेसो म्हारो ? थी नव री तरह करणी हुवै तो कर दिखावो ।

—म्हैं थया री नव री तरह करू । गरीब-गुजारा करू म्हारा ।

—गरीब-गुजारो करो पर भलाई म्हार भाव एम ! म्है ओ ब्याव कानी हुयण दू ।

—ब्याव तो हुवला ।

—म्हारी ल्हास माथै ई हुवला ।

—आ थांरी ज्यादती है ।

—म्हैं म्हारी भाणकी रो जीवण नरक कोनी हुयण धाबू ।

—घर बसण दो-क नी । हाथ जोड़ू थान ।

—म्हैं थानें एक बात कय दी नी, श्रो ब्याव कोनी हुवण दू ।

—धीज सू सोचो !

—सोच लियो । दूजवर नै कोनी देवणी ।

—तो पछ ठीक है । इत्तो ई गुमज है तो दूजो वर सोध लावो । म्हनैं तो इणी साव ब्याव करणो है । तेस हळग्गे चढ्योडी म्हारी छोरी कुंवारी कोनी रव । भ्रा बात कान खोल'र सुणलो । समझ्या !

—इत्ता बरस घर मे खटायो तो भ्रब कुण मो दो च्यार महीनां भ्रोर कोनी खटावै ?

—नी, भ्रब च्यार दिन ई कोनी खटाव । काल रै साव ब्याव हुवला ।

—भ्राज म्हारी बन हुवती तो ?

—अैडो बाता सू कोनी सज समझ्या ! थान भाणजी री इत्ती ई चिन्ता हुव तो काल ताइ दूजो बर सोध लाया । नीतर श्र हाथ इणी साव पीळा हुवला । म्हन दो छोर्‌या श्रोर परणावणी है हाल । श्राप भ्रठ सू पधारो ।

—जावू हू, पण याद राख्या, श्रो ब्याव तो म्हैं मरया ई कोनी हुवण देवूला !

□□

घोज दाब र पाछा वावडिया केई जणा । बा कनै अेकाअेक खबर । भ्राख दीठ गवाह । जिको की नी हुयो, वो तकात जाण ! अ बता सक क भ्राग काई हुवला । दूजा रो मलो चावणिया भ्राय पूग्या ।

—थारो साळो भ्राण गयो है ।

—था कणा देख्या ?

—भ्रबार मिल्यो हो म्हनै ।

—काई कव हो ?

—कवतो क रिपोट लिखा'र भ्रायो हू ।

—काइ लिखवायो ?

—क श्रो ब्याव जोरामरदी है । छोरी भ्रग ई तयार कोनी ।

—कूडा रो श्रीपूत कठ ई रो !

—भ्रा थारी लिखवायी क छोरी बारह बरसा री भ्रर बींद चाळीस रो ।

—इसा कोढिया न राम ई कोनी मार !

—म्है चालू । थे थोडा सावचेत रया । भ्रर हा ऽ, भ्रापणी बायली नै समझा दिया क कोई पूछताछ सारू भ्राव तो खुद न सोळ बरसा री बताव । कैव क ब्याव न राजी हू । किणी भात री जोरामरदी कोनी । समझ्या ! बिंया तो पुलिस मे भ्रापारो

सैंध पिछाण है । जरूरत पड़्यां की न की उपाय कराला ई । पण राम कर जरूरत क्यू पड ? थाण अर अस्पताळ रा तो दरसण ई खोटा !

–थारो कैवणो वाजिब है !

–थे बायलो नै सावळ समझा दिया, भलो ! भ्रा नीं हुव कै आपा तो उण र भल नै करां अर बा खुद ई नट परी'र आंपा नै टट मे पजाय देवै ।

–भ्रा ई कद ई हुव ?

–बळती बाज भाई । सावचेती राखण मे काइ हरज ?

–भ्रा बात तो है ई । म्है अबार ई उण नै समझाय देस्यू ।

–ठीक है । म्हैं चालू । सावचेत रया ।

–ठीक है सा, भगवान भलो कर थारो !

गळी मे मामो । माम सागै पुलिस । पुलिस पूगताई घर मै रोवा कूको । गाळ्या । करमा रो रोवणो । भगवान नैं अरदास परसाद । देवी देवतावां रा बोलवा ।

ar

गळी मे खळबळ । केई उणियारा आप आपरा घरा आंग । केई आगळा सू गळी मे देख । केई घरा सू बार । केई फुटपाथ माथ । अेक नै देख'र दूजो आय । दूज नै देख'र तीजो । तीज नै देख'र चोथो ।

–अब ठा पडसी भाईजी न ।

–कोई चोरी करी काइ आगल, जिको ठा पडसी ।

–अ फेरा तो राजी बाजी रा !

–जे छोरी नटगी तो ?

–छोरी नै जीवणो कोनी काइ ?

–भ्रा बात तो बेजा ।

–भ्रो चाळीस रो, छोरी चवद री ।

–पतीस मे तो गोळ ई कोनी ।

–रामूड सू कित्तोक बडो है ?

–अेड-गड ई है ।

–रामूडा तो तीस रो है !

–जणा भ्रो पतीस रा कठ सू हुयग्या !

–तो ई भायला, पाच टाबरा रो बाप तो है ई !

—टावर तो पाच काइ सात हुय जाव इण उमर ताइ। ग्रापण मठ तो ऊगतां न ई परणाय देव !

—पण तो ई छोरी तो छोटी, भ्रा तो मानणी पड़सी।

—थारो माथो छोटी ! ग्रठार सू ऊपर बळ !

—सुणी है, डागदरी जाच हुवला ?

—जाच डागदर कर क डागदरणी ?

—डागदरणी ई करती हुवला।

—डागदर कर तो भ्रा किसो डरण ग्राळी है !

—दोलड हाडा री है।

—पड़्योडी-ग्रोढ्योडी हुव तो दो टाबरा री मा लाग।

—लागो भलाई। मा हुवण रा तो सपना ई लेसी।

—घणो कोड हुसो तो पाडोस्या नै वकार लेसी।

—हा ऽ, पाडोसी किसा मरग्या ?

—ही ही-ही !

—हैं ह हे !

—पुन रो ग्रो काम करण नै ता म्हैं ई तयार हू।

—म्हार थका ई ?

—तू म्हार सू न्यारो कद ? तू पली, म्हैं पछ।

—जीवतो रह तू !

—ग्ररे, तू काई सुण ? जा देख र तो ग्रा, बा र घरा काइ साग है ?

—ग्रबार जावू।

—गिरधारी रो मन किया मानग्यो दूजबर नै बेटी देवण सारू।

—ग्राग भूवाजी भ ी काइ कर बापडा !

—म्हे ता सुणी क बो दा हजार सामा लिया है।

—ग्रो तो बटी न वचणो हुग्यो।

—इया ई तो घरती रो बोझ बध। बाप हुय र बेटी नै बेच !

—बाप क्या रो कसाई है !

—हाल तो दो छारया ग्रौर बठी है।

—सुण्यो क वडोडी ई पाछी घरा ग्रायगी।

—सासर ग्राळा काढ दी काइ ?

—छोर छोड दी।

–छोरी र टाबर-टीगर हैं'क नी ?

–अब कठ ? अेक छोरो हुयो, जिको चालतो रयो !

–ऊपर आळै री मरजी !

–मौत माथ मिनख रो काई जोर ?

–थन की ठा, क्यू छोडी ?

–छोरी रो चाल चलण की ।

–गिरधारी रा टीगर इसा कोनी ।

–अठ काई, टाळ सही ! म्हे तो सुणी जिसी कवू ।

–लुगाई रो चिरत अर मिनख रो भाग तो भगवान ई कोनी जाण, तू-म्हैं किस खेत री मूळी !

–किण सू लाग्योडी ही ?

–काक सू !

–लिच्छूड साग ?

–हा ऽऽ !

–लिच्छूडो तो इसो ई हळियार । डाकण ई अेक घर टाळै, पण बो नी !

–पोत चवड कीकर आया ?

–अ पाप ढक्या कित्ता'क दिन रव ?

–लो, सभूडो आयग्यो ।

–काइ खबर लायो रे ?

–थाणदार छोरी सू वात करग्यो ।

–अच्छा !

–थ्यार पोष दडोड चेप्या हुवला ?

–बो दावळ देय'र ई जीव काढ देव !

–सतूडी तो लैंगो भर दियो हुवैला ?

–ही-हीं ही !

–दांत क्यू काढो ? लैंगो धोवण न थानैं ई बुलाया है । पण पली पूरी वात ता सुणो ।

–तू काई हुसियारी छाट । वेगो-सी-क कैव वळ नी !

–थाणदार पूछ्यो—माडाणी परणीज कै मरजी सू । सत्तूडी कयो—मरजी सू । किणी री दवेलदारी नी !

–आ बात कयी ?

—हां ऽऽ, बिलकुल आईज बात क्यी ।
—छोरी क्या री दादी है, दादी !
—आजकाल री छोरयां दादी हुय र ई जलमैं !
—छोरी निकळी हिम्मतवाळी !
—जग्गू मास्टर न फैंफ्यां अणा देसी ।
—आ लखणा तो ओ ई लाग ।
—जणां तो फेरा आज ई हुवला ?
—आज नई तो काल, लाडो लाडी नै ले जावला ई !
—माम फालतू ई मायाकूटी करी ।
—भूंड री ठीकरी आवणो हुव जणा इयां ई माया कर ।
—अेक्र तो विघन घाल ई दियो ।
—अब बी रो ई माजनो हळको हुयो ।
—कोसीस करी आगल । पार नी पडी तो नी सरी !
—नीच है साळा !
—ओर नी तो कांई ? इत्तो भागा दौडी करी पर ब्याव ई कोनी ढक्यो ?
—बी बगत तो इत्ती हैन-तान कर हो कांई खागो कर लियो ?
—छाछ दाई मूडो लियां कठई पड्यो हुवला !
—गुटको लेय र आपरी लुगाई र घाघर कन बठो रोवतो हुवला ।
—अब च्यार दिनां ताई ता घर सू बार मूडो काढ कानी ।
—म्हन मिलण ॰ माजनो भाडूला !
—दो धाबा घूड म्हार नाव री ई न्हाख्य !
—ो म्हार नाव री ना भूली ।
—दो म्हारी ई याद राखजे !

००

जगन्नाथ रो घर । घर मे स तूडी । टाबर साच—मा मिलगी । जगन्नाथ सोच—अब सीयाळो सारा ई निसरसा !

गळी मे न्यारा-न्यारा लोग । न्यारा न्यारा बिचार । कोइ कवं—बापड रा टापरो बधग्यो । कोई कव—टींगर बापडा नरकवाडो भुगतला । माई मा टाबरा नै कद परोट्या !

इतिहास देख लो !

गळी रा लाग। लोगा र मन म इतिहास जाणण री हूस। हूस सू उपज्योडो हेत। घर हेत र खेत मे जगनाथ रा टाबर।

—ग्ररे मनूडा।
—काई ?
—ग्रठो ग्राव कनी।
—ल, चोक्लेट खा।
—नूवी मा थारो लाड राख क नी ?
—राख।
—थानै फलका लूखा देव क चोपड्योडा ?
—चोपड्योडा।
—साची कव है नी ?
—म्हैं कूड क्यू बोलसू ?
—थानै कूट तो कोनी ?
—ऊऽहूऽ।
—कदी तो हुवला ?
—नई तो !
—मनूडा ?
—काई
—तू कठ सोवै रे ?
—म्हार भाई-बना कनै !
—मा कनै कोनी सोव काई रे ?
—ऊहूऽऽ !
—थारा कपडा कुण धोवै ?
—नूवी मा !
—कूड क्यू बोल रे ! काल म्हैं थनै देख्यो हो डागळ सू। तू कपडा धोव हो नी रे" ।

—मा नै ताव चढ्योडो हो।
—ताव चढ्योडो हो ?
—हा ।
—सुण्यो, सन्तूडी नै ताव चढण लाग्यो है।
—हों-ही ही !
—हैं-ह ह !

–तू जा लाडी, रम। भा ल, अेक चोक्लेट भळै ?

–देख सन्तूडी रा मजा। ताव रो मिस कर'र टीगरा कन सू गपडा धोवाव!

–थोडा दिन ठर लाडी। राट्यां करवासी अर भाडा मजवासी।

–जग्गूडो सन्तूडी रो लाड तो खासो राख।

–दिनूग टूटी माथ पाणी भर हो।

–ही ही ही!

–हे हें हे!

–सुणो भाई याचणियां!

●●

सगळ ही सावत्री अर सगळ ही ही-ही ह ह! कठ जावै अर काई कर? बापडी जीव क मर? इण नै परणीज ता धयो उणन परणीज तो धयो। अर नी परणीज तो ई धयो। क्यू क ठोड ठोड, गळी जिसी गळी। बा-म्हा जिसा लोग। आदता जिसी आदता। बासती पडी हुव तो माथ आली घास तो न्हाखणी ई पड!

●●●●

अरे ! इत्तो दुख !

—लालजी मरग्या !

आ सुणताई बा सगळा रो जीव आवळ बावळ हुयग्यो। अेकर तो बा र मानण मे ई कोनी आयी। आज दिनूग ई तो बा रो भाई छुट्टी बधावण खातर अरजी देयग्यो हो। पण सजोग री बात। अवार खबर लावणिया पण वो ई !

लालजी लारल केई बरसा सू माँदा चालै हा। सरू मे तो बस इत्तो ई हो क बगत-बेबगत माथो दूखण लाग जाया करतो हो। उण बगत वेबगत र दरद री परवाह वा कदई कोनी करी। पण ओ सिलसिलो जद केई महीना ताइ चालतो रयो तो सेवट बा नै हार'र पी बी एम अस्पताळ जाय'र डागदर नै दिखावणो ई पड्यो। डागदर कयो क 'ब्रेन ट्यूमर' है ! बा नै अस्पताळ म भरती हुवण री सलाह दीवी। पण आ बात बा र घर आळा र जची कोनी। अस्पताळ अर कचेडी सू राम बचाव ! ब खुद आ ई मानता। डागदर र कथ रो की असर कोनी हुयो। भरती हुवण री बात टाळ दी। पण अब दो-तीन महीना जखता नी जखता तक्लीफ घणी बधगी। अब दाब जण ई दरद हुवण लागतो। दरद कई दफ तो इत्तो हुवतो क ब बोवाड सा करण लागता। या पछ कणाई कणाई माथो पकड'र सूना-सा हुय'र मांच माथ पड जावता। इणी बिचाळ ब झाडा जतर करवाय'र हारग्या। टूए टोटका सू रत्ती भर ई फायदो कोनी हुयो !

लालजी नै अस्पताळ म भरती हुवणो पड्यो। जाच पडताल पछ इलाज सरू हुयो। ब अढाई-तीन महीना ताइ भरती रया। इणी बिच्च वा न खुद नै फायदो लखायो। रोग कटतो देख'र डागदरा नै खुसी ही पण अज ताइ ट्यूमर जडा मूळ सू कटी कोनी ! डागदर सलाह दीवी क वा नै दिल्ली जाय'र आप्रसन करवाणा पडसी। बिना आप्रेसन बचण री गुजाइस दर ई कोनी !

लालजी र घर आळा साम बेजा अबखायी आयगी। अब कर तो काइ कर ? दिल्ली जावण री सरधा कोनी अर इलाज नी करवाया सासा रा ठिकाणा कोनी ! किणी बगत सास रो पखेरू देही रै पिंजरै सू उड सक—फुरर ! अर आ हाणी अणहोणी हुया घर उजड। टाबर-टीगर रळै ! रामजी री दया सू घर भर्यो पूरो। तीन छोर्या, च्यार छारा। अेक छोरी परणायोडी, दो कुवारी, परणावण साव, बडोडो

छोरो परण्योडा। घर सू बेटी सासर गयी ता वेट री बहू धरा श्रा रगी। बाबा मर्या श्रर गीगली जाई रया तीन रा तीन। छोरो काम र नाव सडका माय जूता रा तळा घसतो फिरतो। बाकी तीनू हाल ताइ पढ हा।

डागदरा लालजी न श्रसपताळ सू छुट्टी देय दी। वा री राय मुजब दिल्ली जावणो जरूरी हो पण घर री हालत देखता श्रा पार पडती निग श्रायी कोनी। सेवट घर मे ई माचो झाल लियो। श्रव साथ काम करणिया मनै अ समाचार श्रावण लाग्या क लालजी न चेतो की कमती ई रव। य चेता माव तो की न-की बडबडावता रव। क बारो खावणा पीवणो दिनोदिन कमती हुय रयो है। क वा न खायो पीया जर ई कोनी। क श्रवै डील मे सून सी वापरण लागी है। क घर श्राळा चमच सू दूध दळिया देव। फेर दिनोदिन हालत विगडण रा समाचार मिलता रया। साथी वेली उठता बठता या बाबत बात कर लिया करता। सगळा इणी कोसीस मे रवता क दफ्तर सम्बन्धी वा रा काई काम नही श्रटक। भाग-दौड कर र वा रो काम पली कराय देवता। पण श्रव नी तो दौडणो रया श्रर नी इण री जरूरत। सो खेल ई खतम हुयग्यो। श्रयार श्रवार वा रा भाई कयग्यो—लालजी चालता रया।

□□

सगळा जणा स्टाफ रूम म पूग्या। इचाज साव न ई इण बात री खबर मिलगी।

–श्रव काइ कर्‌यो जाव। हैडमास्टर साव ता हाल श्राया कोनी।

–श्रा हैडमास्टर रो बच्चो कदई वगतसर श्राव वळ ई कोनी।

–क्यू भाव, लार खूटो है। रसूल धोबो करण लाग्यो—था म्हा दाइ चोढू मोढू थाडी है।

–कानून कायन्त सगळा खातर बरोबर। इचाज सामैं देख र सूरजमल कयो। बात श्राग गाळ या री गळी म बड, इण सू पली ई चपडासी नत्थू श्राय'र खबर दीवी—हैडमास्टर साब श्रायग्या।

– या रा करया मोहन बोल्यो।

–श्रावो श्रापा ई दरसण करला। श्रा कय'र नरेन्द्र स्टाफ रूम सू बार श्रायग्या। बाकी लोग ई साग।

हैडमास्टर न ई लालजी र रामसरण हुवण रा समचार मिलग्या हा। सगळा र भेळा हुवता ई कयो—छोरा नै मदान मे भेळा कर'र सोग सभा कर र बा नै तो छोड दो। पछ श्रापा नार चालसा।

सोग-सभा कर'र छोरा नै छोड्या पछ मास्टर लोग बाग म जाय'र ऊभग्या !

—नारायणजी ! हैडमास्टर हेलो पाड्यो। नारायण बा कानी जावण लाग्यो इत्त म म खुद ई बाग कानी आयग्या। पूछ्यो—दाग कित्तीक बजी ताइ हुवला ?

—बारह अेक तो बज ई जासी।

—वा र भाई सू पूछ्यो काई ?

—अदाज सू ई कवू। आ कामा म सगा परसगी भेळा हुव इत्त की देर तो लाग ई। फेर सामान सूमूत त्यारा लावणो हुव।

—किणी नै भेज'र मालम करवावा काइ ?

—जिया ठीक समझो।

—थे जाय आवो ।

—हा, देख'र आवू ।

—और कुण जाणं ?

—नत्थू नै भेज दो।

हैडमास्टर कमर माय गयो। पछ घटी बाजी। नत्थू माय गयो। बार आयो। साइकल लेय'र रवाना हुवतो दीस्यो।

नारायण बाग कानी आयो तो मजेस पूछ्यो—काइ कव हो फददूमल।

—नार चालण री बात कर हो।

—इण तुरकड रो बठ काइ काम ! भगवान आपरी जनऊ सम्भाळता क्यो।

—म्हार तो आपर कम जच। गिरधारी री आवाज।

—कट्टा पट्टा स ई नार चालसी काइ ? मोहन कवण लाग्या—बामणा रै नार मे आ बकरा खावणिया री काइ जरूरत ? अर इणी बिचाळ बी न हाजत हुयगी। कान र जनेऊ रो ओटो दय र पाखान कानी गयो।

—पण म्हे कैवू हरज काइ है ? कलास बोल्या—आपा सारा काम करणियो भाई मर्यो है। अ बाता साव ओछी लाग।

—और नई तो काई ! आदमी आदमी सब बरोबर ! कट्टा या बामण री काई बान ?

—आपो आप रा सस्कार। कय'र नारायण बात बदळण री कोसीस करी। बो जाणतो हो कै जे बहस छिडगी तो पछ गयी घटा भर री। भलतू री खपत। छेवड हुव—तू-तू म्हैं म्हैं !

—चाय पी'र ग्रावा । ग्रावो नारायणजी !

—हा ऽऽ । व टुरग्या ।

साढी दस पूणी इग्यारा हुयगी ।

ग्रापोग्राप री साइकला सम्भाळण लाग्या । केई जणा ग्रापरी साइकल लेय'र बार फुटपाथ कन ऊभग्या । च्यार पाच जणा हैडमास्टर र कमर माय हा । ब वा न उडीकण लाग्या ।

—गाडी मे हवा कम दीख । सम्पत ग्रापरी साइकल रो लारलो टायर अगूठ सू दबाय'र देखता कयो ।

—हवा तो म्हन ई भरणी है । दिनुग ग्रायो जणा ई कम बळती ही ! कय'र सोहन बी र साग सामली दुकान कानी टुरग्यो ।

—सवनै चालणो जरूरी है काई ? किसन पूछ'र ग्रापरी गुद्दी कुचरण लाग्यो । बी र सामै ऊभा मास्टर बारी बारी सू बी न देखण लाग्या ।

—गोरमेट रो इसो कोई नियम कोनी क जावणो जरूरी हुव । नारायण थप्पड मार' उथळो दियो ।

घडी खड सार' उठ मून रा तीखा खीला खिडग्या । कोई सामली भीत माथ चेप्योडा फिल्मी पास्टर देखण लाग्यो तो कोई ग्राभ कानी ।

ग्रेक दो जणा उबासी खायी । ग्रेक जण खखार थूक्यो ।

—गिरधारी ग्रर गणेस उठ सू खिसक'र ग्रेकानी गया । गिरधारी पूछ्यो—फिलम किसी लाग्योडी है ?

गणेस फिलम रो नाव बतायो । नाव सुणताई गिरधारी न जाण खजानो लाध्यो । होळ सा क पूछ्यो—चालसी ?

—ग्राज ? बी री ग्राख्या की चवडी हुई ।

—ग्रौर नी तो काई ग्रागल जलम मे ? रीसा बळ र थूकता कयो ।

—जाबत ई भूडा लागसा, की तो सोच ।

—ग्रापा कुण सा ढाल बजा र जावा हा । चुपचाप रस्त माय सू खिसक जासा ।

—ठीक है । उण होळ सी क हा भरी । दोनू पाछा ग्राय र सगळा मे रळग्या ।

नत्थू चाय लेवण नै जावतो दीख्यो । नारायण हेलो पाड्यो—ग्ररे नत्थू ! ब लाग माय सू निकळसी क नई ? काई करण लागग्या ?

–जिणणिया नै धोबा देव ! गिरधारी बाल्यो—वी नै शाळ आवै ही। दुरता ई आगै रस्त माय सू खिसकण री सोच ही।

–हैडमास्टर साब की काम भोळाय राख्यो है। पूरो कर'र पाच मिट मे आवै।

–इण फद्‌मल नै स काम अवार ई सूझैला।

–बा रो चाज कुण लेसी ?

–चाज लेवण मे काई है कोई लेय लेसी !

–कमती-वेसी कुण भरसी।

– बा र चाज मे काई रोळो कोनी। व आदमी काई, हीरा हा। सम्पत बोल्या।

–हा ऽ, लालजी आदमी काई, हीरा ई हा।

–म्हैं तो लारल दस वरसा सू बा र साग हू पण मजाल क बी आदमी किणी नै दो ओछा लफज कथा हुव !

–धीजो अर नठाव ई गजब रो। सौ तक्लीफा थका ई किणी आग कदई रोवणो कोना रोवता।

–हारी बेमारी मे दूजा र माडा ’यारा आवता।

–लेण देण रा इत्ता साफ क ना पूछो बात। कोई पाच पच्चीस बा रा भलाई खायग्यो हुव, बा किणी री फूटी कोडी ई राखण री कोनी सोची।

–पण कव है नी वैं भला आदम्या री दुनिया म ठौड कठ ? बा नै तो भगवान ई पली बुलाव !

–आदमी लाखीणो हो।

गिरधारी री शाळ माय री माय वध्या जाव ही।

बाकी मास्टरा र आवता ई सगळा टुरग्या। रस्त म गिरधारी अर गणेस चुपचाप खिसकग्या। नारायण कनै जाय'र रघुनाथ होळ-सी क बोल्यो—यारा, म्हनै लुगाई नैं स्कूल छोड'र आवणो है। म्हैं चालसू। अर बो टुरग्यो।

रस्त मे अेकर फेर धुसर फुसर हुई—ओ तुरत बठ काई करसी ? पण काई करसी-काई करसी करता-करता ई लालजी रै घरा पूगग्या।

अरथी हाल तांई उठी कोनी।

लोग भळा हुयोडा हा । माय वार रोवणो कूकणो चालू हो । गळी गुवाड रा टीगर भ्रठी उठी उछळकूद कर हा । वूढा बडेरा भ्रर समझवान लोग टीगरा नैं अेकानी भेज हा ।

सामल घर र डागळ री भीत माथ तीन जोध जवान छोर्‌या ऊभी ही । ऊमर रो उठनो उफाण ! दो च्यार मास्टर गरी मीट सू वठी नैं देखण लाग्या । गळी रा छोरा पली सू वा नैं ई देख हा । बाता कर हा ।

–बिचली धाक्ड ह् ।

–अेडनी छेडलो पण माडी नी ।

–लाल साडी भ्राळी चालू दीख ।

कम ऊभ भ्रादमी खखारो कर्‌या । गुणका न्हाखणियां नैं खखारो खारो लाग्यो । बाता रा परसग बदळग्या ।

–काई देरी है ? अेक भ्रादमी नैं धोळ वेसा भ्राळो भ्रादमी खूण कानी लै जावता पूछ्यो ।

–बस, प द्र बीस मिंट म रवाना हुवण भ्राळा हा ।

–भ्रा सो इतजाम किया ?

–भ्रवार तो व्है ई ।

–भाजाई कन सू मोग्या कोनी काइ ?

–वठ कांइ पड्‌यो है ?

–पूछणा तो हा ।

–पूछ्यो जणा कया क बीमारी म लागग्या । भ्रब कन फूटी काइ। ई कोनी ।

–गणा गाठा तो हुवला ?

–भ्राधा पडधा बीमारी म बेच खाया । थोडा घणा हुवला ।

इया पछ काइ, वाथ मास भुवाजी सू बाथडा करतो हा काइ ? पांच छव सौ नडी तो निनखा ही ।

–तीन साल सू बीमारी म खरचो हुवता रया । या पछ भ्राभ सू थोडी बरग्या । भ्रो तीजो भ्रादमी भ्रवार भ्रवार बठ भ्राय र ऊभ्यो ।

–धूड न्हाखो सार हुय माथ ! भ्रवार तो काम सजग्यो । भ्राग काई करला ?

—म्हार तो मगज काम कोनी करै। लुगाई कनै सू गणो गाठो मागू तो वा सीधी चट्ट पड अर भोजाई कनै सू अवार मागू तो भूडो लागू ।

—भूडो लागण री कोई बात कोनी लाडी ! दुनिया मे पीस रो काम तो पीस सू ई सज !

—म्हारी तो स्यारू कानी मौत है। करू तो म्है पीचीजू अर नी कर्‌या यात जात आळा बटका भरसी क बरोबर रो भाई लार हो तो ई धूड उडी। हाल तो स काम बाकी पड्या है। तीसरो निया वारियो अर बो डुसका भरतो भरतो घर मे गयो परो।

थोडी ताळ पछ अरथी उठी।

रोवा कूकी अर हेला हवा म भरीजग्या—रे जीसा ओ ऽ ऽ, हाय रे म्हारा भाई, तन आ काई सूझी !

—राम नाम सत है सत बोल्या गत्त है। चालो चित कासी बकुठ बासी जहा बहती गगा, वहा मुगती पासी !

रास्त म फूरया अर पीसा री उछाळ !

००

लालजी नै मर्‌या नै तीन दिन हुयग्या।

बा र चाज री लेवा देवी हुयगी। हैडमास्टर स्टाफ री राय लेय'र लालजी र परिवार री पीसा टका सू मदद करण री योजना बणायी। तय हुया क हरेक मास्टर कम सू कम पाच रिपिया तो देव ई। हरेक क्लास मे छोरा दीठ रिपियो रिपियो मगावा। इया सात आठ सौ रिपिया भेळा हुवण री उम्मीद वधी। की रकम 'टीचस वेलफेयर फण्ड' माय सू मिल जासी। कानून मुजब राज अर जीवण बीम सू जिको की मिलणो हुवला मिलसी ज !

अवार मास्टर बाग मे ऊभा हा।

—मायला आ पाच रिपिया देवण आळी स्कीम ? 'ठीक या गळत' आ बात गिट्‌योडी राखी।

—क्यू थार जची कोनी काइ ?

मूड आग सवाल आय पड्यो जणा बगला कानी देखतो बोल्यो—है तो पण ।

—ठीक है जणा पछै पण क्या री ?

—आपण बो मुडदाफण्ड बण्योडो है नी ?

टीचर्स वेलफेयर फण्ड' आपसी बतळ म मुडदाफण्ड रै नाव सू नामी । जद कद ई इण फण्ड खातर की देवणो पड तो चाय पीवण नै भेळा हुव बी बगत आ बात चाल ई—आज मुडदाफण्ड मे पाच रिपिया हाल्या है। कदाच की धरम हुव तो ।

—बी फण्ड सू तो मिलसी ज। बी र अलावा आपा की ओर कर लेवा ता काइ हरज ?

—च्यार पाच मास्टर भेळा हुयग्या ।

—पाच रिपिया खातर धरती क्यू हुव ?

—अरे ओ चम्पालाल, दो फिलमा ना देख्य ।

—हा ऽ, ओर काइ ?

—तू कदई चामडपणो छोड्या कर ।

—म्हारो मतलब ओ कोनी । थ लोग वात न कदेई सही ढग सू समझो ई कोनी । म्हैं आ कवणी चावू क मुडदाफण्ड ई गळत है । अेक तो किणी र घर सू आदमी जाव अर आपा बठ सेफाबाई सो मूडो कर र पाच-सात सौ रिपिया देवण न जावा । बी री मौत रा मोल । म्है पूछू, बी री जिन्दगी भर री सवाया रो मोल इत्तो ई खाली इत्तो ई है ?

—तो पाच-सात हजार रो इन्तजाम करल्यो । पाच तो दिरीज कोनी, पच्चीस पचास देवण री बात कर बेटा !

—अरे ओ फिलासफर, तू चुप रह लाडी !

—इण बात माथ गोर कर्यो जाव ।

—मगजमारी तो करो ना जिण न नही देवणा मती दो ।

बाता रा बवडर चालता रया । अठाईस जणा माय सू दो जणा साफ नटग्या । बा री निजरा मे आ फण्ड ई फालतू हो ।

तीनेक दिना म सात सौ रिपिया भळा हुयग्या । रिपिया कद दवणा इण बाबत मीटिंग ही । लालजी रा बीम रा कागजात तयार करावण खातर, सोहन आफिस गयोडो हो । ओ आयो जणा बी र हाथा म फाइला ही । कमर मे आय र बठता ई उण कयो—लालजी आदमी हा मागी !

–देखो, काल ई सरकारी आदेस हुया क सरकारी सेवाकाळ में रामसरण हुवणिय नैं सरकारी बीम री दूणी रकम मिलसी। अ आदेस लारल महीनैं सू लागू हुवला। लालजी रा भाग तेज। वा नैं ई दूणी रकम मिलसी।

सरकार ओ काम तो आछो ई कर्‌यो। पण इत्तो आछो तो परकायत कोनी हो क दूणी रकम लेवण खातर ई लोग मरणो सरू कर देवैं।

सगळा जणा अेक दूज रो मूंडो देखण लाग्या। पछ खबर सुणावणिय नैं देखण लाग्या।

सगळा री निजरा खुद माथ टिक्योडी देख'र बो बगला जोवण लाग्यो।

कमर माय थोडी ताळ खातर गिंधावतो मून पसरग्यो।

✿✿✿

लकडी खिड्योडी दीखे या आठ दस थेपड्या इनैं बिनैं पडी लाघ ! आई दिना आट आळै पीप रो तळो भी दिखण लागया कर। तल र पीप या तिल्लाडी मे चूल्हो चासण खातर वाटी चोपडण जोगो चीटो बच खाली।

बेस चोपडण रो तो आ दिना सुपनो ई कोनी आव। साबणदानी मे सावण री जगा सावण रा भोरा लाध, जिका हाथ मे ई कोनी झिल। आ भोरा नैं भेळा कर'र लुगाई कुल्हड मे भीजोय दव। बी पाणी सू म्हारी गजी या बुशट झिकदौळ देव ! बस इण सू बत्ती गुजाइस आ दिना कोनी रव। आ दिना काई पावणो आय टूक तो जी र आफत हुय जाव। जी र आफत किणी र बीमार पडण सू भी हुय जाव। डागदर इसा भला है क मामूली खासी जुकाम या बुखार म पदर-बीस सू कम री दवा कोनी लिख। जावताई पूछ—सरकारी नौकर हो नी ? अर हा कवता ई नाव पूछ'र दवाया मस हाख। दुकानदार नैं रुक्को देवता ई बा पदर-बीस री फोटू उतार'र मेल देव। एक दिन री खुराक देवण खातर कवा तो भलो माणस कव—तीन दिना री साग ई लेय जावो नी। घडी घडी कशमीमो कुण काटला ! कोस तो पूरो ई लेवणो पडला। इण रो मतलब दुकान आळो भी जाणै क सरकारी नौकरा रा रोग पूरा कोस लियां ई ठीक हुव। जे बीनैं कवू क भाई अवार पीसा कोनी तो तपाक् सू सुणण न मिल—थार किसा घर सू लाग है ? सरकार सू पाछा मिल जावला।

म्हैं सोचू क घर सू किया कोनी लाग। अवार री घडी जद क जहर खावण न ई पीसो कोनी, दवा खातर पीसा कठ सू लावू ? सरकार पाछा तो जरूर देवली, पण कद, आ थनैं ठा कोनी आई। आठ आठ दस-दस महीना ताई बिल रा खोज ई कोनी वापर। महीन रा महीन मिलता हुव ता काई बात होनी।

फेर याद आव—हाल तिणखा आडा छव दिन पड या है। सोचू क अबकी दफ भलाई की हुवो अेक गरम कोट जरूर बणवाणो है। टाबरां खातर भी गरम कपडा बणवाणा है। घटा आळी अून लेय आवू तो किसार रवै ? सागीडी गरम रवली ! पूरी बाकां आळी सूटर पर्या पछ तो सी बार-बार ई फिरला। गरम कोट नैं गाळी मारण री साच'र घेटा आळी ऊन री सूटर बणवावण री सापू। म्हार माय हरख रा हबोळा उठ। म्हैं मन ई मन गावण लागू—थानैं काजळियो बणालू म्हार नणा म रमालू

००

हाल तांई ठण्ड इसी खास तो कोनी आयी, पण तो ई दिनूग सिझ्या कार कमीज या बुशट म बार निकळता लखावतो क डील माथ की न की हुवणो चाइज ! हुवो भलाई जाकट या बादी-पुराणी सूटर ई !

तिणखा मिलताइ सोच्यो क अवकै गरम कोट खातर कपडो जरूर खरीदणो है। पण दो तीन दिना ताई आ ई सोचतो रयो क किसो कपडो खरीदू। गरम खादी या ? अर किणी छेल निरणय ताई पूग्या पला ई तिणखा रा नोट आलमारी म धर्‌योडी डब्बी मे बन्द हुवता थकाई उड'र पतो नी कठ पूगग्या—पतो हुवता थका!

म्हैं मन ई मन सोचण लागू—अस्सी रिपिया रा गहू बीस रिपिया हळदी, धाणा अर मिरच्या तीस रिपिया री खाड पचास रिपिया दूध माळ रा चाळीस रिपिया तेल रा घी ? डालडा रा ई दसरण दोरा है। श्रो खरचो तो सूखी रोटिया रो है। दाळ चावळ किया पोसावं ? म्हारो हाथ खरचो तो गिण्यो ई कोनी! तीस रिपिया तो खरच हुय ई जाव। पान खावू नी सिगरेट पीवू नी खाली चाय अर सनीमा रो सोख है जिको भी जेब मे हुवत तीणा र कारण घणा दिन धिकणो मुसकल लखाव! इसी हालत म आदमी कपडा कराव तो कठ सू ? अर घर मे बिना बुलाया पावणा ई आवता रव। बिना बुलायोड पावणा दाई हारी बेमारी त्यारी आवती रैव!

लारल दिना छोटोडी छोरी बुखार मे जुडगी ही। म। अर लुगाई खास ध्यान कोनी दियो। मा कय—श्रो बुधन तो काळ मे ई कोनी मर! म्हैं सोचू क जिको काळ म ई कोनी मर वो ताव तप सू तो ता ई कोनी मर सक! कसर हुय जावै तो बात दूजी है। या पछ टिटेनस हुय जाव। अस्पताळ पूगा जित तो रोगी बटीज बटीज र मर जाव! कारण क रोग बध्या पली तो आपा अस्पताळ रा दरसण ई कोनी करा। अस्पताळ किसो मिंदर थोडी है क जिको राजी राजी जावा!

छोरी बुखार सू छूटी ता छोरो बीमार पडग्यो। बी रो बुखार बीस रिपिया री दवाया सू उतर्‌यो।

रात न लुगाई कयो—अवकी तो गरमकोट बणाईजणो मुसकल लाग।

—हा ऽऽ! कय'र म्है निस्त सो हुयग्यो।

—ऊन लाय देवो तो म्है सूटर बणाय दू उण कयो। कमर री छात कानी देखतो म्हैं सोचण लाग्यो क तीन च्यार टाबर हुया पछै लुगाई, लुगाइ कोनी रव। वा आपर धणी री सुविधावा असुविधावा रो ध्यान ठीक बियाई राखण लाग, जिया क मा टाबरा रो ध्यान राख!

—सुभीत सू ट्रूगी तो ऊन लेय आवूला। कय र म्हैं मारया भीचनी।

छोरो रोवण लाग्यो। लुगाई उठ'र गयी परी। म्हैं नीद लेवण री कोसीस करण लाग्यो। इण मू घाई न गाळ्या काल्तो काढनो।

वी दिन मेडिकल बिल रा पचास रिपिया मिल्या हा । दफ्तर सू आवती टैम साग काम करणियो जगदीस बोल्यो—बदरी, त आव, आपा गरम कोट देखा ।

—कोट ?

—हा ऽ सक्किण्डहैण्ड कोट ! यार, अठ घणाई विक है नी—अमरीकन कोट !

—सुभीत सू हूज जावैला ?

—हा ऽ, नूव कोट री सीवाई सू ई कम म !

म्हैं हरखीजतो हरखीजतो वीर साग हुयग्यो । म्हे दोनू के० ई० एम० रोड पूग्या । वठ भात भात रा कोट पड या हा—बद गळ रा कोट खुल गळ रा कोट ग्रोवर कोट । भात भात रा रग । भात भात री डिजाइन ।

भूरै रग आळो कोट हाथ मे उठाय'र म्हे गौर सू देखण लाग्या । दुकानदार री सुर सुणीज्यो—पर'र देखलो बाबूजी देखण परखण रा कोई पीसा कोनी लाग । दाय आवै तो लिया, नीतर पाछा मेल दिया ।

म्हे बो कोट नै पैर'र देख्यो । साव अगोअग ढूकग्या । द नै बिन्नै हाथ हिलाय'र देख्यो । सोळै आना जचग्यो ।

म्हैं पूछ्यो—ई रा कित्ता पीसा है भाई ।

—बीस रिपिया ! उण कयो ।

म्है की कवू उण सू पलीज जगदीस बोल्यो—बीस तो ज्यादा है लार तो पन्दर-सोळ मे देय'र आया हा ?

—बाबूजी चीज देख र बात करो नी ।

—देखसै, थारै बेचवाळी हुव तो ! जगदीस की करडावण मे आय र कयो ।

—थे अठारै देय दिया बस, ई सू बत्ती गु जाइस कोनी ।

जगदीस की ग्रौर हील हुज्जत करतो, इण सू पैला ई म्हे बीन अठार रिपिया देय दिया । म्हैं सोची क सौदो कठैई हाथ सू निकळ नी जावै ! कोट री हालत देखता म्हन लखायो क आ पीसा मे तो सूटरडी ई वण । कोट तो पछै कांट ई हुव !

जगदीस दो कोट खरीदया । उण दलील दीनी क भायला, आपा ई रईसा आळ दाई फोर-फोर र पराला !

म्हे ओर ओवर कोट उठाय'र उथळ पुथळ'र आय वार सू देखणो सरू करयो । बीरो अस्तर भी चोखी हालत म हो , म्हैं सोच हो कै जे ओवरकोट आळा

सौदो ई ढूक जावै तो टाबरा र ई कोट करवाय दू—इणन फटवाय'र। इण मे कम सू कम तीन टाबरा र कोट तो आराम सू बण जावला। नूवो कपडो लाय र बणवावण री उम्मीद मे तो टीगर सार सीयाळ ठण्ड सू पीटीजता रैवला। अर लुगाई रा तगादा इया ई चालता रैवला। वा रोजीना याद दिरावला अर म्हैं काल लावण री कय'र टाळतो जावूला।

उण ओवरकोट रा पच्चीस रिपिया माग्या अर बाईस माथ आय'र फसलो हुयो। जगदीस पीसा छुडवावण म मास्टर है! जिकी जिनस रा दुकान आळो सात माग, बो छव देय'र ई हट। बीर साग हुवण रो फायदो ई हुयो।

म्हैं बीनै चाय पायी अर भुजिया खवाया।

oo

म्हैं घरा पूग्यो। मा शगळ ही। म्हार हाथ म कपडा देख'र उण पूछ्यो—

ओ इत्तो काई उठाय लायो रे?

—गरम कोट है! म्हारी आवाज मे गरमास हो।

—कद बणवाया? उण पूछ्यो।

—बण्यो बणायो लायो हू।

म्हैं ब दोनू कोट मा र सैमूड मेल दिया। बा नै देख'र मा बोली—अ बोन्ना पूर कठ सू उठाय लायो ?

—मा, अ अमरीकन कोट है। चोखा भला खावता पीवता आदमी तकात आनै पर! नूवा कोट तो तू जाण ई है।

म्हारी बात पूरी हुया पला ई मा बोली—जे अ कोट मुडदा रा उतारयोडा हुया तो।

—हुह! थान तो हरेक बात ऊंधी ई सूझ! म्हैं भुसळीज र बोल्यो—मुडदा रा उतारयोडा कोट भी कद ई बिक्या हा! अरे मा! ब लोग अमीर हुव। नूव साल माथ आपरा कपडा उतार। ब ई कपडा अठ बिक!

मा आग की आपरो दरसण बघारै इण सू पली म्हैं बै दोनू कोट उठाय र माळिय मे लेय गयो। बठै लुगाई न दिखाया तो उण भी इसीज बात कयी। म्हन झाळ चढी—हुह! आरै भेजै म तो बस अेक ई बात बठ्योडी है क अ कोट मुडदा रा है! आछो हीयो फूट्यो है मा लोगा रो! अक्कल रा दुस्मीं कठै ई रा!

म्हैं खासा ताळ ताइ माय रो माय भुसळीजतो रैयो ।

¤¤

दो दिना पछै टाबरा खातर कोट बण'र तैयार हुयग्या । बा नै पर्‌या पछै टाबरा रा हूलिया ई की की बदळ्योडा लखाया ।

अै तो असल ओपग्या रे ! मा कैयो ।

—हा ऽऽ ! कय'र म्हैं सोचण लाग्यो कै असल ओपो या नी ओपो, सी रो जाबतो जरूर हुयग्यो । म्हैं काच सामैं अभ'र म्हार कोट रा बट्टण बन्द करतो मुळकण लाग्यो । माळियैं सू बार निवळ्यो तो लुगाई डागळ माथ ऊभी दीखी । म्हनैं कोट म देख'र बा भी मुळकी । बीरी मुळक रो मतलब हो कै सागीडा जच रैया हो !

म्है बीनै मुळकती देख'र आख मारी अर पागोथिया उतरण लाग्यो ! दफ्तर जावण खातर साइकल उठायी अर टुर बहीर हुयो ।

पूरै मारग आ सोचतो रैयो कै ई बरस पडणियैं रुठ रो सामनो आराम सू कर सकूला ।

¤¤¤¤

अधारै में सांस

पता नी काई हुयो क म्हन च्यारूमेर अंधारो दिसण लाग्यो। म्हा लखावतो क म सास नीं लो सकू। म्हा बाप अर माता रा ताता धाम ई थाड़ थ था गया सू हुया पला गी हुया बराबर हा। पण म्हारी लुगाई, जिण नै म्हूँ जी जान सू चावतो, वा तकात मन्दबुद्धि लखायी। अर म्हारा सान्द्रा भायला भी जिका म्हा र आधी रात ई तो भी मरण तयार रेता अर वे भी म्हारै लाग—वे तकात मन्दबुद्धि लखाया। अर म्हारा टाबर, दो छोरा अर छोरी, जिका न देखता ई म्हारो दिन भर रा थाकला उतर जाया करतो हो, आजकाल वे भी भी भार लखावण लागग्या हा। वां र हेत म भी म्हा नै रेत लखावण लागगी ही।

म्हूँ म्हारै भायला साम मन मसोसायो राख्यो। वां परामर्श री पतरस री दूजी सीव ताई साथ र बात तरह री बातां बतायी। कई कयो कै म्हा म्हारे मन मगज रो वैम है। जद म हुयार दिरमां र कारण सोच मन्दबुद्धि लखाय। जिण दिन भी जद रा हिसाब सधू हुय जावला का नुवो अधार जद लाग जावला, वा दिन म्हा नै सावळ दिसण हुय जावला। पूर्ण जेब पईसार म्हन मणत करणी चाईज। च्यार सो रिपिया री नौकरी रै अलावा दिनूग सिंज्या पाठ-ज्ञान री जुगत जुड़ जाय इस्या काम करणा चाईज।

कई इसा भी हा जिका रा कवणो हो कै अधार म्हारा दिन गिर की माठा है। वा म्हार हाथ री रेखावा देखी। रेखावा रो गणित म्हारै साम राख्यो। म्हूँ सारी बातां गुण्या गया। तो गलासो करया पछ वां सलाह दीवी क म्हन मूगो पैरणो चाईज। वा म्हो भी बतायो क इण न पैरया सू मगळ री दसा रो कुप्रभाव कम हुवैला।

साची कवू जे म्हूँ मन मगज सू उथळ-पुथळ हुयोड़ो नी हुवतो तो वारै मूडै माथ थूक देवतो। अ झाड़ा जितर, टूणा-टोटका, मिंदर डेरा फालतू री थपत गिणणियो म्है कीं दिन वाला वालो चढ्यो रयो। म्हार मन रै किणी भूड खूणै सू आ आवाज आयी क हुय मन आ ई बात हुव! भारो कवणो साच हुय सक है!

वा री बात मन म जचगी। वा न म्हारी जेब रा छेकला दिखाया। व मुळक'र

बोल्या—अरे डफोळ ! इ बात रो क्या रो सोच ? म्हे फेर क्या रै वास्तै हा । अर सौ रो अेक कडकडाट करतो नोट म्हारी मुट्ठी मे आयग्यो बा री कृपा सू ।

फेर पछ म्हे बी चीज री तलास मे निकळ्या । तीन-च्यार दुकाना देखी । सऊ पली जठ गया हा, पाछा बी दुकान ढूक्या । साठ रिपिया म मूगो खरीद्यो अर चादी रा बीटी मे जडवायो ।

मूगो पर्या पछ लखायो क म्हार खून मे नवी गरमी अर गति आयगी है । लखायो क कोई कद तो म्हे फदाक मार र हिंवाळै माथ चढ सकू हू । कै बिना किणी विमाण रै फदाक मार र चाद सू असखेल कर'र आय सकू हू । क मुट्ठी भीच'र कैय दू कै अे मोटर ! तू जाम हुयजा, तो फर्राटा भरती मोटर जाम हुय सकै है । आज तो म्हनै इत्ती फुर्ती मैंसूस हुई क किणी नै 'बोनविटा पीया पछै ई कोनी हुवती हुवैला । इत्तो आतम विस्वास लखायो कै किणी नै पूरी पोथी कठ हुवता थका ई परचो देवती वळा कोनी हुवै !

बी दिन इणी जोस अर हरख मे भायला सागै सात-आठ रो घूरमो कर न्हाख्यो । लुगाई खातर मळाई रा लाडू लेयग्यो । टाबरा खातर साप सीढी अर लूडो !

मूगो पैर्या पछै केई दिना ताइ म्हैं हवा मे कुदडका करतो रयो । म्हनै लखायो कै सगळा लाग पाछा हेताळू हुयग्या है । हेत री नदी म्हारै बिच्चै बवण लागी है । इ नदी रै पाणी सू प्राणलेवू तिरस बुझ सकै है !

मूगो पैर्या पछ अेक नूवी बात म्हार माय घर करगी । म्हे दिन भर री घटणावा रो लेखो जोखो राखण लाग्यो । नित री घटणावा लार बीत्योड दिना सू मिलाण करतो अर इण नतीज माथ पूगतो क म्हारी हालत सुधर रयी है ! दो च्यार दिना पछ तो हालत हुयगी कै जे म्हनै जमळ खुल र लाग जावतो तो बा भी इणी मूगै री करामात लखावती !

पण अचाणचक म्हन लखायो कै बो अधारो फेर धिरण री तजवीज बठाय रयो है । छोरी री बीमारी सू म्हारी चितावा वधण लागी । अस्पताळ लेयग्यो । बीस पच्चीस रो फोटू उतरणो सरू हुया अर माय पाचवै सातव दिन औ फोटू तयार लाधतो । हार'र म्हैं बी नै बडोडी अस्पताळ दिखावण री धारी । रट्ट पडण लाग्यो हो इण खातर लौंकार काढ्यो । भडका भडकू'र अेक कानी मेल्यो । सोच्यो—रात नै अस्पताळ मे ओढण नै काम आवैला । छोरी नै भरती कर्या पछ किणीन किणी न तो बी रै कनै रवणो पडला ।

सिझ्या न छोरी री हालत घणी बिगडगी । इण खातर बी बगत ई अस्पताळ जावणो पड्यो । देखताई डागदर कयो क इत्त दिना ताई म्हे नीद मे सूतो हो काइ ?

आखिर थावू काई हू ? जे छोरी नै मारणी ही है तो अठै लाय'र मारण री बयू तेवडी है ? अरा किसा प्राण निकळता कोनी काई !

अर फेर बो आपरी कोसीस म लागग्यो । ग्लूकोज चढाय'र नरस नै बठ उभाय'र गयो । म्हैं ग्लूकोज री सीसी कानी देखण लाग्यो । ग्लूकोज चढ हो—टप टप टप ! दो घटाई कोनी बीत्या क टप् टप् ठप्प हुयग्या अर सास री पखेरू देही र मीजर सू उडग्यो—फुरर !

पतो नी क्यू, म्हैं रो कोनी सक्यो । म्हारै हीय मे सून वापरगी । सून कई दिना ताई वापरयोडी रयी । सून इसी वापरी क म्हैं भूलग्यो—म्हार मूगो पड्याडो है । पण जेब म हुवत छेल्लो अर अग्लत चट्टा म्हन मूग री याद दिराय दीवी । म्हैं फेर दिन भर रो लेखा जोखो राखण लाग्या । अबकी दफ म्हन लखायो क मूगा पड्या सू पली अर अबार री हालत म काई फरक कोनी । छोरी री मौत नै जे इण सू जोड्, तो अ दिन पली करता माडा ।

म्हारी वा सा गुग नपूर बण र उडगी । कठ तो म्हैं मुट्ठी बन्द कर र मोटर नै रोकण री सोच्या करतो हो अर कठ आज चालती कीडी नै ई कोनी रोक सकू ! हिंवाळ माथ तो चढ़णा दूर रयो, बिना पग उठाया पगोथिया ई कोनी चढ़ सकू !

हुयो ओ क म्हनै बो मूगो बेचण री सोचणी पडी । सोचणी काइ पडी, अब तो सोळ आना ई तेवडली क इण रो पापो काटणो ई है ! म्हैं हड़मान र घरा गयो । बी र घरां तळघर म चाय पीवती वळा आव हो क बात किया ढोरू । म्हार मूड सू कीं निकळै इण सू पली बो बोल्या—आजकाल तो दिन गिर भौत माडा चाल रया है । भायला थारलो मूगो केई दिना खातर परण नै लो द, म्हनै ई मगळ री दसा है ।

—आ खाटी हुई नी ! काइ कवू इणनै ? किया समझावू क बत्ता ई मूग सू ई जे माडा दिन गिर सावळ सू वा हुवता तो म्हैं इणन बेचण री आळण नै तवडतो !

पण म्हैं बी नै की कोनी कयो । आगळी ॥ बीटी उतार र चुपचाप बीं न दे दीनी । सोच्यो—बया तू ई देख ल, इ भाठ मे की कोनी । सुण'र सीखण नाऊ कर र सीख्योडो पुख्ता हुया कर । आ सोच'र बी न समझावणो फालतू समझ्यो ।

दो-तीन दिना पछ बो जो एम बी मे मिल्यो । म्हैं की कोनी पूछ्या । उण खुद इ बात टोरी—भायला, चीज तो सातरी है ।

—कोई खास फायदो ? म्हारो सवाल उछळ'र बी रै मूड आग जाय पड्यो ।

—हुयो तो कोनी, पण लखाव हुवलो जरूर। च्यारूमेर शुभ ई शुभ ग्रासार दीख रेया है!

म्हारै मगज में किणी दार्शनिक री ग्राळ्या ताजी हुयगी, जिण कथ्यो क जो की ग्रापां नै दीख, बो ग्रसल मे 'वो' है ई कोनी। ग्रसली चीज तो की ग्रौर ई है। जिया क सनीमा र पडद मार्थं दिखणिया चितराम किणी ग्रसली दुनिया री पडछीयां ई हुया कर। सनीमा घर सू निकळ्यां पछ ग्रसली ग्रर नकली सो'की लारै छूट जाव। ग्रापा फेर ग्रेक नू वी दुनिया में ग्राय जावा। दुखा ग्रर ग्रबखाया सू भर्योडी दुनिया मे।

ग्रेक वात ग्रा भी है क ग्रा बीटी शुभ है, इण खातर शुभ कोनी लखाव। पण ग्रापणै मन मर्गज मे ग्रा बात बैठयोडी है, इण खातर शुभ लखाव। जिया कै केई दिना पैली ग्रा बीटी म्हार वास्तै भी शुभ ही, पण ग्राज कोनी—जद क बीटी सागी है!

दिन दसेक ग्राडा घाल'र बो म्हार कन ग्रायो। बोल्यो—भायला, म्हनै तो ई मे की तत कोनी लखायो।

म्हैं राजी हुयो। चालो ग्रेक सू दो तो हुया जिका, कैय सका क ग्रा तत-बायरी चीज है! किणी बात रो प्रचार प्रसार इया ई तो हुया कर!

म्हे बोल्यो—इ नै बेच देवा तो ठीक रव। पाच-सात रो काटो कटै तो ई कोई हरज कोनी।

म्हे दोनू मूग नै ठिकाण लगावण खातर निकळ्या। जठ सू खरीद्यो हो, पाछो बी नै ई देवण री सोची। पण बी री दुकान बन्द लाधी। पूछताछ कर्या ठा पड़ी क बी नै पुलिस पकड'र लेयगी। बी री दुकान मे नाजायज जवाहरात मिल्या।

म्हे गोता खावता दूजी जगा पूग्या। खीचडी-सी मूछा ग्राळो बो ग्रादमी बोल्यो—ग्रावो, माय बठ'र बात करा। माय बठ'र म्हे बी न सा' बात साफ-साफ कय दीवी कै म्हार मूग री बेचवाळी है। कितक मे लेय लेवोला?

बो गौर सू मूग री पड़ताल कर'र बोल्यो—कित्त मे खरीद्यो हो? बो म्हार मूड सामै देखण लाग्यो।

—साठ मे! म्हैं बोल्यो।

बो की कोनी बोल्यो।

मून रा झुणझुणिया बाजण लाग्या।

म्हार सू रयीज्यो कोनी। पूछ्यो—थे कित्ता दे सको हो पांच सात तोड़णा हुव तो ।

–माफ करज्यो ! भ्रो तो साव खोटो है। इ रा ता पाच रिपिया ई कोनी बट। पचास पीसा कवो तो म्हैं देय दू ।

घर उण मूगो म्हार कानी फर दियो। म्हारी समझ म कोनी भायो क म्हैं काई बोलू। मूगो जेब म घाल'र चुपचाप उठ सू उठग्यो।

म्हे दोनू बार भायग्या।

काळी सड़क साप दाई पसर्‌याड़ी ही।

किणी नै दाग देय र भाया पछ जिकी हालत हुया कर है नी बा ई हालत म्हार जी री ही!

००००

जीवती ल्हासां

अदीनवार रै कारण दफ्तर रो छुट्टी ही। बो दिन भर सडका मायँ घूमतो रयो। बिना किणी काम। बी रै चहरै मायँ रजी चढगी। ढळन सूरज री रोसणी मे बी रो चैहरा काळा निजर आवँ हो। चाल-ढाल सू लागतो हो क बो खासा थाकयोडो हुवैला।

उण आपरी गुद्दी कुचरी। मल री चिपचिपाट साम्प्रत लखायी। उण सोच्यो क दिगूण सिनान कर लेवणो चाईजै हा। साबण कोनी ही, आ याद आवताई उण मू डो मचकोड्यो। पिच्च देणी सी-क थूक'र डारै पासी मुडग्यो।

घरा जावण सू पली चाय पीवण री सोची। बो सामनै आळी साकडी गळी मे बडग्यो। बा दुकानडी हर बगत धू वै सू भर्योडी रैवती। आगै खाचै मे सगळै सर री गन्दगी रो ढिगलो हो। अकूरडी री बदबू चौफेर बापर्योडी रैवती। बी दुकानडी रै माय बठो का बार धू व अर बदबू सू छुटकारो कोनी हो। माय मेजा माथ चाय ढुळ्योडी रवती। बी पर माख्या री भिणभिणाट। चाय लावणियो कोजियो मैल सू काळा कुट्ट हुयाडा कपडा पर्या आपरै वेसा नै कुचरतो रैवतो।

उण चाय खातर कैयो। कुर्सी खेंच'र माय खणै मे बैठग्यो। अठै आय'र चाय पीवण रो कारण ओ ई हो क सगळै सैर मे चाय रा पैतीस पीसा लागता, पण अठै बीस पीसा मे फस्ट किलास चाय मिलती। घर रै कनै ही ओ सुख यागे।

बो घरा पूग्यो। कमरै मे पूग'र बत्ती जगायी। माचै मायँ बैठयो। माच री चरमराट हुई। आळै मे पडी कहाणी पत्रिका पढण खातर उठायी पण दो पाना सू आगै कोनी पढ सक्यो। पछ पत्रिका रा पाना फरोळण लाग्यो। फेर पत्रिका आळै मे फैंक दी—अणमण भर उदास मन सू।

बी री निजर मेज कानी गयी। लिफाफो पड्यो हो। परसू आयो हो। उण हाल ताई उथळो कोनी दियो। कागद लिखण री सोच र बो मेज कानी गयो।

बो कागद बाचण लाग्यो—मा भोत याद कर। पुप्पा रै सासर सू कागद आयो है। बी री तबीयत ठीक कोनी रैवै। बिचा अब स्याणी हुयगी है। बी री सगाई खातर बात चाल रैयी है। बात पक्की हुवताई ब्याव ई वेगो ई करणो पडला। रिपियां रो इतजाम अबार सू ई सरू कर दे। म्है तो सो' बी थार ई भरोसै कर

रैया हा। दादी मा री तबियत पैला सू ज्यादा खराब रैवै। पण खास चिंता री बात कोनी। थे कद ताई आवोला ? थान सगळा या- कर है अर सब मजै मे है। थ सरीर रो पूरो जापतो राख्या। अर उण आखरी ओळी वाची—थारो भाई-रमेस।

उण मेज माथ कागद मेल दियो अर आपरी पडछीया देखण लाग्यो। इत्र सरीर हालतो अर विनै पडछीया। उण हाथ ऊचा कर'र आळस मरोड्यो। ऊचा उठ्योडा हाथ बी नै फासी रै फ- री तरिया लखाया। थोडी ताळ ताई उण आपरा हाथ ऊचा ही राख्या। बो सोचण ढक्या कै जे आ फदो बणती पडछीया असली रस्सी रो रूप लेय लेवै तो किसो क रव ? ऊपर सू काई खैंच अर खैंच्याई जावै। बीं रो गळो दूपीजै अर जीभ बार निकळ जावै! हुह! निस्कारो न्हाख'र बो कुरसी माथै बैठग्यो। पड्तर लिखण लाग्यो। -लण्डर कानी देख'र उण हिसाब जोड्यो कै दूजै सनिवार अर अदीतवार री छुट्टी है। अर दो दिनां री कैजुअल लीव लिया पछ च्यार दिन घूम्यो जा सक है। कागद लिखता लिखता बी न सरला री याद आयी।

सरला!

बीं री आख्या अगाडी आपरी जोडायत रा चैहरो घूमग्यो। बो सोचण लाग्यो क अबकी दफै सरला खातर की न की जरूर लेय जावणो चाईजै। अक सांतरी सी क साडी ठीक रैवैला। विद्या खातर ई कीं लेवू काई ? अर भतीजां खातर ? हुह! देखी जा'ला। अबार तो दस दिन पड्या है। मैडिकल बिल आयग्यो तो ठीक, नीतर सगळा हवा खावो। पण साडी जरूर लेय जावणी है—उण ओजू याद कर्यो।

थोडी ताळ पछ बो सूयग्यो। जद ताइ नींद नीं आयी तद ताई सरला रो चैहरो बी र मन मगज मे घूमतो रैयो। पसवाडा फोरता फीरता बी न नींद आयगी।

००

शुक्रवार री सिंझ्या री गाडी सू रवाना हुयो। दिनुग आठे'क बजी बो घरां पूगग्यो। लखायो कै बी र घरा आवण सू सगळा राजी हुया है।

बो आंगण मे बठ्यो हो। बी री लुगाई साळ र किंवाड री ओट मे ऊभी बी नै देखै ही। उण मुळक'र सरला कानी देख्यो। हरख रै हबोळा सू सरला रो चहरो गुलाबी हुय रयो हो। मा गिलास मे चाय लायी। सरला किंवाड री ओट छाड'र माय गयी परी। घट्टी पीसण री आवाज आवण लागी।

मा बी रै कनै बठगी। बा पूछ रयी ही—सरीर और तो सावळ मज में रयो नी ?

हा ऽऽ ! उण गिलास मे फूंक मार'र चाय रो गुटको लियो ।

—सुण्यो है क आ दिना तिणखा फेर बधी है ?

उण सकाळू निजर सू मा कानी देख्यो । चाय रो अगलो गुटको लेवताई वो अचळूग्यो । धासी रुकी तद बोल्या—हा ऽ, महगाई रा दस-बारै रिपिया बध्या है ।

मा र चहरै माथ चमक आयी । बा बोली—चोखो ही है । बाकी महगाई तो मार रयी है चीजा रा भाव आभ कानी ।

मा री बात पूरी हुया पला ही इण प्रसग नै बदळण खातर उण पूछ्यो—दादी-सा किम्र है ?

—लारल आळिय मे ' । मा कैयो !

—दादी सा री तबियत घणी खराब ही नी । बार कनै कुण है ? चाय री गिलास अेक कानी मेल'र पूछ्या ।

मा रो उपेक्षा भर्‌यो सुर सुणीज्यो—क्षी कोनी लाडी ! चिंता री बात कोनी । अर फेर आपा रै हाथ मे है ई काई ? स करमा रा लणिया दणिया है । बुढाप रा रोग है । नित घटै, नित बधै । अब तो भगवान उठा लेवै तो चोखो है । बाकी साबरियै री मरजी है । जित्ती सासा घाली है, व तो पूरी करणी ही पडला ।

बी नै लखायो क आनै तो दादी सा री मौत री ही उडीक है खाली । पण गळै मे आगळी घाल'र तो किणी सू मरीज कोनी । अर अ खुद, का फेर म्हे खुद जिका खुद नै सावा साता समझा हा, जीवण री हूस दबाया बठा हा, इण जीवण मे कीं भदरक है काई ?

—दादी सा ■ मिल'र आवू ।

—चाय लेवतो जा बा खातर ।

बो रसोई कनला पगोथिया चढ'र आळिय माय सू हुवतो लारल झागळै पूग्यो । माळिय रा किवाड ओढाळू ओडा हा । उण किवाड खोल्यो । माय बड्‌यो । माय बडताई बदबू रो भभको नासा माय सू पेट मे पूगग्यो । मुद्‌द माथ बठया पछ बी नै लखायो क इण माळिय मे तो मिनख नई मरतो हुवै तो मर जाव ! अधार अर बदबू र कारण !

चाय री गिलास दादी सा रै हाथा मे झलाय र उण सोचो कै राजी-खुसी रा समचार लिया दिया बिना ई उठ र पाछो नीच जाव परो ।

दादी सा आपरी आख्या मिचमिचाय'र बी नै देखणो सरू कर्‌यो। फेर बोली—कद आयो र । बा मर्‌योडी सी-क आवाज सुण'र उण सोच्यो क अब जल्दी ही आ आवाज अलोप हुवण आळी है।

–बस अबार आयो ईज हू ।

चाय री गिलास मेल'र बा तम्बाखू री डब्बी काढी अर चिमठो भर'र सू घी। फर गिलास उठाय'र चाय पीवण लाग्या।

–कित्ताक दिन रवला ?

–तीन च्यार दिन।

–सावळ मज मे तो है नी ?

–हा ऽऽ !

दादी सा जद बी र माथै पर हाथ फेर्‌यो तद बो गळगळो हुयग्यो—बदबू अर अधार र बावजूद।

उण टुरण री सोची।

–अच्छा, म्हैं थोडी ताळ पछ आवूला। कैय'र बो टुरग्यो। माळिय सू बार खुली हवा मे आवताई बी न लखायो कै अब थोडो आराम है।

बो नीच आय र रसोई म बठग्यो। मा चूल्है मे लक्डी घाल ही। आगली लकड्या र बुझण सू धूवो हुयोडा हो। मा भूगळी लेय र फूक मारी। धूव र कारण बी री आख्या मे पाणी आयग्या—मा री आख्या मे भी। अबक आळी फूक सू बास्ती जगग्यो–भक ! थोडी ताळ मे सो धवा छटग्यो।

विद्या रसाइ मे बडी। वा आय र मा कन बठगी। उण विद्या कानी देख्यो। विद्या र डील मे हुवता बदळाव बी सू छाना नी रय सक्या। उण सोच्या क च्यार महीना पैली आळा कपडा तो अब ओछा हुयग्या हुवला। डील कित्ता भरीजग्यो है—अक्दम सू । विद्या खुद न खुद सू लुकावती सी क बठी ही। वा खुद भी आ बदळावा सू नावाकिफ कोनी ही। उण साच्यो क फाक पर र इन बिन्न घूमण आळी विद्या जद पनी दर ब्लाउज अर साडी परी हुवला तो काई लखाया हुवला ? अर काई लखायो हुवला जद ब ब्लाउज ही हर महीन काठा हुया हुवला ?

–थारा इम्तिहान कद सू है ?

–दस माच सू । विद्या बोली।

–तयारी कडी क है ?

–सागीडी है। सक्ण्डि डिवीजन तो छोडू ई कोनी।

–इत्ती सखी ?

–इत्ती सेखी ?

–पढ़ू हू, समझ्या भाईजी !

–रमेस कठ गयो ?

–सतीस र घरा पढण न गया है। बिद्या बतायो।

–बीन तो तू ही पढा सक है।

बिद्या मुळकी। बोली—पण बो बदमास पढ जद नी ! बा म्हनै तंग करण खातर इसा ऊंधा सूधा सवाल पूछ क म्हारो तो मक्कल ई चक्करीज जाव। अै फैक्टर-फावटर म्हन आव कोनी अर बो म्हनै जद भी पूछ, अ फैक्टर ई पूछै।

–बजाई बोछरड़ो हुयग्यो बो। मा बोली—हस'र।

बिद्या कैया गयी—बा इया कर बा बिया करै। मा बात मान कोनी। बा बात सुण कोनी। बाता ई बाता म बा अेकर जोर सू हसी। फेर मा कानी देख'र चुप हुयगी अर चुप ई बठी रयी।

रसाइ म फेर धूवो हुयग्यो। धूव र कारण आंख्यां म पाणी आयग्यो। आंख्या मसळतो बो उठयो। मा कय'र—मा भाईजी सू मिल'र आवू।

मा आपरी आंख्या बीर चहर माथ टिकाय दीवी। बा आपर गळगळ सुर म बोली—हा ऽ, मिल आ भलाई। बीन तो आपा री ना म्हो, पण आपा न तो बी री फिकर है ई। बो तो म्हाटो आपरी लुगावडी र रग म इसो रगीज्यो है क मा अर छोट भाइ-बना रा क्याल इ कानी करै।

फेर मा रोजीना आळा पुराणो रावणा लेय'र बठगी—बी रै वास्तै म्है काइ कोनी कर्‌यो ? पढायो लिखायो चाख घराणै म ब्याव कर्‌या। पण थार जीसा रै मर्‌या पछ छव महीना ई कोनी बीत्या क बो जुदो हुयग्या। छोरो तो लाइ सम्भू है पण बा लार आयाडी काळ माथै आळी रडार बाछाड है। छोर नै ऊंधी-सूधी पाट्या पढाय र इसा रग चढायो क बस ना पूछ पण खर । आपरो कमावो-खावो। अर निस्कारो न्हाख र—लाडी, अब तो म्हान थारा ही सायरो है। तू नई हुवता तो म्है बुढाप म भूखा मर जावना।

थाडी ताळ ताइ मून। डोल मे काटा री तरिया खुभणियो मून। पैर सागी रोवणो। कीन्न की माथ-चोटी करणो पडला। माथ चाटी र अलावा कोई चारो कानी। सो इतजाम थन ई करणो है। थार ही भरोस ।

बो ऊभो-ऊभो सुणतो रैयो। फेर काटा री तरिया खुभणिया मून तिरण लाग्यो। मून सू छुटकारा पावण खातर उण कयो—म्है अबार आवू ।

चप्पला पगा म घाल'र वो घर सू बार निकळग्यो। भाईजी र घरा पूग्यो तो नखायो क बा किणी अणमैथ आदमी र घरा आया है। दिखावटी रामा स्यामा।

धीगाणै मुळकण री कोसिस। आख्या मे सवाल—ओ अठ क्यू आयो है ? कोई आफ्त गळ आवू है काई ?

जद बबलू बी र कनै आय'र ऊभ्यो तो भाईजी बी नै तडक्यो—अेक कानी हट ! बेसहूर कठ ई रो ! हरेक आय गय कन जाय ऊभै। सहूरबायरो ! चाल बठी न !

बबलू डरू फरू हुय र माय गयो परो। बी नै लखायो क वातावरण भारी हुयग्यो है। मून री तीखी मार सू डील छुलण लाग्यो। अठ सू चालणो चाईज।

—अच्छा, म्है चालू। उण कँयो।

—चाय तो पी जावता । भोजाई क्यो। बी न मनवार साव लूखी लागी। सुर छानो थोडो ही रव !

—चाय तो अबार पी'र ही आयो हू। बस, अबार तो चालसू। भायला पापला सू मिलणो है। उण कयो।

—ठीक है। मिल आवो। फालतू मोडो करण सू काइ फायदो। फेरू आया भलो ! भोजाई बोली।

—हू ऽ ऽ ! कय र वो टुरग्यो। भारी मन सू। सडक माथ आय र उण कडक चाय पीवण री चीती अर अेक होटल मे बडग्यो।

□□

तीनेक बजी डाकियो अेक लिफाफो देयग्यो। उण लिफाफो भेजणिय रो ठिकाणो देख्यो। पुष्पा र सासर सू आयो हो। उण कागद बाच र मा न सुणायो। खुसी रा समचार हा। सुणताई मा रै चैहरै माथ हरख हबोळा मारण लाग्या। मुळकती मा नै देख र बी न लखायो क अठ चोथो छोरो हुवै तो ई बेसुमार हरख मनाईज। पुष्पा र चौथो छोरो काई हुयग्यो जाण पारस लाधग्यो हुव। बी न याद आयो क मा कया करती ही—अर डफोळ ! बेटा पड्या कठ है ? बेटा तो भाग आळा रै हुया कर। बी र छोरी हुई जद मा कयो—आछी लागी तीख भाठ री ! भा ब्यार हजार री ध्याडी आयगी। अर जद बीस दिना पछ छोरी रामसरण हुई तद कयो—टटो मिटग्यो। गल छूटी।

मा थाळी लेय र डागळ गयी परी। बी रै साग बिद्या अर सरला ही। ब सगळी बारी बारी सू थाळी बजावण ढूकी।

मा डागळ सू नीच आयगी। उण बी न बीसेक रिपिया रो इतजाम करण खातर कयो। बो चुप रयो। बी न चुप देखर मा बोली—थार कन कानी दीस। धर सरला । अबार तो म्है उधार लेय आवू ।

बी रो उथळो सुण्या बिना ई मा बारै गयी परी। पाछी आय'र सक्कर मगवायी। गळी र टाबरा न सक्कर बाटीजी। थोड दिना पछ श्रावण माळ खरच री याद कर बो सोचण लाग्यो क आ लोगा नै समझावणो फालतू है। आ र भेजै मे तो बस अेक ही बात जम्योडी है कै गाडै मे छाजल रो काई भार हुवै! आ र छाजला सू गाडै मे जुत्योडै जीव रा प्राण भलाई निकळ जावो! आ नै कोई चिंता कोनी। गळो टूपीज तो टूपीजण द्यो। पण नाक ऊची रवणी चाईजै।

आ ई बिचारा विच्च बी नै सरला रो फूल्योडो पेट चेत आयो। देखो, तीखै भाठै री लाग का सक्कर बट! हुह! तीखो भाठो सक्कर थाळी री झणझणाट मा री बडबडाट जा, गुड लेय आ! सिझ्या नै सीरो राधाला। मा कयो। बो थैनी लेय र बाजार कानी गयो। भात भात रा विचार बी रै चेतै मे बकारा मारता रया—पूर मारग।

□□

सिंझ्या!

ढळतै सूरज री किरणा घर सामै ऊभ्याड नीमड री डाळा सू छण'र बारली साळ मे पसरै। पछ अधारो गहरीज। होळ-होळ बत्ती रो चानणो अधारै न निगळ जावै।

उण रोटी जीमी। जीम र थोडी ताळ पछै घूमण खातर बारै निकळग्यो। चुनीलालजी री दुकान सू निब्बै नम्बर जरदै रो पान लगवायो। अेक मीठो पत्तो मसालो अर गुळकद घलवाय'र बधवायो—सरला खातर। दोलड कागद मे लपेट'र पान पट री जेब म घाल्यो।

माळिय मे पूगताई सरला दीखी। न्हायोडी धोयोडी। काजळ टीकी कर राखी ही। बी खातर आ नूवी बात कोनी ही। बो जद भी आवतो, रात न आ आपरी अक्कल सारू तैयार हुवती ही।

माच माथै बठ'र उण कयो—सरला, म्हारो बग इम्र ला। सरला बी रो बग खूटी सू उतार लायी। बग खोल'र उण गुलाबी साडी निकाळी—ओ रग थार डील माथै सागीडो फबला! उण मुळक र कया।

सरला उथळ पुथळ'र साडी देखण लागी। बा बाली—इत्ती बढिया साडी लावण री अबार काई जरूरत ही!

बो साचण लाग्यो क आ साडी, जिकी पचास रिपिया री है इण न इत्ती, बढिया लाग रैयी है। कर भी काई? घर मे घाघरो ओढणा पर का पछ अट्ठार बीस आळी झिगदळ साडी। कालेज री हवा खाय र आयी हुवती तो सौ सवा सो री साडी

दख'र ई इण री मींगणी ई कोनी भीजती। आ तो मिडल पल है। पण तो ई मा गळी म ढढाळो पीटती फिर क बींदणी भणीज्योडी है। उण कई दफ सोच्यो क किणी तरह इण न मटिक करवाय दी जाव। पण जद भी बो बात टोरतो, मा आर्डज करती—इत्ती पढाई घणी। आपर घर आळा न राजी खुसी री च्यार मोळ या माड देव अर बा रो आयोडो कागद बाच लेव। ऊची पढाई करवाय र आपां नै कुणसी हुडया कमावण खातर भेजणी है। नौकरी करण आळ या रा लखण ॥ हूह ! सौ तरह र मरदा सागै काम करणो पड। घणो पढ्या आदमी सुरग म तो जावण सू रयो !

उण सोच्यो क अ ग्यासा कदेई तरक्की नी कर सक्ला। घर मू बार जाव तो सुगन लेय र। गधा सामन दीस ता डाव लेय र निक्ळ। खाली घडा लियां लुगाई आवती दिख जाव तो पाछा घर मे वड जाव। आछा फूट्या ! अ गावर रा कीडा गावर सू बार निकळणो ई कानी चाव !

—तिवार टाकडै परण नै काम आवलो । सरला री बात सुण र बी रा विचार टट्या।

—हां ऽ ! बो सरला कानी देखण लाग्यो। बा हाल ताई साडी उथळ पुथळ कर ही।

—पर र दिखा तो सरी । उण मुळक र कयो। ओढणो खूटी माथ टाग र घाघर न पैटीकोट री जगा काम लेय र उण साडी बाधी।

—असल ओपी है। पर्योडी ही रैवण दे। खाल ना।

पण थोडी ताळ पछ उण साडी खोल र सावट र मेल दीनी।

थोडी ताळ ठर'र—कद ताई विचार है ? अब कित्तीक टैल ह ? उण पूछ्यो—सरला र की-की फल्याड पेट माथै हाथ फेरता फरता।

—क्या रो । बी रो सवाल समझता थका नासमझ बण र बोली बा।

—थाळी बजवावण रो। उण कयो।

—धत ! मूडा फोर र बोली—घणी उतावळ है काई ?

—थनै कोनी ?

बा की कोनी वाली।

—छोरो हुवैला का छोरी ?

वा फर चुप।

—बोल कनी । बी र सुर म खुसामद ही।

—म्है परमात्मा थोडी हू।

—तो ही ।

–तो ही क्या री ! सूवो परा । क्यू फालतू री वाता करो । दिनूगे जल्दी उठणो है । अर उण वत्ती बुझाय दी ।

बी री आगळ्या सरला र डोल माथ फिरण लागी । वाता ही वाता मे ब्लाउज उतरवा फिरवायो । तज-तज सासा लेवतो बा बोली—था री आ काई आदत है ।

अधारै म हाफण री आवाजा आन्ती रयी ।

००

पांच महीना पछ बी र छोरो हुयो । खब हरख बधाया हुई । थाळी बाजी । सक्कर बटी । डूमण्या गावण नै आयी । हीजडा नाच्या । नाव र मुहरत सू दो दिन पली बी नै आवणो पड्यो ।

मा कयो—जीमण तो करणो ई पडला ।

–जरूरी है काई ?

–जरूरी किया कोनी ? पलडो छोरो है । अबार ही हरख बधाया नई करोला तो पछ कद करोला ?

–तीन च्यार सौ रिपिया नै तडा है । उण कयो ।

–पुष्पा नै बधाई म हाथघडी देवणी पडला । वा छोर खातर कपडा लावैली ।

–ठीक है ? उण कयो । बुझ्योडी सी आवाज मे ।

–थारी दादी सोन री नीसरणी चढला । मा कयो ।

इत्त म ई रमेस फरमाइस करी—भाइजी, नाव आळ दिन रेडियो लगावाला ।

मा फट बोली—रेडियो पेडियो कोनी लगावणो । फालतू माथो खावै । जेस्र फेरू डूमण्या गवाय लवाला ।

–मा [illegible] ! म्हनै थारी अ डूमण्या फूटी आख ई कोनी सुहाव । रेडियो इ ठीक रवला । आज काल गळी मे सगळा रेडिया ई लगाव है । विद्या बोली ।

–चोखा बावा ! मरजी आवै जिया कर लिया ।

बी नै माय ई माय झाळ चढी । चोखा तमासो है । भुवाजी नागी फिर अर भतीजा नैं पुगला-टोपी चाइज ।

मा नै अलायदी लेय'र उण कयो—अबार च्यार पाच सौ रिपिया रो इतजाम कठ सू हुवला ?

–म्है साक्ळ अडाण राख र सात सौ रिपिया लायी हू । मा कयो ।

ऽ ! तो मा मापरो सोन रो सूत मडाजै राख'र मायो है। बी न लखायो क मा लोगा रो अक ई मसूल है—लाख धमीडा सवो, पण नार राखो। मांय रा माय मसूज'र मर जावो, पण भरम भर्‌यो राखा। मर्‌यां पछ ल्हास भलांई नाळ म ई न्हाखो पण नाक कुतबमीनार सू ऊचो रवणो चाईज। बी र साम्ह भीचा माची करता थका ई रीत रा स रायता हुय र रया।

सगळा काम सळटग्या। लोगां रा बरतण भाडा, जिका रा माग'र लाया हा, पाछा पूगता कर्‌या। दोफारा बार सू तीन माळी फिल्म रा प्रोग्राम हो—भायला साग। च्यार बजी घरा पूग्या ता दख्यो क गळी मे रोवा कूकी मच्योडी ही। रामोजी बामण चालता रया। चापड़ा भलो मिनख हो। मरथी सेय'र जावण री तयारिया करतीज रयी ही। बी नै भी नार जावणो पड्‌यो।

लोग रवाना हुया। हाण्डी सू धूवा निकळ हो। फूल्यां मर पीसां री उछाळ हुव ही। लोग बारो-बारी सू मरथी नै काधो देव हा।

राम नाव सत्त है सत्त बोल्या गत्त है चालो चितवासी बकुण्ठ वासी ।

बो मरथी नै काधो दिया घासा ताळ ताइ चाल्या गयो। प्रचाणचक बी नै लखायो क बो लम्ब मरस सू ल्हासा ढाय रैया है। जीवती जागती ल्हासा चालती फिरती ल्हासा मर बी री दीठ सामैं कई चहरा घूमण लाग्या—मकड़ा मकड़ा करता दादी सा बेटा नो भाग माळा र हुव, कवण माळी मा खुद न खुद र माय लुकावण री कोसिस करती बिचा थारी मा बाइ मादत है, कवण माळी सरला छोटो भाई रमेस मा मा कर र रोवतो छोरो सगळा चहरा निजर माव हा बारी-बारी सू ब जीवती ल्हासा भख माग ही—लावो लावो लावो ।

—ले भाई, म्हानै ई काधो देवण दे । अेक जणो बी नै कयो।

बो चिमक'र ठर्‌यो। बी री दीठ सामैं ब ई चहरा घूम हा हाल ताइ। बी र मगज री नसा तणीज ही।

लोग बोल्या जाव हा—राम नाव सत्त है सत्त बोल्या गत्त है !

oooo

धरती कद तांई घूमैली

श्रो महीनो खतम हुवण म दो च्यार दिन श्रोर रया है। सीता साच्या श्रर निसकारा नाख्यो। वी याद श्रावताई बा गळगळी हुयगी। डबडबाईज्योडी श्राख्या पूछ र उण श्राभ कानी देख्यो। फेर जमीन कुचरण लागी। वी न लखायो क धरती श्रर श्राभै बिच्च श्रमूजो भर्‌योडो है। ठीक विसो ई श्रमूजो जिसो क बी र हीयै मे भर्‌योडो है। सो की है श्रर की कोनी। भरयो पूरो घर है। बेटा बहुवा है। पोता पोती है। दोहिता दोहित्या है। मिलण नै दानू टर रोटी ई मिल है। पण तो ई पतो नी सो की श्रापरो श्रापरो सो लखाव। लखाव कै कठ ई की काण कसर है जरूर। पकड म भला ई ना श्रावो। दोनू टक राटी खायी श्रर नचीत हुय'र सावणो ई तो सो की कोनी। राटी र मनावा भी तो मिनख नैं की चाईज्या कर है। श्रलावा श्राळी मनस्या ई तो फोडा घाल है।

सीता श्रापरो काळो श्रोल्णो देख र फेर गळगळी हुयगी। ब जीव हा जित्तै तो सो की सावळ ई हा। घर, घर ई लाग्या करतो हो। श्रागण म रमत लडत टीगरा री चाय माय कित्ती सोवणी लाग्या करती ही। बी चाय माय मे सगीत रो सा रस श्रावतो। पण श्रब तो लाई टीगर ई चाय माय कोनी कर। जे कणा ई कर तो वा री मावडल्या चटक ई तीन नम्बर री डाट पाव। पकड बूकीया र माय कमर मे घींस लेय जाव। फेर वा रो बाजो बाजण लाग। कित्ती दफ समझायो है क श्रठ ना रम्या कर। गाळ्या सीखण र श्रलावा काइ है बोलण रो कम तो किणी नै है कानी दार्ब जिया ई बोल राममार्‌याडा।

सीता सोच क इ घर न काई हुयग्यो। टीगर जे घर र श्रागण म नइ रमला तो किसा पाडोस्या र श्रागण मे रमला? टीगर तो घर श्राळा साग ई रमला। पण नइ। श्रा नैं तो घर श्राळा टीगर श्राख्या देख्या ई कानी सुहाव। श्राप श्राळा पूत घणाई व्हाला लाग। वा नै चौईसू घण्टा रमावला हसावला। कुदावला उछाळैला। फिर फिर बुक्का श्रारा लेवैला। पण छोट वड भाई रै टाबरा नै देखता ई श्रान सूग सी'क श्रावण लाग। मूड सू भलाई की मती कैवो, पण श्रास्या तो सो की वताव ई है। खीर पूडी खावती वेळा जे माळी माय सू उठ र कोई कुत्तो थाळी कन श्रा जाव,

वी वगत जिकी' रीस जिको धिरणा अर पता नी काइ काइ जिको भी आया कर है नी—बस, वो ई सो वी आर चहरा माय आयोडो लखाव ।

सीता आपर ई बाबत सोचण लाग । वा कुण है ? कवण न तो आ री मा ई है, पण मा अर बेटा बिच्च जिको लगाव हुया कर है, वा कठ है ? कोई घडी-खण खातर इ कन आनी वठ । काइ हालचाल है तबियत किया है जी सोरो रव का किणी जिनस री जरूरत है का । काइ पडी है आ न । अ क्यू पूछ ? दोनू टक जीमाव आ कम है काइ ? पण आ दोनू टक जीमावणो ई किसा राजी खुसी है ? सीताण गळ बदयोडो फरज है आ तो । नइ ता आ तीना माय सू इसो मुहदार कुण है क म्हन आपर कन कोनी राख सक म्हारो खरचो कोनी ओट सक ? चाईज ई काई है म्हन ? रोटी अ खाव रोटी म्हैं खावू । पाच सात जणा री रोटी लार अक जण री रोटी ता इया ई निवळ जाव । माल मलीदा मागू आ बात तो माय कोनी । अ लूखी खाव तो म्हैं किसी चुपडी मागू हू ? पण अबार तो अ चुपडी खाव अर म्हनै लूखी सिरकाव ता ई वी बोल कोनी सकू । बोलता ई मणा मोसा री बौछाड आयार है—हा हा, म्ह तो दुभात करा । म्हानै तो चोवणी चुपडी पोसाव कोनी । गरीब आदमी हा । नीठ गुजारो करा । पण अब जिका थानै छप्पन भोग लगा सक, या कन जावो परा । देखा कित्ता क दिन रोटी घाल व । अमीर अर भागवान है तो आपर घरा हुवला कोई । बारी मागवा नी म्हार किसी आडी आव । म्हार ता म्हारी भूख ई आडी आवला ।

सीता याद कर क वो दिन कित्तो माडो हो जद बडोड बेट कलास दिनूग चाय पीवती वगत नारायण अर बिज्जू न बुलवाय र कयो क मा नै राखण री ठेको खाली बी रो ई तो कोनी । था लोगा रो भी तो कोई फरज हुवला । था किसा घर री पाती कोनी ली ? अे किसा मा रा बेटा कोनी ?

वी री बात सुण र नारायण बोल्यो—आप कवो जिया ई कर लेवा ।

म्हैं काई कवू ? थानै दीस कोनी काइ ? कलास र माय रीस रा बतूळा उठ रया हा ।

बिज्जू चुप रयो । वो हमेसा चुप रव । बस, खाली देखतो रव क कुण काइ कर कव ।

अर सीता ? वा अधगावळी सी देख ही । देखो, अब काइ हुव ? अेक मा तीन बेटा दो टक री रोटी तीन बटा, अेक मा अेक मा, तीन बेटा ! मा राटी बेटा । बटा रोटी मा । मा बेटा रोटी । अर फर बहस मे घूमता मा, बेटा अर रोटी माय सू खाली रोटी ई महताऊ रयगी । मा अर बेटा

कठई अळगा जाय पड्या—गोफण मे घाल'र फक्योड भाठ दाई । रोटी रो आकार अर भार इत्तो वधग्यो क वी नै सम्भाळणो किणी अेक र बूत परबारी वात हुयगी। फसलो हुयो—तीनू जणा वारी बारी सू मा नै अेक अेक महीन राखला।

सीता नै वी क्वण रो मौको ई कोनी मिल्यो। तीना माय सू किणी आ कोनी पूछी क ओ फसलो बी न मजूर है का नही। वी रो आपरी मनस्या काइ है? उण निसकारो नाख्यो—खर सल्ला! जे आज व हुवता अर आ तमासो देखता तो काई क्वता? वा सू इत्तो जरणा हुवती? व तो लाल पीळा हुय'र गाळ्या काढण लागता। थप्पड का लात मारता न्यारी! काई समझ राख्यो है म्हनै! म्हैं थारी आ दो रोट्या भरोस बठा हू काई! हाल तो इत्ती पोच है क था जिस बीसू मगता न राट्या घाल सकू। अेक लाम्बो निसकारो! पण वा र थका तो कदे ई इसी बात उठी ई कोनी। बा नै काई ठा हो क अ दो टक री रोटी खातर इया करला!

८८

सीता नै सावळ याद है क व फागण रा दिन हा। तीन च्यार दिना पछ होळी ही। तय आ ई हुयो क होळी पछ मा बारी बारी सू सगळा कन रवला। ना'र सिंघजी आळ दिन जीमती बखत बी न लखायो क लापसी साव फीकी है। क्वो गिटती तो लखावतो क कवो गळ मे अटक रयो है। हाळी आळ दिन ई बा अणमणी अर उदास ही। होळी नै लापसी ई हुया करती ही, पण वी दिन कलास री बहू दाळ रो सीरो राध्यो। दाळ सिकती देख'र बा साचण लागी क बा खुद सिक रयी है!

टीगर बी नै क्वण लाग्या—दादी मा दादी मा बाई (मा) क्वती क काल सू थे नारायण काको सा री पाती म जीमोला। दादी मा, थे साचाणी वठई जीमोला काई? अर सिह्या न बा जीमण बठी जणा कलास री जोडायत राधा बोली—दाळ रो सीरो थार ई वास्त राध्यो है। सावळ रज'र जीम्या भलो!

बा सोचण लागी क दाळ रो सीरो हुवा भला ई लूखी रोटी जीमण नै वठ्या पछ तो पेट रो खाडा बूरणो ई पड। इच्छा हुव तो दो क्वा बत्ता, नीतर च्यार क्वा कम। उण सोच्यो—आज पछ म्हनै अठ सू सीख। काल सू नारायण री पाती म आवणो पीवणो। पछ अठ र पाणी मे ई सीर कोनी रवला काई? टाबरा कन आवणा-जावणो ई वद हुय आवला काई? नई, नई मा बात कोनी हुय सक!

अेक पछ दूज अर दूज पछ तीज री पाती म बा गुडकण लागी। कैलास री पाती सू नारायण री पाती म अर नारायण री पाती सू विज्जू री पाती मे। पाती

बदळता ई टीगर हरखाया हरखाया बी वनै ग्रावता ग्रर क्वता—दादी सा, काल सू थे म्हारी पाती मे जीमाता ! ग्रापा साग माग ई जीमाला—अेक ई थाळी म ! ठीक है नी दादी सा ?

बा रोवणखाळी हुय जावती । ग्रा नासमझ टीगरा न ई इण बात रो पतियारो हुयग्यो क वा वारी वारी सू जीभ है । अेक महीन सू अेक दिन ई उपर कोनी राख कोई । महीनो हुवता ई टिक्ट कटावो । ग्रब दा महीना ताई तो गल छूटी—ग्रा ई सोचता हुवला !

००

टीगर सिझ्या पडी सरावग्या र पाट मार्थ रमता । न जद कदे ई 'माई माई रोटी दे' ग्राळी रमत घालता वी न लखावता क ग्रा क्हाणी ग्राप भी सोळ ग्राना साची है । टीगरा माय सू अेक जणो मगती वण र वारी वारी सू दूजा कन जाय र अेक इ बात कैवतो—माई माई रोटी दे । वी न उथळो मिलता—ग्रो घर छाड, दूज घर जा !

बा सोचती—अेकम्म ग्रा ईज हालत म्हारी है । म्हैं इण मगती ग्राळै दाई ज तो [illegible] । महीनो हुवता ई वेटो कय दव—माई ग्रो घर छाड ग्रगल घर जा ! ग्रर टुर जावू । ग्रगल घर ताइ । बठ महीनो हुवता ई सागी हुक्म सुणीज—ग्रो घर छोड ग्रगल घर जा !

ग्रो घर छोड ग्रगल घर जावता ग्रर वो ग्रगला घर छाड दूजै घर जावता जावता पाचे क बरस वीतग्या । अ पाच बरस सुख सू बीतग्या हुव जिकी कठ ! ग्रा पाच बरसा मे पच्चीसू दफ फजीता हुया । बिज्जू री पाती म ही जणा नारायण री वहू भवरी छोरा री बरसगाठ ग्राळ दिन बाटकी मे घाल र रसमळाई भेजी । रसमळाइ रा अेक कवो ई लिया हो क इत्त म उपर सू रोळो सुणीज्या । बिज्जू री वहू पुष्पा बोल री—ग्रर भागवानी फाडण न रसमळाई रो टरो भेज्यो है काई ! थारी पाती मे हा जद तो लूखा टुकड घाल्या बा न । ग्राज म्हाराणीजी रसमळाई री घसक्रामी लगायी है । दखी थारी भागवानी । म्हारी पाती म हुव जद थारा ग्रो क्यारो थार वन ई राख्या कर । म्हान गुडसी जिसी म्है मत्त ई घाल देसा !

सीता न नेर याद ग्राया—वा दिना बा नारायण री पाती म ही । राधा न ताव चढयाना हा । क्लाभ नौकरी र काम सू वार गयोडो हो । उण दो तीन दिना ताई बी र टावरा ताई रोटी पाणी कर्‌या । थोड दिना पछै टीगरा री लडाई न लेय र भवरी ग्रर राधा बिच्च राड हुई । राधा क्यो क टीगर जद लड या, सासूजी बठ ई हा । वा न पूछ ल भला इ ! इत्त मे भवरी जहर म बुझ्याडो तीर मार्‌यो ई—

अर जा जा ! पूछ लियो थनैं अर वा नै, दोना नै। वा नै काई पूछणो है ? वै गोनीपो करता फिर थारो अर जीम म्हारी पाती मे। गोनीपा करवायो जिको तो चोखो, पण जीमावणो ता हो !

वी री आरुणा पीली हुवगी। आ रै राड-झगडै रा काई अत कोनी। अ नित लड। लडाइ है आ री, काटा म घीस म्हनै। अबै मरणो ता म्हारै ई सारै कानी। सार हुव ता ओ ई करनू। सावरिय जिनी साख घाली है, वै तो लेखो ई पडसी ! सीता आ माच सोच'र गळगळी हुव ही।

सीता न लखावण लाग्यो वै मामो [illegible] कोनी। वो गुम्हनो है। आ धरती लम्बी-चवडी कोनी। आ सुकडीजगी है। घर ई सुकडीजग्यो है। अठै माथो लुकावण न ई जगा कोनी। कवण नै तो आ घर ह। आ घ[illegible] [illegible] माठो खावतो-पीवतो घर बाज। पण अठ खावन-पीवत घ[illegible] मैं खावन-पीवन [illegible] [illegible] ! [illegible] पट र खातर इत्ता टटो ! ज लोग [illegible] [illegible] [illegible] नै ई रोटी [illegible]। [illegible] म्हारी रोटी म इसा काई है क आ नै नित नुवो विचारणो करणो पडै।

आज ता हद हुई ! कलाम कैया—आ बात ता आछी कोनी [illegible] [illegible] [illegible] महीन री महीन इनैं विनैं गुन्कतो रैवे। म्हा[illegible] [illegible] [illegible] आ [illegible] [illegible] [illegible] आपा तीनू ई मा नै पचास पचास [illegible] [illegible] [illegible] दिया [illegible]। मा नै [illegible] रिपिया घणा ई है। माय ता आपा पाला ई हा। [illegible] [illegible] ई [illegible] [illegible]। व श्री रयी रोटी जिकी आपरी मन ई [illegible] [illegible]।

नारायण कयो—जिया थारी—मरजी। [illegible] [illegible] [illegible]। आज मा [illegible] इ चुप कोनी रयी। बाल्या—नित इनै-विनै [illegible] म तो ठीक [illegible]। [illegible] [illegible] ठौड पडी तो रवला।

इती बात [illegible] [illegible] माट मैं मन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] हिलता ई [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ठरयाग्या सुर [illegible] हुगा—मा नै [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

—मा आजकाळ [illegible] बात [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भरा इ। असली बात ता आग रै [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] र जचगी हुव ता मा सू बात [illegible]।

जद सात्रा आ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] कानी देखण लागी। वी री आन्दा आग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ग्राख्या पू छ'र बा ग्रापरो भरीज्योडो गळो चुपचाप पीगी। रोवण री ग्रावाज होट सू बार कोनी निकळी। हिवड रो अेक अेक टुकडो रोव हो। बी र माय ग्रासुवा र समदर भरीजग्यो।

सीता सोचण लागी क ग्रठ रोटी खावू तो किसो मुफत री खावू। ग्रा र टीगरा रो गोलीपो करू। सरधा सारू दो च्यार बरतण भाण्डा ई रगड दू। किसा हाथ घसीजै है म्हारा। पण अ म्हन पचास पचास रिपिया ई काम री मजूरी देव है काई ? जद म्हन मजूरी ई करणी है तो कठै ई कर लेसू। दुनिया मे काम री किसी कमी है ? ग्रौर नई तो किणी र घरा ठीकरा रगड'र ई रोटी खा लेसू। सवाल ता' रोटी रो ई है।

□□

ग्रगल दिन सीता ग्रापर दो-च्यार पूर पल्लां री गाठडी बाध र अधार मूडै घर सू निकळगी। ग्रबार बी री ग्राख्या ग्राग ना तो ग्रधारो हो ग्रर ना ई बी न धरती-ग्राभ बिच्च ग्रमूजो लखायो।

ग्राज ग्राभो ग्रणत हो। धरती घणीज बडी ही। बो रस्तो घणो ई चवडो हो जिक माथ बा टुरी ही। ग्रर सै नाऊ बडी बात ग्रा ही क बी र च्यारुमेर खुली हवा ही।

□□□□